।। श्री गोकुलेशो जयति ।।
।। श्री रमणेशो जयति ।।
श्री कल्लोल जी ग्रन्थ
द्वादशम्
(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)
-: मूल :-
श्री कल्याण भट्ट मठपति जी
-: टीकाकार :-
पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)
लैया वासी
श्री महामहोत्सव संवत् २०५८

द्वादशम् कल्लोलजी

श्री द्वादश कल्लोलजी

अनुक्रमणिका

श्री गोकुलेशो जयति

श्री रमणेशो विजयते

कल्लोल जी द्वादशम्

प्रथम तरंगः ।।१।।

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग--१ लिख्यते ।।

श्लोक -- **भक्तोद्धार परं श्री मद्वीरीस भजनरतं**

गोकुलेंदु मुखी प्राणा गोकुलाधीश्वरं नमः ।।१।।

तदीया रमणावीसान् करुणां वरुणांलयाम्

प्रणाय भाषया वक्षो कल्लोलं द्वादसं तत ।।२।।

याको अर्थ -- श्रीमद् गोकुलेश प्रभुन के महाकृपापात्र अंतरंग भक्तवर श्री कल्याणभट्टजी श्री महाप्रभुजी के रात्रि संबंधी चरित्र कूं वर्णन रूप द्वादसमो कल्लोल वर्णन कियो है तामें श्रीमद् गोकुलाधीश प्रभुन के परम अनन्य श्री रमणलालजी महाराज की आज्ञा सूं कृपा सूं अनुवाद करूं हूं तामें प्रथम श्लोक यह है कि --

श्लोक --

याको अर्थ -- श्री महाप्रभुजी जब संध्या करें हैं कोऊ चतुर जलघर को सेवक कि जलघरिया औटाये सुन्दर दूध कूं शीतल करत सजावे है और जब श्रीजी संध्या भोग सरावें हैं तब सो जलघरिया वा दूध की कढ़ाई कूं उठायके श्री गिरधारीजी के मंदिर में ले जावे है, वहां धरिके वामें सूं सुन्दर पात्र में दूध कूं पधरावे है ।।१।। सो पात्र दूध सूं भरिकें प्रिय श्री महाप्रभुजी के आगे धरावे है तब ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी वा दूध के पात्र कूं लेके श्री गिरिधारीजी के आगे पड़घी ऊपर धरें हैं ।।२।। और वा बड़े पात्र सूं सुन्दर और कटोरा में दूध कूं लेकर प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी भोजन घर में पधारें हैं वहां पधारके श्रीजी के और भोजन पात्र कूं भात सूं भरायके और वा दूध के कटोरा कूं

वहां धरिके वामें कछुक भात घोरके भलीभांति सों मिलायके श्री गिरिधारीजी के आगे चौकी पर भाव सहित धारण करें हैं ॥४॥ और वाके पास ताते दूधादि के सुख पूर्वक पान के अर्थ वांच्छित मनोहर रूपे को शोभायमान सुवर्ण को मनोहर द्रवी जैसे सुन्दर चमचा कूं धारण करें हैं ॥५॥ याके पीछे श्री महाप्रभुजी दोनों हस्तकमल कूं पखारवे बाहिर पधारके बिराजमान होयके कछु अवश्य करिवे योग्य कार्यादिक कूं करें हैं कि धीरे-धीरे स्तोत्रादि के पाठ कूं करें हैं ॥६॥ तब आरती कूं करि रहे या प्रिय के मनोहर मंद हास्य भाव सूं शोभायमान प्रसन्न श्रीमुख कूं हम कब देखेंगे और वा प्रिय के करुणारस भरे नयनन को कब दर्शन करेंगे कि उच्छलित होय रहे विलास सूं प्रकाशमान स्वरूप कूं हम कब दर्शन करेंगे ॥७॥ और सो प्राणनाथ अमृत कूं हू विजय करिबे वारे अपुने मनोहर वचनामृतन को कब पान करावेंगे या प्रकार सूं उत्कंठा सूं भर रहे मन वारे अपने भक्तन के सगरे अभिप्राय कूं जानके उच्छलित होय रहे कृपा रस के समुद्र यह श्रीजी अमृत के हू ऊपर प्रकाशमान अपने भ्रू विलास सूं भीतर के सेवक भीतरिया कूं स्वयं ही आज्ञा करें हैं कि वेग ही किवाड़ खोल, तब यह महाबुद्धिमान भीतरिया हू वेग ही वैसे करे है कि किवाड़ खोले है तब सगरे जन और सगरी मृगनयनी सुन्दरीजन हू वेग सूं श्री गिरधारीजी के मंदिर में प्रवेश करे हैं, कितनेक तो अटारी पर चढ़िके सुख सूं विराजे हैं और कृपा रस स्नेह के तरंगन सूं रंगीन होय रहे वा प्रिय के मुखकमल संबंधी मधु को अत्यन्त पान करें हैं और भीतरिया आरती कूं प्रज्ज्वलित करिके लायके देवे है तब अपमान कियो है कामदेव की सुन्दरता को अभिमान जाने, तासूं मद कूं प्राप्त होय रह्यो है ऐसो शोभा समुद्र जाको, ऐसे सो प्रिय श्रीजी श्रीहस्तकमल सूं वा आरती कूं लेके श्री गिरिधारीजी के श्री मुख कमल पर वारंवार वारत ही बिराजमान होय हैं ॥१२॥ प्रियतम श्रीजी के मुखारविंद संबंधी अमृत को पान करिवे लिये अत्यन्त उत्कंठा वारे जे मृगनयनीन के नयन हैं, विनकूं यदि या आरती के ज्वाला तरंग समाधान नहीं करे तो अपने स्थान सूं वेग ही गिर न जाय, किन्तु अवश्य ही गिर जाय ॥१३॥ तब अमृत कूं विजय करवे वारे वा मधुर क्षण में स्वरूप सूं हजारन लक्ष्मी कूं जाने विजय कियो है सगरी स्त्रीगणन को जो मुगट भूषण है ऐसी सो कमलनयनी श्री पार्वती बहूजी वहां पधारके बड़े विस्तार वारे वा मंदिर

कूं प्रकाशमान करत ही ऊँचे बिराजमान होयकें, बड़े हर्ष सूं वा प्राणनाथ के दर्शन करें हैं और सगरी बहू तथा बेटी कितनीक और हू वैसे ऊंचे विराजमान होयके वा श्रीजी को अत्यन्त दर्शन करें हैं ॥१५॥ और मनोहर आरती के भ्रमायवे सूं सेवा किये श्री गिरधारीजी को हू दर्शन करें हैं तामें आसाढ़आदि चार महीना में कृपा समूह के सिंधु प्राणनाथ श्रीजी सुन्दर चामरन के चून के मोतीन सूं भरे भये कि विराजमान नव प्रमाण दीपकन सूं मिले भये बड़े थार सूं श्री गिरधारीजी के उच्छलित होय रह्यो है स्वरूपामृत के सार को समुद्र जामें, ऐसी सुन्दर आरती कूं विस्तारित करें हैं तामें आरती कूं कर रहे श्री महाप्रभुन के श्रीमुख संबंधी माधुरी को जो समूह है कि केस जी, जूड़ा के जे चमत्कार विशेष हैं कि कपोलन पर सुन्दर कुंडलन कूं जो वैसो मनोहर अत्यन्त नृत्य है कि भुजदंड संबंधी जे विलास हैं कि वक्षस्थल की जो विशेष मनोहरता है कि माणिक मोती तुलसी सुवर्ण की मालान के जे वैसे सोना के प्रवाह हैं ॥१९॥ और अत्यन्त मनोहर कंठाभरण के जे बहुत वार उच्छलित होय रहे शोभा तरंग हैं कि सुन्दरस रत्न मुक्तान सूं जटित अमूल्य मनोहर पदक कि जे सोना हैं ॥२०॥ कि पांचजन्य शंख संबंधी शोभा को विजय करिवे वारे श्रीकंठ की जो वैसी मनोहर दीप्ति को समूह है, कि कल्पवृक्ष के सुन्दर नवीन पल्लव और सुन्दर पके बिंबफल तथा सुन्दर विद्रुम समूह के ऊपर ही अत्यंत प्रकाशमान होय रह्यो विनसूं हू महा मनोहर लाल रंग वारो जो सदा मंद हास्य रूप अमृत सूं सिंचित होय रह्यो अधर है, वा अधर के जे सरस्वती नदी कूं हू विजय करवे वारे दीर्घ प्रकाश हैं, कि नाभी रूप तलाब की जो गंभीरता है, कि रोमावली की जो अपार सुन्दरता कोमलता है, कि मनोहर भ्रू विलासन के जे बहुत भेद हैं, तथा नासिका को जो मनोहर चमत्कार है तथा भाल देश को जो सघन तेज समूह है ॥२३॥ और सुन्दर उपरना धोती के प्रकाशमान जे जंगा तरंग हैं, कि सुन्दरता सूं मतवारे हस्तीराज के सूंढ़ जैसे अत्यन्त पुष्ट दंड युगल सूं जो कदली के स्तंभन को अत्यन्त दीर्घ निरादर है कि बिनसूं हो जो कोमलता है कि चरण कमलन को जो नवीन पत्रन कूं विजय भाव है कि बिनसूं हू कोमलता है तथा नख मंडल की जे दीर्घ चांदनी है, विराजवे के जे मनोहर वे विलास हैं कि स्वाभाविक तथा कछुक कारण सूं प्रगट होय रहे मंद हास्य के जे सर्वोपर विलास हैं

तथा या प्रिय के वैसे मनोहर और हू सगरे विलास हैं वे निरंतर ही उत्साह समूह के कि हर्ष के कि रस के कि स्नेह के तथा उत्कंठा समूह के दीर्घ समुद्रन कूं वर्षा करें हैं तब अखंड मनोहर उच्छलित रस वारी वा, सुन्दरांगी सुन्दरीन के तथा सगरे भक्त समूहन की निर्दोष प्रसन्नता हू अत्यन्त ही प्रफुल्लित होय हैं ॥२९॥ और निंब रूप किये हैं अत्यन्त निर्मल सुधा के समुद्र जाने, ऐसो कृपासागर श्री गोकुल प्राणनाथ श्रीजी कूं जो देखनो है सो महा मधुर मनोहर अधिक मधु है वाकूं कंठ पर्यन्त पान कर रहे चन्द्रमुखीन के नयन कमलन की तब कछुक अनिरवचनीय मनोहर विह्वलता उदय होय है जासूं प्रसिद्ध अत्यन्त उच्छलित चपलता वारे हू यह विनके नयन अत्यन्त मनोहर हू अन्य सगरी वस्तुन में अणु मात्र हू जायवे में समर्थ नहीं होय सके हैं ॥३०॥ ऐसे आरती करिके सो दयासागर कमल नयन तब वा भीतरिया के हाथ पर धारण करे हैं तब वा आरती में विराजमान मनोहर वर्ण वारे वा आरती के रज कूं कछुक अंगुली विलास सूं लेकर विशाल भाल पर बिन्दु कूं लगावें हैं सो बिन्दु हू वहां जाग रहे हू मृगनयनीन के धैर्य रूप समुद्र के वलात्कार ही निरंतर पान कर जाय है और उत्साह समुद्र कूं निरन्तर बढ़ावे है कि हर्ष के समुद्रन कूं निरंतर ही बढ़ावे है ॥३३॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां प्रथम स्तरंग समाप्तम् ॥१॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २ लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ प्रियःपाणी सरोज युग्मं प्रक्षाल्य दृष्टमी बंचसा करेणं**
भुव्रो विलासैर पितै मेनौझैराज्ञापय त्योष्टि पटिः प्रयांतु ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्ट जी कहें हैं कि याके अनंतर सो प्रिय प्राणनाथजी हस्त कमलन कूं पखार के दृष्टि सूं कि बचनन सूं कि भ्रु मनोहर के विलासन सूं सगरे भक्तन कूं कि सगरी मृगनयनीन कूं बाहेर जायवे लिये आज्ञा करें हैं ॥१॥ तब बेहू कितने तो वेग ही निकरें हैं और कितने तो वा

प्रिय में प्रेम सूं अत्यंत आशक्त भये थके मानपूर्वक अपने मुख कमलन कूं, मुस्कान सूं गिरि रह्यो है अमृत जासूं, वैसे वा प्रिय के मुख कमल को पान करिके धीरे धीरे ही निकरें हैं ॥३॥ और जे तो या प्रिय के श्री मुखचन्द्र संबंधी अमृत के पान करिवे अर्थ अटारी में कि वाके आगे स्थित हते, प्रिय चक्रवर्ती श्रीजी की आज्ञा कूं सिर सूं धारण करत वेहू उतर आवें हैं तामें प्रिय प्राणनाथ के श्रीमुख संबंधी शोभा रूप महा अमृत के समुद्रन कूं पान करिवे अर्थ कितने तो जगमोहन में जायके ठहरे हैं और कितनेक तो जलघरा में कि प्रिय प्रभु कें श्री बैठकजी में कि वाके सुन्दर द्वार में कि सिंघद्वार में वैसे और तो लदाव नाम द्वार में कि पगथियान में कि प्रिय प्राणनाथ के मुख्य घर में कि आंगन में अटारी में कि वाके आगे जाय जायके ठहरे हैं ॥७॥ प्राणनाथ श्रीजी तो निज मन्दिर के किवाड़ मंगल करके कोऊ भीतरिया सूं विलास करत ही ॥८॥ श्री गोवर्धनधारीजी के मंदिर की .... जो वा श्री गिरधारीजी के शयन की मनोहर कोठी है कि शय्या मंदिर है वामें जो प्रथम ही पर्यंकराज बिछाय राख्यो है ॥९॥ सो प्राणनाथजी वा श्री गिरिधारीजी कूं प्रथम मनोहर शोभायमान तनिया पहेराय के और याके मस्तक में विलास पूर्वक छोटी हलकी पाग हू बांधके औ दो कि तीन हैं सूक्ष्म आभरण जिनमें और सुन्दर अंगिया कि छोटे लहेंगा सूं जो शोभायमान हैं ऐसी ही या श्री गिरिधारीजी की दोनों स्वामिनीजी कूं सजायके वा पर्यंक पर श्रीहस्त कमलन सूं प्राणनाथजी पधरावें हैं ॥११॥ उच्छलित भाव सूं शोभायमान प्राणनाथ श्रीजी पर्यंकराज पर तीनों स्वरूपन को पोढ़ावें हैं श्री कल्याणभट्टजी कहें कि अब श्री गिरधारीजी के वा पर्यंक की, वा शोभा कूं कछुक कहें हैं ॥१२॥ वा शय्या मंदिर में पुरुषाकार होय रह्यो जो मनोहर पर्यंक है सो अत्यन्त शोभायमान होय रह्यो है अनेक रंग वारे पट सूत्रन की सुन्दर निबार सूं बुन्यो है कि सुन्दर विचित्र मधुर प्रकार सूं भूमि में धारण कियो है कि अमूल्य मनोहर सुन्दर स्वेत नाम वस्त्र सूं चतुरता सूं वेष्टित है कि पलंग पोष जहां पर बिछायो है और वाके ऊपर अत्यन्त कोमल मनोहर तूल बिराजे है, शीत अधिक होय तो दोय के तीन तूल पधरावें हैं वा तूल के ऊपर सूक्ष्म तंबु वारी सुन्दर अत्यन्त स्निग्ध मनोहर स्वेत शुभ चादर बिराजे है याके आगे तले अत्यंत सुन्दर चरण कमलन कूं उपाधान कि पांय तकिया बिराजे है

यासूं कछु करड़ो सुन्दर मनोहर मध्य उपधान कहिये कि सिराहनो विराजमान है जाके चीर पाटके फोदना हैं सुवर्ण की उदय होय रही कांति सूं जो मनोहर है ॥१८॥ और सुन्दर अमूल्य स्वेत वस्त्र सूं ढांप्यो है वा सिराहने के अगल बगल में दोय सुन्दर छोट उपधान कि तकिया बिराजे हैं जे अत्यन्त मनोहर अमूल्य परम कोमल लाल मखमल सूं बनाये हैं कि ऊपर कोमल सूक्ष्म स्वेत वस्त्र सूं रचना किये ऊपर के ढांपना सूं ढांपे हैं या प्रकार की शय्या के ऊपर श्री प्रियान के सहित श्री गिरधारीजी को प्रिय श्रीजी पोढायके शीत के अनुसार ही विलास पूर्वक एक कि दोय कि तीन हू मनोहर तूल ऊपर पधरावें हैं याके पीछे कोमल मनोहर स्निग्ध चादर कूं धरावें हैं और पर्यंक के चरणोसर दोनों ओर ही बिछाना कूं सेज बंधन सूं दृढ़ ही बांधे हैं, जासूं सो बिछोना किये दोय प्रति पादकन कूं हूं पर्यंक के सिराहने की ओर ऊंचो होय जाय तथा चरणन की ओर नीचो होय जाय और शय्या मंदिर में पर्यंक चारों ओर भूमि को सो रस सागर श्रीजी मनोहर तूल सहित स्पर्श सुखदायक वस्त्र जाके मध्य में है ऐसे सुन्दर रंग वारे शोभायमान रोम वारे वस्त्र मखमल सूं आच्छादित करें हैं और वा शय्या मंदिर के चारों ओर भींतन में मखमल के दिवालगीरन कूं धारण करावें हैं वा शय्या के ऊपर शुभ मखमल के चंदुवा कूं बांधें हैं ॥२९॥ याके अनन्तर पर्यंक के समीप ही चौकी के ऊपर जलपान के पात्र कूं त्या अनेक प्रकार फूलन की मालान कूं धारण करें हैं ॥३०॥ त्यां बीरी के डबरा कि चोवा के पात्र कूं नाना प्रकार की भोग वस्तुन कूं और मनोहर खिलौनान कूं धारण करें हैं कि उच्छलित होय रही सुगंधी सूं आकर्षण करी जो भौंरान की पंक्ति है तासूं शोभायमान पर्वत संबंधी चंदन के अनुलेपन कूं रस लीला में उपयोगी और हू वस्तुन कूं वहां धारण करें हैं ॥ और जेष्ठ आषाढ़ कि चौमासा में कमलनयन प्रिय श्रीजी तिबारी में पर्यंक कूं बिछावें हैं वा पर तूल चादर आदि तो गर्मी वर्षा के अनुसार थोरे कि बहुत जैसे सुहावें वैसे ही स्वयं धरावें हैं वस्त्र तो तनसुख को, कि भरुच देश को, वास्ता नाम कोमल वस्त्र अब उपयोगी होय है, और गरमी विशेष होय तो आंगन में हू या गिरधारीजी की शय्या कूं पधरावें हैं, कबहू आधी प्रहर कि सगरी प्रहेर कि आधी रात्रि लों कि सगरी रात्रि हू आंगन में शय्या कूं पधरावें हैं ॥ ईश्वरेश्वर हू सुन्दर श्रीजी सगरी रात्रि भर हू स्वयं नहीं पौढ़े हैं ॥३७॥

यह भगवान श्रीजी रात्रि में तीन चार वार उठ उठ के ही जैसे योग्य होय वैसे ही थोरे कि बहुत कनांत आदि सूं आच्छादन करें हैं, यथायोग्य चादर आदिन कूं बड़े करें हैं, और जैसे योग्य ही होय वैसे ही वा प्रभुन कूं तिबारी में कि आंगन में पधरावें हैं ।। मनोहर पंखा सूं पवन हू करें हैं ।।४०।। पवन विशेष होय तो या श्री गिरधारीजी की शय्या कूं तिबारी में पधरायके रज के निवारण अर्थ कनात लगायके वो रज जब शांत होय जाय है तो फेर हू वा शय्याजी कूं आंगन में पधरायवे अर्थ ईश्वरेश्वर रससिंधु श्रीजी सोहनी सूं आंगन कूं मार्जन करें हैं और जल सूं धोवें हैं ।। जब आंगन धूल रहित होय जाय कि शीतल होय जाय तब श्री गोकुल के चन्द्रमा श्रीजी श्री गिरिधारीजी के पर्यंक कूं आंगन में ही पधरावें हैं ।।४३।। अनेक प्रकार के पंखा हू वाके पास धरावें हैं ।।४४।। और पान योग्य जल सूं भर्यो सुन्दर नवीन माटी को पात्र जाकूं कुंजा कहें हैं वाकूं हू वहां पास ही धरावें हैं ।।४५।। और श्री महाप्रभुजी जल के विशेष शीतल करवे की इच्छा सूं पान योग्य जल सूं भरे माटी के कलसान कूं आंगन में ही राखें हैं ।।४६।। और चौमासा में तो जल विशेष गहरो होय जाय है सो वाकी मृतिका के निवारण अर्थ घिसे भये कनक कूं निर्म्मली कूं जलघरिया सूं जल में गिरवावें हैं सो ऐसे या प्रकार श्री गिरिधारीजी के मंदिर में सब समाधान करिके भगवान श्रीजी पीछे अपनी बैठक में पधारके पोढ़े हैं ।। यदि या प्रकार में रात्रि थोरी रहे है तो फेर नहीं पोढ़ें हैं ।।४९।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि या प्रकार प्राणनाथ कूं प्रिय जो श्री गिरधारीजी के पर्यंक की शोभा है ऐ संक्षेप सूं मैंने सूचना करी है ।।५०।। वा प्रसंग सूं सो सो और हू कछुक सूचना कियो है ।। अब प्राणनाथजी के बैठकजी की कछुक माधुरी कूं कहूं हूं सो अमृत कूं हू विजय करवे वारे या रस कूं तुम पान करिये ।।५१।। शीतकाल में कि चौमासा में श्री महाप्रभुजी के अंग सेवक खवास की सम्मति सूं उच्छलित होय रह्यो है प्रेम समुद्र जामें ऐसे भक्त श्रेष्ठ तिबारी में ही महाप्रभुन के बिराजवे के आसन कूं बिछावें हैं ।।५२।। और उष्ण काल में तो आंगन में अटारी के आगे ही तिबारी के मध्य द्वार के आगे बिछावें हैं ।। और जब यह भक्तजन तिबारी के आगे बिछावें हैं, प्रथम भूमि पर जाजेम कूं बिछावें हैं वाके ऊपर स्पर्श सुखदायक अथवा चटाई कूं बिछावें हैं ।।५५।। वाके ऊपर यह भक्तजन अद्भुत

रत्न कंबल कूं बिछावें हैं वाके ऊपर स्पर्श में सुखदायक निर्मल मखमल सूं रचना किये सुन्दर आसन कूं बिछावें हैं वाके ऊपर अत्यन्त उज्ज्वल सुन्दर चादर कूं बिछावें हैं ॥ वाके पीछे अमूल्य बड़े तकिया पधरावें हैं सो सदैव ही विराजमान रहे हैं और अब तो प्रभुन के बांई भुजा कि कोहनी के धारण अर्थ तकिया पधरावें हैं ॥५९॥ और जेष्ठ असाढ़ में यह भक्तजन रत्न जटित कंबल हू नहीं बिछावें हैं और मखमल हू नहीं बिछावें हैं ॥ वा रत्न कंबल के ठिकाणें पूर्व देश के सुखस्पर्श निरन्तर शीतल देशांतर के तृण सूं सिद्ध भये शीतल पाटी कूं हर्ष सूं बिछावें हैं ॥६०॥ और मखमल के ठिकाणे अमूल्य अत्यन्त सुन्दर अठगुने किये अत्यन्त शीतल सुजनी नाम स्वेत वस्त्र कूं प्रेमपूर्वक बिछावें हैं अथवा थोरी रुई वारी कोमल वस्त्र की मनोहर तूल कूं बिछावें हैं ऐसे आसन कूं बिछायके हर्ष सूं वा शीतल पाटी सूं वेष्टित करिके ऐसे धारण करें हैं और जेष्ठ असाढ़ में तो बड़े तकिया सूं हू वा शीतल पाटी सूं वेष्ठित करें हैं ॥६३॥ अथवा गाढ़े वास्ता नाम वस्त्र कूं वाके ऊपर ओढ़ावें हैं ॥ बिछोना के पास बिछे भये छोटे मनोहर रत्न कंबल के ऊपर चरणकमलन के पोंछवे के लिये सुन्दर स्वेत वस्त्र कूं भक्तजन हर्ष सूं धरें हैं ॥६५॥ और वांये ओर चौकी के ऊपर जल पान की झारी और बरास की डबरी त्या पास ही चूना की मनोहर डबरी हू धरें हैं और वाके पास ही हस्त पखारन में उपयोगी जल सूं पूर्ण मनोहर छोटे पात्र कूं कि छोटे जलपान के मनोहर पात्र कूं धारण करें हैं ॥६७॥ और चर्बित तांबूल के उगार डारवे के अर्थ पास में ही पीकदान कूं हू धरें हैं ॥ और महाप्रभुन के तकिया के ऊपर सुन्दर फूलन की मालान कूं धारण करें हैं ॥६९॥ कल्याभट्टजी कहें हैं कि या प्रकार सगरे भक्तन कूं सुखदायक श्री गोकुलरत्न महाप्रभुन के बैठक आसन की माधुरी संक्षेप सूं मैंने सूचना करी है प्रसंग और हू सो सो सूचना किये हैं अब प्रसंग कूं वर्णन करूं हूं वाको आदर सूं पान करिये ॥७०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां द्वितीय स्तरंग समाप्तम् ॥२॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ३

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ३ लिख्यते ॥

श्लोक -- **या नि या नि सुवर्णस्य मंजू निरजतस्य वा**
पात्राणि तां निस्वर्वाणि भगवाने कं कोष्टिकां ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि सुवर्ण के जे मनोहर पात्र हैं कि रजत के जे मनोहर पात्र हैं बिन सबन कूं ही भगवान ईश्वरेश्वर श्रीजी एक कोठे में धरें हैं और अलंकारन को जो डबरा है वाकूं हू एक कोठे में धरें हैं वाके किवाड़ लगायके कि सांकर ताला लगायके और श्रीनाथजी की सेवा मां प्रभात में जो जो वस्तु चहिये है वा वा वस्तु कूं सजायके धरें हैं ॥३॥ और दूसरे दिन श्रीनाथजी के श्रृंगार में जो उपयोगी साड़ी, आभरण आदि हैं विनकूं सजायके श्रीजी धरें हैं ॥५॥ या प्रकार सूं श्रीनाथजी के पोढ़वे पर यह भगवान श्री महाप्रभुजी दीपक कूं लेकर सगरे घर में फिरें हैं, सो सगरे घर कूं कंटक रहित निरदोष देखिकें वहां वहां परम चतुर यह श्रीजी चतुरता सूं सांकल लगायके सांकलन सूं कि कीलन सूं कि दृढ़ ताला सूं अत्यन्त दृढ़ करिके मुख्य द्वार में ताला मंगल करिके श्री हस्तकमल सूं वाकी कूंची कूं लेकर उच्छलित भाव सूं शोभायमान श्री महाप्रभुजी वा कूंची कूं अपने श्री हस्तकमल में धारण करें हैं ॥९॥ और जे जे जलघरिया हैं वेहू सगरे कलसान कूं जल सूं भरिके और धोये भये पात्रन कूं सजायके धरें हैं ॥१०॥ और प्रभात काल में जो जो प्रभुन कूं वेग ही चहिये है वा सगरे कूं हू चतुरता सूं हर्ष सूं सजायके धरें हैं ॥११॥ या प्रकार रसोई घर में जे रसोई की सेवा में तत्पर सेवक है वेहू अन्न जल शाकादि और हींग आदि कि काष्टन कूं कि पात्रन कूं ऐसे सब वस्तुन कूं सजायके ही धरे है और अपरस आदि छिवाइ जाय तो फिर रसोई में विलंब न होय या लिये वा रसोई घर के सेवक सगरे ही सावधान होयके सगरे पाक योग्य सामग्री सूं शोभायमान रसोई के दोय स्थलन कूं ही प्रतिदिन वेग ही सजाय राखें हैं ॥१६॥ या प्रकार दूध घर में दूधघरिया सगरे ही दही आदि कूं वैसे सजाय राखे है कि प्रातःकाल में

जासूं विलंब न होय वैसे जो जो भैंस को दूध है जो रात्रि में ही दुह्यो है सो प्रातकाल उपयोग में आवेगो या विचार सूं तब ही आंच के ऊपर धरे है या प्रकार प्रेम आदर भय उत्साह वच्छलता कि नम्रता के हैं समुद्र जिनमें ऐसे और हू सगरे सेवक अपने अपने सेवास्थल में यथायोग्य अपने अपने सगरे कार्यन कूं करिके विराजमान हैं ॥१८॥ या प्रकार श्रीनाथजी के मंदिर के दरवाजान में किवाड़न कूं लगायके शीतकाल में तो दोय तीन घड़ी रात्रि पीछे श्रीजी बाहिर पधारे हैं ॥१९॥ और उष्ण काल में तो सायंकाल में ही कि आधी घड़ी पीछे ही श्री गिरधारीजी की आरती कूं करें हैं ॥२०॥ पीछे उच्छलित भाव सूं शोभायमान श्रीजी बाहिर पधारे हैं तब प्राणनाथ को कोई एक सेवक बुद्धिमान गढ़वई विष्णुदास कि विश्राम जलघरिया कि गोपालिया सुतार कि माधवदास अथवा घोड भाई कि अथवा कोउ और हू सेवक बड़े प्रकाश वारे दंड दीप कूं लेके बाहिर तैयार ही ठेहेरे है ॥२३॥ और प्रभुन के दर्शन में उत्कंठित हैं नयन जिनके ऐसे भक्तन के कि मृगनयनी भक्त सुन्दरीन के समूह जगमोहन में ही बिराजमान होय हैं ॥२८॥ कि सुन्दर मंदिर में कि सिंघ द्वार में कि प्रकाशमान कि पंगतीन में कि लदाव में कि जलघरा में तथा आंगन में कि तिबारी में तथा अटारी में कि और हू वा वा स्थल में पूर्ण चन्द्रमंडल कूं विजय करिवे वारे श्रीजी के मुखकमल को दर्शन करिवे लिये ठहेरे हैं वे सगरे ही बड़े उत्साह सूं सुन्दर बहुत प्रकार सूं जय शब्दन कूं ही करें हैं तब दंडदीप कूं जो वैसो प्रकाश है ॥२९॥ कि शोभायमान होय रहे श्री अंगन कूं जो भली प्रकार उछल रह्यो चमत्कार है कि मुखकमल की जो सुगंध है कि सुन्दरता है कि माधुरी समूह है ॥२८॥ तथा मंदहास्य के जे चांदनी तरंग के विलास हैं कि मनोहरता है कि बचन के इच्छापूर्वक मिल रहे जे दीर्घ अमृत के समुद्र हैं कि गंभीर सुन्दर नर्म वाक्यन के जे बहुत प्रकार के हर्ष के आवर्त हैं कि भ्रमर हैं कि सुदामा ब्रह्मचारी के संग रमणीक जे हास्य के विलास हैं ॥३०॥ मद सूं मत्त होय रहे गजराज के गर्व रूप समुद्र को जाने नाश कियो है ऐसे गति के, जे मधुरता के, प्रकाश हैं कि निरन्तर पान किये हैं गंगा प्रवाह संबंधी श्वेतता के गर्व रूप महासमुद्र जाने, ऐसी धोती की जो शोभा है कि उपरणा के जे वैसे उज्ज्वल चमत्कार हैं कि ॥३२॥ श्री कंठ में और पीठ में लटक रहे जूड़ा के श्याम कांति में

जे कंठ में विराजमान पुष्प माला के सुगंधी सूं पुष्ट जे श्याम चांदनी के अत्यन्त विस्तार हैं ॥३३॥ और या प्रिय के श्री अंग वस्त्र तथा भूषणन सूं निरन्तर चारों ओर सूं उदय होय रहे सुन्दर सौंदर्यता की माधुरी कूं जो पूर्ण प्रवाह है कि शोभायमान समूहन सूं कि वैसे पुष्प तेल के उच्छल रहे सुगंधी के जे माधुरी के पूर्ण प्रवाह हैं कि वा कुंडल युगल के भुजदंडन के कि वैसे उपरना के तथा धोती के कि वैसे विशाल हृदय के कि वा मनोहर कमर के कि वैसे चरण कमलन के कि चलन वलन कि विलासन की माधुरी के जे पूर्ण प्रवाह हैं वे सगरे ही एक काल में ही अहं पूर्विका सूं ही बिन भक्तन के तथा भक्त सुन्दरीन के नयन रूप दोनान में सुन्दर आनन्द समूह के समूहन कूं ही अत्यन्त वर्षा कर रहे हैं ॥३८॥ और यह प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी सगरे भक्तन कूं अत्यन्त सुखदान करत कितनीक पूर्ण चन्द्रमुखीन कूं नेत्र कमलन सूं अर्पण किये रस समुद्रन सूं नहवावत औरन कूं मंद हास्य सूं प्रगट भये रस समुद्रन सूं नहवावत और कितनीक कूं भ्रू विलासन सूं दिखाये रस सागरन सूं कि औरन कूं भूषणन सूं उदय भये और कितनेन कूं जूड़ा सूं प्रगट भये कि औरन कूं ऊर्धपुंड के चमत्कारन सूं प्रगटे कि और कितनी सुन्दरीन कूं प्रतिबिंब सूं दुगुणी होय रही अलकावली सूं प्रगटे कि औरन कूं कपोलफलकन के उल्लास समूह सूं प्रगटे रस सागरन सूं नहवावत तथा और सुन्दरीन कूं माणिक जटित कुण्डल युगल के तांडव समूह सूं प्रगटे कि और सुन्दरीन कूं श्रीदंतन के सुवर्ण रेखा संबंधी चमत्कारन सूं प्रगटे के औरन कूं मूछन की श्यामता के विस्तारन सूं प्रगटे रस समुद्रन सूं कि और सुन्दरीन कूं अधर पल्लव की लालिमा समूह के प्रकाशन सूं प्रगटे कि औरन कूं श्रीकंठ संबंधी माधुरी के प्रगल्भ विस्तारन सूं प्रगटे तथा औरन कूं तुलसी माला के समूह के सुन्दरता विलासन सूं प्रगट भये तथा और सुन्दरीन कूं सुवर्ण मुक्ता रत्नादि मालान के प्रकाश सूं प्रगट भये रस समुद्रन सूं कि औरन कूं माणिक जटित पदक संबंधी शोभा समुहन सूं नचायके फिर प्रगट किये तथा आलिंगन की अभिलाषा कूं देवे वारे भुजदंडन सूं प्रकाशित किये कि धोती उपरेना के चमत्कारन ने प्राप्त किये और सुन्दरीन कूं जानु जंघा संबंधी शोभा समूह ने भेट किये कि चरण कमल संबंधी सुन्दरता ने प्रकाश किये कि और सुन्दरीन कूं विलासन सूं अत्यंत उच्छलित किये रस सागरन सूं नहवावत ही चरण

कमल के धारण सूं मार्ग की भूमि कूं सुगंधित करत क्रम सूं अपनी बैठकजी कूं अपने स्वरूप सूं शोभायमान करें हैं और श्री हस्त में बिराजमान जो श्रीनाथजी के मंदिर की कूंची है वाकूं अपने अंग सेवक खवास के हाथ में देवें हैं याके अनन्तर शौच घर में जायके वहां सूं पधारके प्रथम कही रीति सूं श्री महाप्रभुजी अपने चरण कमलन कूं पखारें हैं और आचमन करें हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां तृतीय स्तरंग समाप्तम् ॥३॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ४

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ४ लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ होम गृहंम् गत्त्वा जु होति समय ।**
विधि प्रभात हूवतो केशो लोकानुग्रह तत्परः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि याके अनन्तर सो लोकन के प्रभु लोकन के ऊपर अनुग्रह करिवे में तत्पर सों श्री महाप्रभजी होम घर में पधारके प्रातःकाल में जैसे करें हैं वैसे ही यथाविधि होम कूं करें हैं ॥१॥ वाके संकल्प में सो भगवान श्रीजी सायंकाल इतनो विशेष करें हैं और आहुती में तो मधुरता पूर्वक ''अन्नये स्वाहा'' या प्रकार कहें हैं ॥ रात्रि होम में इतनो विशेष करें हैं ऐसे सो श्री महाप्रभुजी होम कृत्य कूं करिके विलास पूर्वक भोजन घर में पधारें हैं वहां पुत्रादिकन के संग ही प्रथम कहे प्रकार अनुसार ही भोजन कूं करें हैं ॥ पीछे आचमन करिके सुन्दरवर पुरुषोत्तम मुगटमणि श्री महाप्रभुजी अपनी बैठकजी में पधारके त्रिलोकमणि अपने स्वरूप सूं आसन कूं शोभायमान करें हैं ॥५॥ स्वतंत्र इच्छा वारे श्री महाप्रभुजी जब भोजन घर में नहीं पधारें हैं तब होम घर के आगे एक घर में विराजमान होय हैं वामें सेवकजन पीढ़ा आसन जलपान पात्र तथा पीकदान आदि सजावें हैं ॥ तब बड़े थार में विराजमान न्यारे न्यारे स्थित भोग योग्य वे वे वस्तु घर सूं सजिके रस सागर श्री जी के निकट पधारे हैं ॥८॥ तामें घृत पक्व अत्यन्त मीठे बहुत प्रकार के गुंजा माठ आदि सामग्री कि पूरी आदि वैसे और हू मिसरी के पाक

विशेष वे वे मिठाई वा वा ऋतु के अनेक प्रकार के फल तथा घृत में भूज्यो लोन रहित जिमीकंद कि अग्नि में भूज्यो छिलका रहित और कड़वे तेल सूं मिले कि कारी मिरच यथायोग्य लोंन सूं मिले या प्रकार सूं भुंजे प्रिय कूं अत्यन्त प्यारे चणां तथा स्वभाव सूं हरे कि छिलका रहित घृत में चतुराई सूं भुंजे चणा फल कि तथा अगनी में भूंजे छिलका रहित वे हरे चणा फल यह सब सामग्री साजके प्रिय के निकट पधारे हैं ।। प्रिय श्री महाप्रभुजी तो विलास पूर्वक वहां पधारके अपने सुन्दर आसन पर विराजमान होयके श्रीअंग सेवक ने आपु के आगे धारण करी या सगरी सामग्री कूं उच्छलित विलासपूर्वक आदर सूं प्रथम तो या सगरी सामग्री कूं कहा कहा है कैसी है का प्रकार सूं बनायो है या प्रकार कूं देखें हैं ।। गुणसागर श्रीजी बिनमें फलन कूं कछु कछु आस्वादित करिके ।।१६।। घृत में पके सुन्दर बहुत प्रकार के अत्यन्त मीठे गुंजा माठ आदि कूं आस्वादित करें हैं और वा वा सामग्री के शिक्षा अर्थ विलासपूर्वक वा वा गुण कि अवगुणन कूं हू कहें हैं ।। यह बहुत आछो भयो है, यह आछो नहीं भयो और याकूं तो या प्रकार सूं ही बनावनो और मन कूं सावधान करिके सगरी सामग्री भली रीति सूं ही सिद्ध करी है या प्रकार सूं कहें हैं और अम्ल रस वारे फलन में तो श्री महाप्रभुजी निर्मल मिसरी कूं मिलायके अथवा लोन मिरची मिलायके आरोगें हैं पीछे भुंजे चणान कूं आरोगें हैं ।।२१।। वर्षा ऋतु में तो सुन्दरवर श्री महाप्रभुजी सबके पीछे चणान कूं ही आरोगें हैं ।। और अपनी इच्छा के आधीन श्री महाप्रभुजी जब लों होम नहीं करें हैं तब लों वा जलघर में ही या सामग्री कूं प्रथम कहे सर्व प्रकार सूं मनोहर प्रभु अंगीकार करें हैं ।।२३।। या प्रकार प्रभुन की भोजन लीला के पूर्ण होने पर भोग योग्य वस्तुन को जो पात्र है जाकूं तबकड़ी ऐसे प्रसिद्ध नाम है वाकूं सो अंग सेवक उठायके वेग ही और ठौर में धरे है और वाके स्थान में पीकदान और जल के पात्र कूं श्री महाप्रभुन के निकट ही धरे है ।। और यह श्री महाप्रभुजी तो विलास सहित जलपात्र कूं वायें श्रीहस्त में लेकर दक्षिण श्रीहस्त कमल कूं पखारें हैं और वा पीकदानी में कुल्लाह करें हैं याके अनन्तर सुन्दर श्री मुख कमल कूं पखारें हैं और श्री मुखकमल कूं कि हस्त कमल कूं भली प्रकार पखारकें श्री महाप्रभुजी वा जल सूं श्री चरणकमल के ऊपर हू कुल्ला के किणका गिरवे के संदेह सूं मार्जन करें

हैं याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी मुख वस्त्र सूं श्रीमुख कूं पोंछें हैं तथा हस्तकमलन कूं पोंछें हैं ॥२८॥ या समें में प्रिय के श्रीमुख चन्द्र की माधुरी समूह के किणका कूं पान करिवे में लोभी होय रहे वैसे उच्छलित भाव समूह सूं रंगीन शोभावारे कितनेक वैसे भक्त समूह वा माधुरी के लाभ अर्थ अपने अपने योग्य स्थान कूं वेग ही ग्रहण करिके प्रथम ही ठहरे हैं तामें कितनेक भक्त तो जलघरा के सनमुख ही ठहरे हैं कितनेक तो वाकी आगे वारी बेदी पर ही ठहरे हैं कितने तो होम घर के निकट रहे हैं कि कितने चतुर जन तो और ठौर में ठहरे हैं ॥३२॥ कितनेक भाग्यवान तो अटारी पर बिराजे हैं और कितने भाग्यवान चौखंडी में बिराजे हैं और कितने उच्छलित शोभायमान होय रहे भक्तजन वा चौखंडी के ऊपर अटारी में ठहरे हैं और कितने भक्तजन तो प्राणनाथ के मंदिर के मनोहर तीसरे खंड पर ठहरे हैं कितनेक भक्त तो उच्छलित प्रेम सूं इहां नीचे ही भीत के सहारे ठहरे हैं ॥३४॥ और तो तिबारी में सनमुख वारी भीत के सहारे ठहरे हैं, वैसे और रसिक तो प्राणनाथ के महा रसमय मुख्य मंदिर में बिराजे हैं ॥३५॥ कितनेक तो बैठे हैं कितनेक तो ठाड़े ही बिराजे हैं, वहां क्षणुमात्र हू देश भक्तन के बिना नहीं नजर आवें हैं ॥३६॥ सगरो हू देश, प्रिय के दर्शन हैं प्राण जिनके, भक्त समूहन सूं कि ऐसे वैसी हरिण नयनीन के समूहन सूं ही बंधो भर्यो भयो ही अत्यन्त शोभायमान होय रह्यो है ॥३७॥ और जैसे रात्रि चन्द्रमा के उदय कूं प्रतिक्षा करे है वैसे बढ़ि रह्यो है उत्कंठा रूप महा सागर जिनमें ऐसो जो वहा वा भक्तन कूं तथा भक्त सुन्दरीन को सगरो ही समूह है सो प्रियतम के श्रीमुखचन्द्र की शोभा के पान में ही दृढ़ तृष्णा वारो होयके प्रसन्न श्रीमुख कमल वारो हमारो प्यारो श्रीजी प्रसरवे वारी सुगंधी सूं मिली अपनी चांदनी सूं अपने वियोग रूप महा अंधकार कूं शांत करत हमारे नयनों में कपूर की सलाका रूप होवत ही तप्त होय रहे हमकूं शीतल करत सांकर लगायके होमघर सूं कब बाहेर पधारेंगे ॥४०॥ या श्री हमारे प्यारे प्राणनाथ के जे केश हैं सो रसात्मक दीपक तथा काजर कि सुन्दर श्याम पाट के तंतु रूपन कूं धारण करत विजय कूं प्राप्त होय रहे हैं और या हमारे प्रभु को जो श्रीमुख कमल है सो महा समुद्रन के मंथन सूं उदय भये चन्द्र रूप कूं धारण करत विजय कूं प्राप्त होय रह्यो है या प्रकार सूं भावना करत वे सगरे ही प्राणनाथ के पधारवे कूं ही प्रतीक्षा

कर रहे हैं ।।४२।। और वा भक्तन के अंतःकरण के ज्ञाता महाप्रिय प्रभु करुणासागर श्री महाप्रभुजी तो आगे अत्यन्त पुष्ट दंड दीपकन कूं प्रकाश शोभायमान होय रह्यो है ।।४४।। तामें प्रकाशमान होय रहे श्रीमुख कमल की शोभा सूं बाहिर प्रगट होय रहे हैं अमृत के समुद्र जासूं कि वा वा श्री अंग के चमत्कार की धारा सूं नहवाये हैं वा भक्तजन के मन जाने ।।४५।। कि वा भक्तन के मुख सूं उदय होय रही जय शब्द की परंपरान कूं हर्ष सहित कर्ण युगल रूप अंजलीन सूं जो अत्यन्त पान करि रह्यो है ।।४६।। और वे भक्तजन हर्ष सूं ही जाकी शोभा के ऊपर अपने सगरे सर्वस्व कूं न्योछावर कर रहे हैं कि जाके चरणन में वे भक्तजन प्रेम आदर समूह सूं प्रणामन कूं कर रहे हैं और मुखचन्द्र में नयन कमलों की शोभा में कि कपोलन में कि नाशा बंश की शोभा में कि रत्नजटित कुंडलों के तांडव में कि मूंछन की स्याम चांदनी में कि अधर की शोभा तरंगन में कि मंदहास्य के तरंगन में कि भ्रुव पल्लव के चमत्कारन में कि श्री मस्तक के उदय होय रहे तेज की मधुरता में तथा ऊर्ध्वपुंडादि के विलास में कि मनोहर जूड़ा की सुन्दरता में कि श्री दंत की कांति संबंधी ऐश्वर्य में श्री कंठ में शोभायमान कांति में कि सुवर्म मणी मुक्ता हारन सूं शोभायमान वक्षस्थल में कि ।।५१।। विशाल भुज दंडन में कि शोभायमान है माणिक जटित मुद्रिका जामें, ऐसे दक्षिण श्री हस्तकमल के शोभायमान अंगुली पल्लवन में कि ।।५२।। धोती उपरेणा के चमत्कार समूह रूप सागर में कि चरण कमलन की शोभा समूहन में सगरे भक्तजन जा प्रिय के रस कूं अपने अपने भाव अनुसार आदर सहित पान कर रहे हैं तथा वा श्रीजी के अंग विशेष मंद हास्यादि सूं कि गति विलास चतुरता सूं कि वैसे प्रेम पूर्वक देखनो कि बोलनो तासूं प्रगट भये सुन्दर सुख समूह कूं पान कर रहे भक्तन के तथा चंचल नयनीन के उठके ठाड़े भये जे ऐसे समूह हैं सो जाको पान कर रहे हैं ऐसे तो श्री महाप्रभुजी होम घर सूं किंवाड़ लगायके बाहिर पधारे हैं ।।५४।। और सो श्री महाप्रभुजी अपनी सुन्दरता सूं विन भक्तन के नयनन कूं तथा श्रीअंग के सुगंधी सूं बिनके घ्राणन कूं कि बचन की माधुरी सूं बिनके कानन कूं सफल करत ।।५५।। और अपने रसमय कटाक्षन सूं रसात्मक सुन्दरीन के अवस्था वेष नयनन कूं कि अंगन कूं तथा सबकूं ही फलित करत ही विलास सिंधु पूर्वक यह श्रीजी सुन्दर

रीत सूं बिछाये कोमल वस्त्र पर पधारे हैं रत्न कंबल के ऊपर विलासपूर्वक चरणकमलन कूं पौंछिके तिबारी में कहे प्रकार सूं बिछे भये आसन कूं चौदह लोकन के तिलक रूप अपने स्वरूप सूं शोभायमान करते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां चतुर्थ स्तरंग समाप्तम् ॥४॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ५

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ५ लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ प्रणम्यं बहुधा दंड्वत्पद पंकजे सर्वेते**
तस्यसेल्यत्त सार्वभोमाः कृपां बुधैः ॥१॥

याको अर्थ -- श्रीं कल्याणभट्टजी कहें हैं कि याके अनन्तर या श्री महाप्रभुजी के सगरे वे भक्तराज कृपा सागर श्री महाप्रभुजी के चरण कमलन कूं दंड्वत प्रणाम बारंबार करिके नम्रता सहित वा श्री महाप्रभुन के चारों ओर ही बैठे हैं ॥ वे चकोर नयनी सुन्दरी हू प्रिय के कछुक दूर में बैठे हैं, प्रायः और हू भक्त बैठे हैं वैसे प्रेम सूं प्रकाशमान और सुन्दरी तो वा श्री महाप्रभुजी के वांये ओर पीढ़ा के ऊपर मनोहर सुन्दर बिराजमान जलपान पात्र कूं निरखें हैं ॥ तब श्री महाप्रभुन के चित्त कूं जानवे वारो श्रीअंग को सेवक खवास अथवा ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्लभ है कणिका जाको, ऐसे आपके निकट मंगल रूप बैठिवे कूं प्राप्त भयो कोऊ भाग्य वारो और सेवक, वा जलपान पात्र कूं विलास सहित लेके या पात्र के नाल कूं अंगुष्ठ सूं ढांपिके यासूं गिरि रही जल की सूक्ष्म धारा कूं पान करिके जब वाकूं धरिवे की इच्छा करे है तब ही सावधानता सों श्री अंग सेवक कि अथवा कोऊ और सेवक ही वा जलपान पात्र कूं लेके वेग पीढ़ा पर धरे है ॥ तब श्रीअंग सेवक, तांबूल के बीड़ा कूं श्री महाप्रभुन के आगे धारण करे है ॥ यह गुणसागर श्री महाप्रभुजी तो श्रीहस्त सूं वाकूं उठायके ॥९॥ तब उच्छलित होय रहे विलास पूर्वक वाकी सीकन कूं वासूं निकार लेवे हैं और वाके ढापवे वारे ढाक के पत्ता कूं वेग

न्यारो करें हैं वासूं प्रसर रही है सुगंधी जाकी, ऐसे सुन्दर रस वारे उत्तम तांबूल कूं कि पान कूं दक्षिण श्रीहस्त सूं उठायके ॥११॥ बारंबार वासूं नाड़ीन कूं निकासके चूना सूं मिली बीड़ी कूं बनायके श्री मुखारविन्द कूं पसारके वाकूं श्रीहस्त कमल कूं स्पर्श न करावत ही विलास पूर्वक दूर सूं ही श्रीमुख में वाकूं डारें हैं ॥१२॥ तब श्रीअंग सेवक अपने हस्त में स्थित कपूरदानी के ढांकण कूं उतारके खुले मुख वारी करिके दक्षिण हस्त सूं श्री महाप्रभुन के आगे धरे है ॥ तब श्री महाप्रभुजी छोटे से कपूर के खंड कूं उठायके अपने सुन्दर श्रीमुख कमल में विलास पूर्वक डारें हैं ॥ इच्छा होय तो मधुर चेष्टा वारे श्री महाप्रभुजी अंग सेवक सूं मांग के चूना गोली कूं श्रीमुख में फेर डारे हैं ॥ श्री महाप्रभुजी की इच्छानुसार चलवे वारो श्रीअंग सेवक कबहू तो वा बीड़ी कूं कूटके एक पात्र में धरिके श्री महाप्रभुजी के आगे लावे है तब श्रीहस्त सूं वाको पात्र सहित ही लेके वा पात्र सूं बीड़ी कूं उठायके प्रथम कहे प्रकार सूं श्रीमुख में दूर सूं ही विलास पूर्वक डारें हैं तब कपूर कूं लेवे हैं कि चूना गोली कूं लेवें हैं ॥१८॥ और श्री महाप्रभुन के सुन्दर वांये दिशा में बिछे एक रत्न कंबल में कि कोउ सतरंजी में प्रभुन के भाणेज आदि भट्ट तथा और हू प्रभुन के चरण कमलन को प्रणाम करिके मिलिके बैठ जाय हैं और ज्येष्ठ अषाड़ में तो श्री महाप्रभुजी आंगण में बिछे आसन कूं अपने स्वरूप सूं शोभायमान करें हैं तब तो श्री महाप्रभुन के दक्षिण ओर में भाणेज तथा और भट्ट हू हर्ष पूर्वक बैठे हैं ॥ करुणा सागर श्री महाप्रभुजी हू विनके सनमान कूं हर्ष पूर्वक करें हैं ॥ इतने सूं हू वे अपने अत्यन्त कृत्य कृत्य माने हैं ॥२२॥ कबहू तो अत्यन्त वात्सल्य दयाल श्री महाप्रभुजी पढ़वे के अर्थ शरण आये बालकन कूं श्रीमद् भागवत कि श्री वल्लभाचार्यजी ने प्रगटाये श्रीकृष्ण के मार्ग कूं प्रकाश करवे वारे अनेक प्रकार के बालबोध, यमुनाष्टक, सिद्धांत मुक्तावली आदि ग्रन्थन कूं कि श्री भागवत की सुबोधिनी जी नाम टीका कूं पढ़ावें हैं, और स्वतंत्र इच्छा वारे करुणा प्रेम के सागर श्री महाप्रभुजी कबहू तो कथा की रीति सूं विलास पूर्वक या श्री सुवोधिनीजी के अर्थ कूं कहें हैं वाके अर्थ चतुर अंग सेवक खवासजी प्रथम ही एक चौकी के ऊपर लायके वेग ही पुस्तक जी कूं धरें हैं और याके निकट सजायके दीपक कूं हू धरें हैं ॥२९॥ याके अनन्तर

प्रिय हरि श्री महाप्रभुजी उच्छलित होय रहे विलास सागर पूर्वक श्रीहस्त कमल सूं वा पुस्तकजी कूं खोलिके पसारके श्री गोकुलेशजी श्रीजी यथायोग्य वांच्छित पत्रन कूं श्रीहस्त सूं न्यारे निकारके यद्यपि सर्वज्ञन सूं सेवा योग्य है चरण कमल जाके, श्री महाप्रभुजी ऐसे हू हैं कि महा सर्वज्ञ हू हैं तोहू वाके सगरे अर्थ कूं प्रथम देखें हैं अपने हृदय में धरि राखे हैं ॥३०॥ और पद वाक्य सगरे कि विनको तात्पर्य हू प्रेम नम्रता पूर्वक हाथन कूं बांधिके डरिके ठहरे हैं ॥ बिन सबन कूं ही श्री महाप्रभुजी अपने निकट ही ठहरावें हैं याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी बिन पत्रान कूं चौकी के ऊपर धरें हैं ॥३२॥ और भोजन कूं करिके आय रहे श्री गोपालजी कि विट्ठलरायजी नाम अपने पुत्रन कूं हू कछुक क्षण प्रतीक्षा करें हैं ॥३३॥ या अवकाश में श्री महाप्रभुजी प्रथम कहे प्रकार सूं पान बीड़ी कूं आरोगें हैं, कबहू जल हू पान करें हैं ॥३४॥ भक्तन के ऊपर अनुग्रह करिवे में सावधान प्रिय श्री महाप्रभुजी अपने श्री मुख कमल के रस सूं महा मधुर चर्बित तांबूल कूं कि उगार कूं पीकदान में डारें हैं तब सौभाग्य समूह सूं शोभायमान कोउ महा भागवत भक्त श्रेष्ठ तो उच्छलित होय रह्यो आदर समुद्र कि उदय होय रहे रोम हर्ष समूह पूर्वक वेग ही वा उगार कूं उठायके लेवे है और उच्छलित होय रही अपनी कृपा समूह सूं विज्ञापना कियो भयो गुणसागर श्री महाप्रभुजी कबहू सगरे भक्तन के हित के अर्थ विनके कानों में अमृत समुद्र कूं हू विजय करिवे वारे लौकिक अथवा अलौकिक मधुर वचन कूं परोसे हैं कबहू तो श्रीमान पंचोली मालजी नाम सूं प्रसिद्ध भक्त कि पुरुषोत्तमदास मेहरा कि चतुर रघनाथदास कि और कोउ वहां बैठो प्रतिष्ठित भक्त श्रीकृष्ण की लीला कि लौकिक अथवा अलौकिक कि श्री आचार्यन के चरित्र कूं श्री गोस्वामी जी के चरित्र कूं कछु और हू विषय पूछें हैं और सो श्री महाप्रभुजी तो उच्छलित भये विलास पूर्वक उत्तर देवें हैं कि जैसे वे सगरे ही प्रसन्न होय जाय हैं और अपने कूं कृतार्थ माने हैं वैसे प्रफुल्लित रोमावली वारे हू होय जाय हैं और जैसे वहां ठहरे और जन हू अपने अपने संशयन के नाश होयवे सूं कि अपने वांच्छित अर्थ के लाभ सूं सुख के समुद्रन में निमग्न होय जाय हैं ॥४४॥ और नाना प्रकार के भाव वारे कि नाना प्रकार के मनोरथ वारे भक्तजन कि रस मार्ग में अंगीकृत चंचल नयनी सुन्दरीजन

हू जैसे यह मानें हैं कि कमलनयन हमारो प्यारो महाप्रभु श्रीजी हमारे चित्त स्थित संशय कूं तथा मनोरथन कूं जानके और दुःख कूं हू जानिके वा दुःख कूं दूर करिवे लिये इन भक्तन सूं या प्रकार के प्रश्नन कूं करावते भये हैं, यदि ऐसे नहीं होय तो मधुरता सूं विजय किये हैं अमृत के अर्बन समुद्र जाने, ऐसे मधुर अद्‌भुत तथा सबको समाधान करिवे वारे उत्तर कूं कैसे देते ।।४८।। और या सुन्दरीन में कितनीक भाग्यवारी और प्रिय ने दान किये सुन्दर भाव विशेष वारी सुन्दरी, तो जैसे या प्रकार सूं मानें हैं कि जो सर्वज्ञन समूहन सूं पूजनीय हैं चरण कमल संबंधी रज के कणिका जाके और कृपा माहासागर रूप मन अंग अत्यंगादि विलास जाके ऐसो रसिक चक्रवर्ती पुरुषोत्तमन को मुगटमणी सुन्दर हमारो प्यारो हमारे ताप कूं कि अभिलाखा कूं जानके उच्छलित भये बाव के महाप्रवाह के परवस होयके हमारे ताप कूं हरिवे लिये कि हमारी अभिलाखा कूं हू पूर्ण करिवे लिये बल सूं हू कालकूट विष जैसे कड़वी करी है अर्वुद सुधा जाने ऐसे महा मधुर थोरे अक्षर बहुत अर्थ वारे कि गुप्त तात्पर्य सूं प्रकाशमान अपने श्रृंगार रस के सुन्दर सार सर्वस्व सूं शोभायमान वाक्य कूं प्रगट करते भये हैं ।।५३।। कि निरन्तर गंभीर तथा मधुरता सूं मनोहर स्वरा कूं प्रगट करते भये हैं कि ।।५४।। हमारे दुःख सूं कायर होयके नाना प्रकारों के विलासन कूं हू प्रगट करते भये हैं और या हमारे प्रिय के श्रीमुख की कैसी विचित्र सुन्दरता है कि भ्रू युगल के कैसे विचित्र विलास हैं कि कटाक्षन की कैसी सुन्दर शोभा है यह सगरे ही सर्वोपर ही बिराजे हैं ।।५५।। ऐसे हमहू अत्यन्त धन्य हैं कि यह रस सागर श्रीजी जिनके शिर को भूषण रूप होयके या प्रकार सूं जिनके महा मधुर वचनामृतन सूं सिंचित करें हैं ।।५६।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां पंचम स्तरंग समाप्तम् ।।५।।

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ६

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ६ लिख्यते ॥

श्लोक -- **वार्ता प्रसंगो विविधस्तयांत मोल्दवत्य हो**
कदाचिव्दास्य बहुलः कदाचित्कौतु काश्चित ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि तब वा सभा में कबहु हास्य विशेष वारो वार्ता प्रसंग प्रकट होय है कबहू कौतुक विशेष वारो कि कबहू स्नेह सूं पूर्ण कि कबहू भक्तन सूं शोभायमान कि कबहू अनन्यतामय वार्ता प्रसंग चले है कबहू गद्य पद्यन कूं प्रसंग कि कबहू शूरवीरता को प्रसंग कि कबहू अनेक प्रकार को धर्म रूप प्रसंग चले है और कबहू कुल को बालक जयदेव कि कृष्णचन्द्र कि कोऊ और हू बालक हू इहां आवे है ॥ सो भक्ति आदर समूह सूं प्रभुन के आगे प्रणाम करे है ॥५॥ श्री आपके सनमुख ही वा रत्न जटित कंबल के आगे घोंटुन कूं संकोचके श्री आपके आसन सूं नीचे ही बैठे है ॥६॥ प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी तो उच्छलित होय रहे विलासपूर्वक समाधान करत वा वा वार्ता कूं वासूं पूछें हैं और प्रेम करुणा विशेष सूं अपने श्री हस्तकमल सूं वाके हस्त कूं पकरिके विराजे हैं कि वाकी पीठि पर हू श्रीहस्त फेरे हैं और उच्छलित होय रही अत्यन्त दीनता समूह जामें, ऐसो सो बालक हू वा वा वार्ता कूं विनयपूर्वक ही विज्ञापना करे है और आदर सूं पूछे है सुन्दर बुद्धिवारो सो बालक कबहू तो भगवत मार्ग में कि हास्य विलास सूं वा प्रकार सूं कहे है कि जा प्रकार सूं रस सागर श्रीजी मंद मंद हसत ही प्रसन्न होय हैं और अमृत के विलास कूं विजय करिवे वारी वैसे प्रकार वारी कि महा मधुर वार्ता कूं स्वयं हू चलावें हैं ॥१०॥ या अवसर में सुन्दर कांति वारे श्री गोपालजी तथा छोटो भैया विठ्ठलरायजी ॥११॥ वेग ही व्यारू कूं करिके मार्ग में बीड़ी कूं मुख में लेवत वेग ही वहां पोंहोंचे हैं ॥१२॥ शीतकाल में तो सुन्दर रुईदार गदर कूं धारण करत वेग ही आयके आदर पूर्वक महाप्रभुन के चरण कमलन कूं प्रणाम करिके वा रत्न कंबल के आगे

आगे ही घोंटुन कूं संकोचके महाप्रभुन के आसन के नीचे ही आपके सनमुख ही बैठे हैं ।।१४।। या अवसर में श्री महाप्रभु जी चवाये वीरा कूं आस्वादन करिके श्रीमुख कमल सूं पीकदान में डारें हैं ।।१५।। श्री महाप्रभुन के निकट ही स्थित कोऊ भाग्यवान तो वेग ही कूद के आदर के सहित ही वाकूं ले लेवे है ।।१६।। याके अनन्तर सो श्री करुणा सागर रसिक शिरोमणि सुन्दरवर कमलनयन श्री महाप्रभुजी प्रथम जिनके अर्थ विचार्यो हतो विन पत्रान कूं श्रीहस्त कमल सूं उठायके निरन्तर ऊंची गंभीर सुन्दर अत्यन्त मधुर स्वरा सूं श्लोक

''जयति जन निवासो देवकी जन्म वायों यदुवर परीष त्स्वैदोर्भिर स्यन्त्र धर्मस्थिर चर वृलिनध्रु--सुस्मित श्री मुखेन व्रजपुर वनिनाना वर्दायन्कामदेवं ।।१।।''

श्रीमद् भागवत दसम स्कंध के या श्लोक कूं पढ़कर आज्ञा करें हैं कि आनंदमात्र है हस्त, मुख, चरण, उदर आदि अंग समूह जाके, ऐसे परमानंद रूप श्रीहरि कृष्ण साक्षात् भगवान की आनंदमई लीला सम्पूर्ण श्रीमद् भागवत में स्पष्ट निरूपण करी है ।।२०।। दसम स्कंध में तो निरोध लीला निरूपण करी है तामें चार अध्यायन सूं प्रथम सगरो जन्म को प्रकरण है और यामें सात अध्यायन सूं सुन्दर प्रमाण प्रकरण विराजमान हैं और सात अध्यायन सूं प्रमेय प्रकरण अत्यन्त शोभायमान है इत्यादिक वा वा प्रसंग कूं हू सुनायकर स्पष्ट मधुर रीति सूं श्रीमद् भागवत के व्याख्यान कूं करें हैं और या पर ईश्वर स्वरूप श्रीमद् वल्लभाचार्यजी ने प्रगट करी जो सुबोधिनी टीका है वाकूं हू समय अनुसार मधुर स्पष्ट व्याख्यान करें हैं और श्री आचार्यजी श्री गोस्वामीजी ने करे अर्थ तथा मधुर भावन कूं यथाविधि वर्णन करिके विलास करि रह्यो है वैसो महामधूर मनोहर रस कल्लोल के समूह जामें ऐसे महा सुन्दर सर्वोपर विराजमान उच्छलित रस रूप श्री महाप्रभुजी औरन सूं न लिखे विनसूं हू अत्यन्त विशेष तथा औरन सूं जानवे में अशक्य ऐसे प्रेम रस के आवर्त लहेर वारे बहुत प्रकार के अर्थन कूं स्वयं प्रकट करें हैं ।। और आवेश के वस सूं अन्य अनुसंधान रहित होय क श्री महाप्रभुजी वा अपने आसन कूं त्यागके वा मणि जटित कंबल के ऊपर ही आय जावें हैं ।।२८।। और प्रिय श्री महाप्रभुजी कूं

श्री गोपालजी जो सावधान होयके निरन्तर आदर प्रेम विनय के सहित ही श्री महाप्रभुन के श्री मुख रूप क्षीर सागर सूं प्रकट होय रहे वचनामृत कूं पान करत ही यह ऐसो ही है, यह ऐसे योग्य है, यह सर्व प्रकार सूं बहुत आछो है ।। हां हां ऐसे बहुत प्रकार सूं मधुर रीति सूं बारंबार अनुमोदन करत ही वा श्री महाप्रभुन के श्रीमुखचन्द्र की शोभा के पान में ही आशक्त हैं, नयन रूप चकोर जाके, ऐसे क्षण क्षण में बढ़ि रह्यो है उत्साह समुद्र जामें, ऐसे ही विराजमान होय हैं ।।३२।। तब श्री गोकुल के आधार श्री महाप्रभुजी बहुत प्रकार सूं ही भावन कूं कि अर्थन कूं बारंबार ही प्रगट करें हैं ।।३३।। वाहा शोभायमान अंगन सूं कि नयनन सूं कि भ्रुव विलासन सूं कि धोती उपरना सूं कि अधर सूं तथा मंद हास्य सूं कि जूड़ा की शोभा सूं भारी तरंग कि भमर समूह वारे मनोहर अमृत समुद्रन कूं वर्षा करत सगरे भक्त समूहन के चूड़ामणी कि रसात्मिक ब्रज सुन्दरीन के प्राण रूप कि अद्‌भुत मंगल मनोहर शोभा गुण रूप शक्ति के निधि रूप परमेश्वरन के हू परमेश्वर कि मधुरता सुन्दरता चतुरता सूं शोभायमान रसिकवर सर्वभौम तथा प्रेम के अत्यन्त दीर्घ सागर में विलास कर रहे श्री महाप्रभुजी वा समय अर्बन करोड़न भक्तन सूं मिले भये अत्यन्त शोभायमान होय रहे हैं ।।४०।। और श्रीमद् भागवत की महामधुर कथा को वर्णन कर रहे श्री महाप्रभुन की जो ऊंची मधुर गंभीर स्वरा है कि प्रगल्भ शब्द हैं तब अपनी महिमा सूं सगरे तीन लोकन कूं निरंतर पावन करत पूर्व दिशान में तो बजार पर्यंत दक्षिण दिशा में दीक्षित के घर परंयत पश्चिम दिशा में वाके बड़े भैया के घर पर्यंत कि उत्तर दिशा में तो पंचनदि भट्ट के घर पर्यंत ठहरे हैं सगरे जनन के सुनिवे में आवे है वहां वहां सूं सुनि सुनिके सगरे भक्त सेवक स्त्रीजन तथा और जन हू दौड़े हैं कि करुणासागर प्रिय श्री महाप्रभुजी विलास चतुरता मधुरता सहित अब कथा कूं कहि रहे हैं या प्रकार सूं उच्छल रहे भाव वारे जे जन श्री महाप्रभुजी की बैठक में जायके वा अत्यन्त मधुर कथा कूं सुनें हैं वैसे और जन तो प्रथम कहे वा वा दिशा में अपने घर में बैठे बैठे ही अपने कामकाज कूं करत ही वा मधुर कथा कूं सुनें हैं और जब सो महा मधुर शब्द सुनवे में नहीं आवे है तब वे जान जाय हैं कि कथा समाप्त होय गयी है ।।४४।। श्री

कल्याणभट्टजी कहें हैं कि जो भक्त जा भाव के सहित सुनें हैं करुणासागर श्री महाप्रभुजी वाके अनुकूल ही अपने स्वरूप कूं प्रकट करें हैं और वाके अंतःकरण में ही वैसे दृढ़ स्थापन करें हैं ॥४५॥ कि जैसे प्रिय को अंगीकार तथा नाना प्रकार को भाव हू वा वा भक्त को दृढ़ ही आलिंगन करें हैं ॥४६॥ और श्री महाप्रभुजी जब पदन को अर्थ प्रकट करें हैं तब प्रफुल्लित अनुराग वारे कितनेक तो वा अर्थ में ही निमग्न होय रहें हैं ॥ कितनेक विनके अत्यन्त मनोहर तात्पर्य में ही निमग्न होय हैं कि वैसे उच्छलित भाग्य वारे कितनेक भक्त तो भाव कूं जानें हैं कितने तो अर्थ कूं जानें हैं किन्तु अमृत के समुद्रन की माधुरी कों जानें विजय कियो है ऐसे या श्री महाप्रभुजी ने प्रगट किये भाव सहित अनुकरण सहित वा वा अत्यन्त मनोहर अर्थ समूह में ही अत्यन्त निमग्न होय हैं और हर्ष भाव वारे कितनेक भक्तजन तो अंग अंग में उच्छलित रसात्मिक स्वरूपांतर कृष्ण के शील रूप पराक्रम प्रेम गुणादि वारी वा कथा को द्वेष करत कि भलो न मानत वा श्री महाप्रभुन के ही वा रसात्मिक स्वरूप में निमग्न होयवे सूं वैसे काम के करोड़न सौंदर्य दर्प के अभिमान समूह को चूर्ण करिवे वारे श्री महाप्रभुन के वैसे ही स्वरूप कूं कि प्रभुता कूं तथा अनंत सुधा के समुद्र जाने विजय किये हैं, ऐसी श्री महाप्रभुन की सर्वोपर लीला कूं, कि वा वा निर्दोष गुणन कूं कि वा महाप्रभुन के और हू वा वा गुण लीला चरित्रन कूं बहुत ही मानत ही तासूं वा महाप्रभुन की प्रसन्नता कौतिक हास्य वार्ता कूं ही निरन्तर ही भलो मांनत ही तासूं अन्य कूं तृण जैसे हू नहीं मानत और सदैव ही श्री महाप्रभुन के ही स्वरूप तथा मंदहास्य, हंसगति कि वाणी, लीला, शील चरित्र कि वेष तथा दृष्टि कि मन की क्रिया कि स्वाद अविलोकन को ही बारंबार ही निरन्तर ही स्तुति करत ॥५३॥ और हमारे प्रिय कूं निर्दोश स्वरूप मधुर है और चरित्र हू मधुर है अत्यन्त सुन्दर है मंद हास्य मधुर है अति अविलोकन हू मधुर है गति मधुर है बोलनो महा मधुर है ॥५४॥ कि या हमारे प्रिय को कौतुहल मधुर है विलास हू मधुर है स्थिति मधुर है तथा कृपा समूह है कथा हू अत्यन्त मधुर है या महाप्रभु के दास जन हू मधुर हैं तथा निवास स्थल हू सुन्दर मधुर है ॥ नर्म विलास मधुर है तथा गरम हू मधुर है कीर्ति हू मधुर है और श्रीमुख कमल हू मधुर है और या श्रीजी

के भ्रुअ मधुर हैं तथा केश मधुर हैं ।। कुंडल अत्यन्त मधुर हैं, और या हमारे प्यारे कूं अधर मधुर हैं, विलास नयन अत्यन्त मधुर हैं कटाक्ष समूह हू मधुर हैं, भाल अत्यन्त मधुर हैं और याके दोनों कर्ण मधुर हैं, तथा कुंम कुंम को तिलक हू मधुर है वाके भीतर विराजमान श्याम रेखा अत्यन्त ही मधुर है या प्रिय की दंत पंक्ति मधुर है दोनों कपोल मधुर हैं ।।५८।। और या प्रिय की नाशा हू मधुर है, प्रसर रही कंठ की शोभा हू मधुर है, तुलसी माला हू मधुर है ।। और या प्रिय की मनोहर भुज युगल हू मधुर हैं ।।५९।। कमल शंख आदि मुद्रान को धारण हू मधुर है, गुंजा माला अत्यन्त मधुर है, और हारन के किरण समूह मधुर हैं कि नाभि मंडल की सुन्दरता हू मधुर है तथा सुन्दर वस्त्र धोती उपरेणा की स्वेतता हू मधुर है कि चरण कमल की शोभा मधुर है तथा नखचन्द्र मधुर है कि रज हू मधुर है ।। चरण कमलन को जल हू मधुर है तथा समागम हू मधुर है ।। श्री गोकुलेश प्रभुन को सम्पूर्ण अंग ही मधुर है, अन्य को तो कछु हू मधुर नहीं है ।।६२।। वैसे अन्य कूं तो गमन कड़वो है कि मंदहास्य पिपरी जैसे कड़वो तीक्ष्ण है कि स्थिति मिरच रूप है कथा तो लोंन रूप है वैसे वा अन्य की सगरी चेष्टा ही नींब पत्र जैसे कड़वी है ।। रूप है सो विष है, अविलोकन है मृत्यु रूप है ।।६३।। वैसे अन्य को चरित्र कछु हू सुन्यो भयो प्रसरिके विष जैसे अत्यन्त वाधा करे है और परमप्रिय श्रीजी श्री महाप्रभुन कूं तो सगरो संबंधी पदार्थ हू चारों ओर अमृत जैसे महा मधुर है, ऐसे या प्रकार सूं वे भक्तजन भावना करें हैं वैसे कितनेक रसिक और भक्त तो प्रियतम के मनोहर गुणन सूं भर रहे कान में हू कि मन में हू वा कथा कूं धारण हू नहीं करें हैं ।। श्री महाप्रभुजी तो उच्छलित विशेष विलास सूं अमृत के समुद्र समूहन को विजय करिवे वारे अपने रसन सूं विनकूं अत्यन्त ही अधिक ही भरे हैं, वैसे भक्त तो श्री महाप्रभुन के मधुर स्वरूप में ही निमग्न हैं वैसे और तो मनोहर कुंडलन के अत्यन्त उच्छल रहे तांडव में निमग्न हैं या प्रकार निर्दोष विलास शोभावारो प्यारो रस सागर श्रीजी विविध कथान कूं कहेत अनेक स्वरूप वारे होय हैं ।।६७।। सो कहूं समय में स्तंभता कूं प्राप्त होवत कि कहुं समय में मनोहर रोम हर्ष कूं कि स्वरभंग कूं कि आर्द्र भाव कूं कि कंप समूह तथा आंसून कूं कि कबहू वर्ण भेद कि

निरदोष मनोहर सघन मूर्छा कूं धारण करत सुन्दरवर श्री महाप्रभुजी कबहू ऊंची स्वरा सूं कहें हैं कबहू धीरे कहें हैं कबहू मंद हास्य वारो श्रीमुखचंद्र जामें ऐसे कहें हैं कबहू गुप्त कबहू स्पष्ट थोरो कबहू विशेष हू कहें हैं ॥ कि कबहू तो मनोहर रस सूं मनोहर नयनवारी सुन्दरीन के वांच्छित मनोरथन कूं पूर्ण करवे अर्थ थोरी हू कथा कहें हैं और रस विशेष सूं कबहू तो विशेष हू कहें हैं ॥७०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां षष्टम् स्तरंग समाप्तम् ॥६॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ७

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ७ लिख्यते ॥

श्लोक -- **समयेत्र काश्वन सरोज चक्षुः प्रियसंप्रमोदिरस सार भूषित व्रज स्वेदमभ्य विकमाप्रुवंत्य टोक थया विलंब भर हेतु ना नयाः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि या समय में प्रिय कूं अत्यन्त आनंदित करवे वारे रस सार सूं शोभायमान कितनीक कमलनयनी सुन्दरी तो या कथा सूं विलम्ब समूह के कारण सूं खेद कूं ही प्राप्त होय हैं ॥१॥ हा हा यह रात्रि हूं नहीं होय है और कथा हू अब लों समाप्ति कूं नहीं प्राप्त होय है ॥ भक्त समूह हू अपने घर में नहीं जाय हैं, प्रभुन को मंदिर हू निर्जन नहीं होय है और प्रियतम हू अपने या आसन कूं नहिं छांड़ें हैं कि अपनी शैया कूं नहीं शोभायमान करें हैं, प्रियतम की वियोग अग्नि सूं प्रज्वलित अत्यंत दुःखित हम हा कहा करें ॥३॥ कहां जाय या विपदा में रस सागर प्रिय के बिना हमारो रक्षक को होय सके है हा हा प्रियतम के वियोग रूप जो बड़वाग्नि है सो हमारे रोंम रोम में उछल उछल के बल सूं हमकूं अर्बन करोड़न लाखन शत यज्ञन के दुःख समुद्रन में अद्भुत रीति सूं ही प्रवेश करावे है ॥५॥ हा हा आज तो यह कथा हू वेग नही समाप्त होय है और प्रियतम के वियोग ने किये मृगनयनीन के ताप कूं हू कोऊ जन नहीं जाने है ॥६॥ हा हा यदि

को उपकार सूं यह कथा समाप्त हू होयगी तो प्राणनाथ के बदन चन्द्र संबंधी दर्शनानंद के लोभी होयवे सूं यह भक्त समाज तो दूर नहीं होयगे ॥७॥ यदि यह प्रिय प्राणनाथ श्रीजी अपने मनमें हमारी तापाग्नि के ताप कूं स्वयं विचारके, वेग ही विनकूं कहें कि तुम यहां सू अब तुरंत जाओ तो हू वेगि नहीं जायेंगे ॥८॥ यदि वे भक्तजन कोऊ प्रकार सूं प्रियतम कूं छांड़िके अपने घरन के प्रति जाये तोहू या प्रियतम के निकट, गुणन सूं विशेष, कोउ और सुन्दरी हू प्रेम सूं पधारके हमारी बैरिन होयगी ॥९॥ अथवा यदि सोहू कोउ प्रकार सूं नहीं पधारे तो महाप्रभुन कूं परम प्यारी श्री पारवती बहूजी तो प्रिया शिरोमणी रसिकराय के पास पधारेंगी ही ॥१०॥ तब तो सो प्रियतम प्रबल ताप कूं भोग रही हम सबन के मनोरथन कूं कैसे पूरण करेंगे ॥११॥ यासूं हा, हा अब हम वेग ही वा प्रियतम के मिलाप अर्थ अत्यन्त योग्य कहा कृत्य करें ? ॥१२॥ या प्रकार सूं स्फुरित हो रही भावना समूह के परवस होयके वे सुन्दरीजन अपनी सखी कूं कहें हैं कि हे निर्दोष प्रिये सखी या विपदा में तुमही कोऊ उपाय कों भलीभांति करोगी जासूं यह करुणासागर प्यारो या कथा कूं वेगि ही समाप्त करिके यहां सूं सगरे लोकन कूं हू वेग ही विदा करिके अपने स्वरूप सूं अपनी शैया कूं ही शोभायमान करें तासूं सुन्दरवर हमारे मनोरथन कूं ही पूरण करें ॥१४॥ या प्रकार कही सो सखी चिन्ता समूह के सहित होयके विनकूं कहें हैं, हे प्रिया या सभा में प्रियतम तो सगरे जनन के समाज में विराजमान है यामें ही हों कहा करूं ? ॥१५॥ या स्थल में तो वैसो गुप्त रसवारो अपनो चित्त स्थित भाव कछु हू बड़े यत्न सूं कोउ सूं हू कह्यो नहीं जाय है ॥१६॥ तो हू हे सखी अब हों तिहारी प्रीति के अर्थ बड़े यत्न सूं हू कछु न कछु तो करूं हूं सो चतुरवर तिहारो प्यारो माने तो ॥१७॥ या प्रकार विनकी सखी कहेकर प्रिय के सनमुख जायकर स्पष्ट ही ठाड़ी होयके प्रकट किये अनिरवचनीय कोई खांसी कि छींक आदि सूं अपने प्रभुन कूं जतायके दृष्टि दाव्रा गुप्त सगरे कथन योग्य प्रकार कूं प्रिय कूं सुनावे है तब सर्वज्ञ समूहन सूं वन्दनीय हैं चरण कमल संबंधी रज जाकी, ऐसे सो प्रिय श्रीजी हू बिन हरिण लोचनीन के कथा समाप्ति संबंधी मनोरथन कूं अपने मन रूप कानन सूं सुनके सगरे जनन कूं अत्यन्त प्रिय हू या कथा कूं तिहारे या प्रकार के वचन सूं अब ही समाप्त करूं हूं या प्रकार सूं वा

सखी के प्रति अपने मधुर कटाक्षन सूं कहे हैं तब सो सखी हू मन रूप कानों सूं वा प्रिय के वैसे वचनन कूं सुनके प्रसन्न होय गयो है मुखचन्द्र जाको, ऐसी सो सखी वेग ही जायके महाप्रभु की प्रिया विन सुन्दरीन कूं कहें हैं कि तोकूं बहुत बधाई होय, मोकूं बहुत ही बधाई दै री ।।२२।। या तिहारे प्यारे ने अपने कटाक्षन सूं मोकूं कथा के समाप्त करिवे की प्रतीज्ञा हू कही है कि हों अबही समाप्त करूं हूं ऐसे वा सखी के अमृत कूं विजय करिवे वारे महामधुर वचन कूं कान रूप दोनान सूं पान करिके वे कोमलांगी प्रफुल्लित रोमावली वारी होयके अत्यन्त बढ़ि रहे उत्साह समूह सूं शोभायमान भीतर सम्बन्धी भाव सूं उदीप्त होयके कि महा प्रकाशमान सुन्दर होयके बड़े हर्ष कूं मद कूं प्राप्त होयके कि अपने कूं कि अपने को सर्वोपरि विराजमान ही जानें हैं और कितनेक भक्तजन तो या श्री प्राणनाथ श्री गोकुल मंगल प्रभु के वात्सल्य समूह कूं धारण करत ही, लोकन के हित की वांछा वारे वा प्रिय ने यह अत्यन्त दीर्घ कथा को विस्तार करिके जो अत्यंत मनोहर परमेश्वर श्रीजी के अपने श्रम को कारण है ।।२५।। हमारे हजारन प्राणन सूं प्यारे यह महा स्वतंत्र प्रिय या कथा कूं नहीं त्याग करें हैं सगरे भक्तन में अत्यन्त स्थिर हू या महाप्रभुन की कृपा हमारे में तो अणुमात्र ही नहीं है ।।२६।। और अमृत के समूह सूं वंदनीय है चरण कमल की रज जाकी, ऐसे सुगंधित मनोहर महाप्रभुन के मुखारविन्द में निवास कूं प्राप्त होयके यह कथा तो सौभाग्य शीतलता हर्ष के समुद्रन कूं निरन्तर प्राप्त होयके सौंदर्य सूं सर्वोपर विराजमान है सो या श्री मुखारविन्द को कैसे त्याग करें, सो या प्रकार सूं बढ्यो है अत्यन्त मनोहर अभिमान जाकूं, ऐसी यह कथा हा हां कछुक हू हमारे अनुकूल नहीं होय है ।।२८।। पूर्ण मनोरथ श्री महाप्रभुजी हू जामें अत्यन्त आशक्त ही होय रहे हैं और अत्यन्त उत्सुक भई हू हम तो या महाप्रभु कूं विज्ञापना करिवे में समर्थ नहीं होय है और वैसो अन्य कोउ नहीं है कि जो उच्छलित प्रीति वारो वेग ही कथा के विरामार्थ प्रभुन के आगे विज्ञापना करें कि जाके वचन कूं यह महाप्रभु हू मान लेवें ।।३०।। ऐसो चतुर कोऊ हमकूं मिले कि वेग ही हम वा कोऊ चतुर कूं प्राप्त होंय कि जो अत्यंत ही चतुर होय ।।३१।। और प्राणन सूं अधिक प्रियतम कृपासिंधो है, ईश्वरेश्वर है, शिरिष पुष्प सूं हू कोमल अंग वारे प्यारे तुम काके अर्थ किनके लिये इतनी कथा कूं विस्तार

करो हो, हे प्रियतम अपने श्रम कूं करिवे वारी या कथा कूं वेग ही सर्व प्रकार सूं ही त्याग करिये, हे प्रिय कबहू न दूर होयवे वारो ऐसो स्वभाव आपने अगीकार कियो है कि करुणा समुद्र जासूं प्रगट होय रहे अपने श्रम कूं हू नहीं जानो हो, अहो हे प्रभु अब हमारे मन सूं पूछो कि जे हमारे मन तिहारे श्रम सूं अत्यंत ही दुःखी होय रहे हैं ॥३३॥ हे प्राणपते, हे मारा प्रभो, यह हमारे मन, दीधा दुःख कूं विस्तार सूं तिहारे आगे विज्ञापना करेंगे, हे लघु प्रिये, अत्यंत कोमल चतुरवर अथवा तुम हमारे या मन में वेग ही प्रवेश करिके इच्छापूर्वक उछल रहे वा दुःख कूं स्वयं ही देखो ॥३४॥ हे महाप्रभो बढ़ि रह्यो यह तिहारो श्रम, हमारे चित्त में विस्तार वारो होयके जैसे जा जितने दुःख कूं निरन्तर बढ़ावतो भयो है अब कथा रूप प्रिया में निमग्न होय रहे तुम, वैसे वितने वा दुःख कूं नहीं जान सको हो, यामें यदि अन्य कोउ विज्ञापना हू करे तो हू वाकूं तुम मान हू नहीं सको हो तासूं हे प्रियतम वा अर्थ को ऐसे विज्ञापना करिवे लिये यहां को समर्थ होय सके है, यदि हे ईश्वरेश्वर यह कथा आपने अवश्य वांचनी है, तो हे कृपासिंधो बहुत कहिवे सूं ही कहा है इतने में ही आप या कथा को श्री नहीं करें हैं श्री रुक्मणीनंदन आप प्रसन्न होय या प्रकार विज्ञापना करें और जाकी ऐसी विज्ञापना कूं प्रिय चक्रवर्ती श्रीजी हू मान लेते भये हैं ॥३८॥ और उछल्लित होय रही उत्कंठा सूं प्रेरणा करी हम हू अवश्य करिवे योग्य कृत्य कूं प्रभुन के आगे विज्ञापना करें हैं, सो ऐसो श्रेष्ठ बुद्धि सूं विराजमान श्रेष्ठ चतुर पुरुष हू कोऊ नजर नहीं आवे है अथवा हम सदृश्य अपने जनन में सदैव ही कृपा प्रेम वात्सल्य के प्रवाहन कूं वर्षा करि रहे या गुणसागर श्री महाप्रभु कूं तो यामें थोरो सो हू दोष नहीं है ॥४०॥ किन्तु या महाप्रभु के श्री मुखकमल के भीतर विहार कर रही कि तब रमण काल में हू रस सूं सौभाग्यमान हरिणनयनी सुन्दरीन कूं कछुक प्राप्त होयवे वारे वा श्री मुखारविन्द सूं गिरि रहे उज्ज्वल अधरामृत को पान कर रही कि श्री दंतपंक्ति मंदहास्य तथा अधर की कांति संबंधी तरंगन की पंक्ति सूं पुष्ट है शोभा जाकी, ऐसी कथा हू या श्री मुखारविन्द कूं त्याग करिवे में समर्थ न होवत ही हमकूं अत्यन्त ही दुःखी करें है ॥४२॥ इत्यादि प्रकार सूं चित्त में बहुत प्रकार सूं विचार करत और कोऊ अपने जन के आगे हू कछुक ही नहीं जनावत ही कि महाप्रभुन में भक्ति वारेन कूं अत्यन्त दुर्लभ

कछुक विलक्षण दुःख कूं अत्यंत ही प्राप्त होवत कि मनमें स्थित हू प्रथम करे अर्थ को या प्रिय के आगे हू विज्ञापना करिवे कूं समर्थ न होवत ही बाहिर लोकन के महा समाज में विराजमान महाप्रतापी महाप्रभुन के आगे मन सूं कि विलक्षणता को प्राप्त भये मुख सूं कि वा प्रिय के श्रम सूं कातरता कूं प्राप्त होय रहे नयनन सूं विज्ञापना करत ही गूढ़ भाव वारे ये भक्तजन वा प्रिय के श्री मुखारविन्द सूं गिरि रहे रस के अर्बन प्रवाहन कूं चारों ओर पान करत ही ठहरे हैं ॥४६॥ वैसे और भक्त तो वा श्री मुखारविन्द सूं प्रगट होय रहे अमृत के समुद्र कूं विजय करवे वारो महा मधुर निरदोष मनोहर वैसी कथा कूं हू प्रेम आदर पूर्वक अत्यंत पान करत ही ॥४७॥ कि पद पद में ही वा करुणासिंधु श्री महाप्रभुन के बहुत प्रकार सूं स्फुरित होय रहे नाना प्रकार के वैसे स्वरूपन कूं आस्वादित करत कि अनुभव करत कि वा कथा के रंच विलंब में हू अत्यन्त व्याकुल होवत ॥४९॥ वा कथा कूं ही चाहना करत कि प्राणन सूं हू वाकूं अधिक मानत कि उदय होय रहे आनंद समूह कि उदय होय रहे आंसुन के समुद्रन ने दान किये निर्मल भाव वारे अत्यन्त प्रफुल्लित वैसे नयन कमलन सूं प्रकाशमान है मुखकमल जामें, प्रफुल्लित है हर्ष जामें, उछल्लित है विलास जामें, ऐसे या महाप्रभुन के अत्यन्त उछल रहे शोभायमान उत्साह के महा प्रवाहन कूं कि वा आकाश कूं अवलेहन करें हैं कि अत्यन्त पुष्ट वा महाप्रभुन के कथा रस के आवेश समूह कूं कि या प्रियतम के श्री मुखारविन्द सूं उदय भये उछल्लित प्रसाद वारे अत्यन्त मधुर वा वा पदन सूं अत्यंत परोस के दान किये अर्थन कूं कि भावन कूं कि विनने दान किये उछल्लित माधुर्य समूह कूं नम्र होय रहे मस्तक सूं धारण करि रहे ऐसे हृदय सूं ही रोम हर्ष पूर्वक धारण करत कि अनुभव करत ही और क्षण क्षण में ही कथा की समाप्ति संबंधी भय कूं प्राप्त होवत ही और वा कथा के बहुत बढ़ायवे के लिये ही बारंबार अनेक प्रकार के प्रश्न कूं करत ही वा महाप्रभुन की उपासना कूं करें हैं ॥५४॥ वैसे और भक्त तो वा प्रिय ने आदर प्रेम आदर पूर्वक वर्णन करी वा सुन्दर कथा कूं कि विनके निर्दोष पदार्थ भावन कूं प्रेम महा आदर पूर्वक कांनन सूं पान करिके चिरकाल सर्वात्म भाव सूं हृदय सूं हू आस्वादन करिके वा हृदय में धारण करिके अपने उदार चतुर संगीत के संग अमृत कूं हू विजय करिवे वारी वा कथा की चर्बणा कूं

कि आपस में सुनायवे सूं महा आस्वादन कूं रोम हर्ष सहित ही करें हैं ॥५६॥ वैसे और भक्त तो वा कथा तथा वाके अर्थ भावन कूं पान करिके यह महा गभीर गुण सागर श्री महाप्रभु जी हमारे ऊपर निरुपाधि सदैव उछल री अपनी करुणा सूं और मिस सूं ही हमारे में रस के समुद्रन कूं कि वैसे रसात्मक कार्य लीला पराक्रम तथा महात्म समूह कि शोभा समूह तथा वात्सल्यता जपादि कूं प्रकट करें हैं ॥५८॥ या प्रकार सूं अपने हृदय में जानत ही अपने मिलापी स्वजनों के आगे ही विन सूं सराहना किये भये ही चतुरता के सगरे प्रियवर श्रीजी ने धीरे धीरे कहे अर्थ समूह कूं हर्ष सहित या ऊपर कहे भाव में ही युक्ति पूर्वक लगावे हैं ॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि सर्वज्ञन के समुहन सूं वन्दनीय हैं चरण कमल संबंधी रज जाकी, ऐसे श्री महाप्रभुजी तब प्रिय के स्वरूप संबंधी उछल रहे निर्मल मनोहर अपार अत्यन्त गंभीर सुन्दरता रूप अमृत के महा समुद्रन को पान कर रहे बिन भक्तन के, औरन सूं बड़े यत्न सूं हू जानवे योग्य, मैंने यहां कहे कि न कहे सगरे हू भावन कूं भली प्रकार सूं ही जाने हैं और वैसी द्रष्टि मंद हास्य, भ्रुअ विलासादिकन सूं कि मनोहर हस्त कमलन सूं अनिरवचनीय यथायोग्य मनोहर रसात्मिक फलन कूं हू विन भक्तन के प्रति दान करें हैं याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी वा कथा कूं सभाप्त करिके प्रथम कहे वाके सगरे प्रसंग कूं हृदय में धारण करिके स्पष्ट मनोहर शोभा वारे श्रीजी यह प्रसंग अब मैनें वर्णन कियो है या प्रकार सूं कहे हैं और दूसरी रात्रि में कहिवे योग्य वा प्रसंग कूं निर्दोष करत गुण सागर श्री महाप्रभुजी यह प्रसंग कल बर्णन करेंगे या प्रकार सूं प्रकट आज्ञा करें हैं ॥६४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां सप्तम् स्तरंग समाप्तम् ॥७॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ८

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ८ लिख्यते ॥

श्लोक-- **अथास्विलो भक्त गणां प्रिय स्य तनोंति मोदाजय शब्द**
पुरं नमस्यतीशं प्रतदंडःबच्च प्रेम्णं समभ्युच्छल तानि ता तां ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि याके अनन्तर प्रिय के जे सगरे भक्त समूह हैं सो हर्ष सूं जय शब्द के प्रवाह कूं कहें हैं तथा अत्यन्त उच्छलित होय रहे प्रेम सूं प्रभुन के आगे दंडवत प्रणाम हू करें हैं ॥१॥ तथा श्री आपको बड़ो पुत्र श्री गोपालजी है सोहू नम्रता प्रेम सहित जय जयकार और दंडवत प्रणाम कूं करे है तब सुदामा नाम जो ब्राह्मण है जो जगत में ब्रह्म ऐसे प्रसिद्ध है सो इहां प्राणनाथ कूं प्रसन्न करत कि वैसे वैसे अत्यंत हंसावत ही गोपांचल के राजा आसकरण के किये सुन्दर या विष्णुपद के गान कूं ऊंची स्वरा सूं करे है ॥

''मोहनलाल के चरण कमल त्रिविध ताप हरी,
कहीय न जाय कोंण पुण्य की लिये सिरधारी ॥१॥
ब्रह्मादिक जाको पार न पावे, गोप वेष बिहारी,
आसकरण प्रभु पद पराग परम मंगलकारी ॥२॥

या प्रकार सूं या कीर्तन कूं भलीभांति सूं जानत ही सो हंसायवे वारो सुदामा ब्रह्मचारी प्रियतम महाप्रभुन कूं हंसायवे के लिये मोहनलाल के चरण कमल हैं सो तीनों ताप कूं हरिवे वारे हैं नहीं कह्यो जाय है कि काली ने का पुन्य सूं मस्तक में धारण किये हैं जाके पार कूं विधाता आदि हू नहि पाय सकें हैं ॥ सो गोप वेष सूं विहार करें हैं, आसकरण कहे है वा प्रभुन के चरण कमल की जो पराग है रज है सो परम मंगलकारी है ॥१०॥ राजा आसकरण ने किये या प्रकार के अर्थ वारे भाषामय कीर्तन कूं गान करत ही यामें छेले टुकमें प्रभु पद ऐसे कहके याके आगे पराग या पद कूं छांड़िके याके ठिकाने प्रयाग गोकुलेश ऐसे सदैव ही स्पष्ट गान करें हैं तब प्रिय अवश्य

ही अधिक हंसे हैं ।। सो जब श्री महाप्रभुजी अधिक हंसे हैं तब सगरे भक्त और सगरी मृगनयनी तथा सेवक दास कि और हू सगरे अत्यन्त ही बहुत प्रकार सूं ही स्पष्ट हंसे हैं तब ईश्वरेश्वर अत्यंत कौतिकी सुन्दरवर श्री महाप्रभुजी अत्यंत प्रसन्न होवत ही अत्यंत हंसत ही वा सुदामा ब्रह्मचारी कूं मंदहास्य सूं मनोहर वृज भाषा सूं अरे भेड, ऐसे कहे मति सदा पद पराग तूं जो कहे यामें भेड पद है याकूं अबे यह है और ऐसे कहे या पद कूं अर्थ या प्रकार सूं कहो यह अर्थ है और माने यह पद निषेध वारो है । और तूं या पद को अर्थ ऐसे कहे है और जो कहे या पद कूं अर्थ ऐसे कहो यह है ।। और सब प्रकट है या प्रकार श्री महाप्रभुन की अमृत कूं हू विजय करिवे वारी वाणी कूं पान करिके हू सो अत्यन्त धूर्त फेर हू वैसे कहे है के हे महाराज हे मेरे प्रभो हों कछू और कहूं हूं हों तो जो श्री आप कहो हो वैसे ही कहूं हूं तब नाच रही है शोभा जाकी अमृत के समुद्र कूं जो वर्षा करि रह्यो है ऐसे मंद मंद हंसि रहे वैसे महामधुर श्रीमुख पूर्णचंद्र सूं फेर ही आज्ञा करें हैं यदि तुम ऐसे ही कहो हो तो फिर ही कहो यह सुनिके तब फेर हू सोभाग्य वारेन में श्रेष्ठ प्रकट ही पद प्रयाग ऐसे ही कहे है ऐसे वाके मुख सूं सुनिके प्राणनाथजी हंसत हंसत ही अपने भाग्यवारे भक्तन के प्रति कहें हैं कि तुम हू सुनो सुनो ऐसे कहेत ही प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द सूं विनके संग अत्यंत ही हंसे है ।।२०।। तब कौतूहल रस में आवेश वारे श्री महाप्रभुजी फेर ही आग्रह सूं ही वासूं वैसे कहेवावें हैं ।। और सो भाग्यवारेन में श्रेष्ठ धूर्त अत्यंत विदूषक सुदामा ब्रह्मचारी रसिकन पे के चक्रवर्तीन सूं अर्चनीय हैं चरणकमल जाके, ऐसे श्री महाप्रभुन कूं अधिक हास्य सूं शोभायमान मुखचंद्र वारो करत ही फेर हू वैसे पद प्रयाग या प्रकार सूं ही कहे है ।।२२।। तब श्री महाप्रभुजी हू प्रायः आज्ञा करें हैं कि कोउ पश्चिम देश को मूढ़ बुद्धि मनुष्य गुरु सूं वर्ण समान्याय कि वर्णदीपीका कूं पढ़तो हतो तब गुरु ने कह्यो कि ते वर्गाः पंचपंच या वाक्य कूं कहिवे में समर्थ न होयके अपने देश भाषा के अनुसार सो मंद बुद्धि तेवगो पंज पंज ऐसे कहे तब सो गुरु तो याकूं शिक्षा करत ते वर्गा पंच पंच ऐसे कहे या प्रकार सूं ही मधुर अक्षरन सूं कहे हैं तब सो मूढ हू वैसे कहिवे में समर्थ न होयके अपनी देश भाषा के अनुसार ।।२६।।

ते वर्गा पंज पंज ऐसे ही कहेत ही कहे है कि गुरु तुम जो कहो हो कि ते वर्गा पंज पंज मै हू ते वर्गा पंज पंज कहूं हूं ते वर्गाः षट् षट् तो कबहु नहीं कहूं हूं तुम काहे कूं क्रोध करो हो सो कारण रंच हू नहीं जानूं हूं ऐसे वाके कहवे कूं कहेकर हमारे श्री महाप्रभुजी विनके संग अत्यन्त हू हंसें हैं ॥२९॥ श्री महाप्रभुजी के हंसत ही सगरे भक्त और सगरी मृगनयनी वैसे और हू सगरे उछल्लित हर्ष वारे होयके अत्यन्त ही हंसे हैं ॥३०॥ सो प्राणनाथ को जो हास्य समय है सो अत्यन्त ही मनोहर है विन भक्तन की कि बिन सुन्दरीन की कि भट्टजी कहे हैं सो मेरी हू कि सबन की हू वैसी महा मधुर प्रसन्नता और भाव सूं प्रकाशमान प्राणनाथ श्रीजी में ही विनकी अनन्यता के विलास और वे शोभा सो अत्यन्त बढ्यो सौंदर्य जिनके चित्त में निवास करे है, वे सर्वोपर विराजमान हैं विनके हास्य कूं सदैव ही सब ओर में हू सर्व प्रकार सूं ही हों वांछा करूं हूं ॥३३॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि या प्रकार श्री गोकुलेश प्रभुन कों जो त्रिलोकी कूं पवित्र करिवे वारो कथा रूप अमृत कूं वर्षा करनो है सो संक्षेप सूं ही मैंने कह्यो है ॥३४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां अष्टम् स्तरंग समाप्तम् ॥८॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ९

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ९ लिख्यते ॥

श्लोक -- **कदाचितु प्रियः श्रीमदाचार्यैर्विहतेष्य्**

हो ग्रंगेषुसल्प पयेषु गूढलावार्थशालिषुः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि श्री आचार्यजी ने किये जे थोरे श्लोक तथा गूढ़ विशेष अर्थ वारे ग्रंथ हैं, कबहू तो प्रिय सुन्दरवर ईश्वरेश्वर श्रीजी विनमें टीका कूं करत ही विराजान होय हैं तामें श्रीकृष्णचंद्र के कि श्री आचार्यजी के कि तथा श्री गोस्वामीजी के वैसे तत्व कूं कि स्वरूप

गुण भाव भक्ति वैसी लीला कूं कि मुख्य भक्तन के प्रेम कूं के प्रकाशमान पुष्टिमार्ग तथा मर्यादा मार्ग कि वैसे पुष्टि पुष्टि मार्ग कूं कि विनके वा वा रहस्य कूं तथा वा वा फल की प्राप्ति के प्रकारन कूं बिन टीकान में प्रगट करत या मिस सूं सबन सूं सर्वोपर उछल्लित होय रहे अपने महा रसमय पुष्टि मार्ग के तथा अपने गुण समूह के कि अपनी भक्ति समूह के कि अपने भक्त समूह के तथा अनेक प्रकारन के प्रेम के वैसे और हू अपने वा वा रहस्य के अपने जीवन में प्रगट करिवे लिये ही कृपासागर श्रीजी या ग्रंथन की टीकान कूं ही करते भये हैं ॥७॥ तथा श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध में वेणु गीत के मनोहर शोभायमान --

धन्यास्तुमठमतयोपि हिरात्यरुतायानंद नंदन मुपात्त विचित्रवेषं
आकर्ण्य वेणुं रजितं सह कृज्ञासारः पुजादधु विरचितां प्रणयाव लोकैः ॥

या श्लोक में वैसे श्री आचार्यजी ने हू व्याख्यान कियो है और श्री गोस्वामीजी ने हू सर्व प्रकार सूं व्याख्यान कियो है या श्लोक पर पुष्टि तत्व के अनुसार प्रथम स्वंय टीका करते भये हैं ॥१०॥ या श्लोक में गुणसागर श्रीजी प्रभु के वैसे उच्छलित रसात्मक स्वरूप ने अपने बल सूं बिना यत्न किये हिरणीन के हू मधुर परम आश्चर्यमय नासिका भाव सूं ही प्रगट कर कहते भये हैं या प्रकार के व्याख्यान सूं श्रीआचार्यजी तथा श्री गोस्वामीजी ज्ञान सूं अपने ज्ञान सूं अपने ज्ञान में जो अत्यन्त विशेषता है वाकूं सुन्दरवर प्रकट करते भये हैं नहीं तो विनके व्याख्यान किये श्लोक कूं पुरुषोत्तम मुगुटमणि श्रीजी स्वयं स्वतंत्रता सूं काहे कूं प्रकारांतर सूं व्याख्यान करते, कछुक और हू है सो कमलनयन सुन्दर श्रीजी अन्य सबन के स्वरूप बल सूं सर्वोपर शोभायमान होय रहे अपने स्वरूप के बल कूं अत्यन्त विशेष ही सूचना करते भये हैं ॥१५॥ प्राणनाथ करुणासागर श्री महाप्रभुजी वा टीका में जा जा अपने रहस्य कूं प्रगट करते भये हैं सो श्री महाप्रभुन के कृपापात्र स्वकीय जनन ने वा व्याख्या कूं देखिके ही कि वाकूं जानवे वारे महाकृपापात्र के मुख सूं सो सो रहस्य जानिवे योग्य हैं और व्याख्या कूं हों तो अब यहां विस्तार के भय सूं कि करुणासागर श्री महाप्रभुजी ने अपने जनन कूं सुखदान करत जा मधुर प्रकार सूं कहते भये हैं वैसे कहिवे में शक्ति के न होयवे

सूं नहीं कहूं हूं ॥१९॥ और श्रीमद्भागवत में स्थित दशम स्कंध के मनोहर गोपिका गीत नाम अध्याय में शोभायमान श्लोक

''मणिधरकवचिदाण्यन्गा मालयादपित गंध तुलस्याः

प्रणजिनोऽतु चरस्यकदासे प्रक्षिप भुजम गायत पत्रः ॥१॥

कवणित् वेणुरव चितचितां कृज्ञमन्व सत कृज्ञ गृहिज्यः

गुण गुणार्ण मनुगत्य हरिण्यो गोपिकाइव विमुत्क गृहसाः ॥२॥

या युगल में हू श्री आचार्यजी ने हू व्याख्यान कियो है कि श्री गोस्वामीजी ने हू सर्व प्रकार सूं व्याख्यान कियो है तामें पुष्टि मार्ग के अनुसार स्वतंत्र टीका कूं करते भये हैं और श्रीमद् गोस्वामीजी ने रचना किये श्री वल्लभाष्टक की टीका कूं हू भगवान श्रीजी करते भये हैं वामें व्याख्यान कूं करत कृपासागर श्रीजी व्याख्यान के मिस सूं अन्य आचार्यन कूं वैसे वैसे स्थल में स्थित भये महाप्रभुन के कृपापात्र भक्त जा प्रकार सूं ता प्रकार सूं जो कछु सामग्री हू अत्यंत प्रिय महाप्रभुन के प्रति निवेदन करिवे की इच्छा हू करतो भयो है वा सामग्री कूं हू हम अपने मार्ग के श्री आचार्यजी के गौरव सूं मनोहर हास्य वारे श्री मुख कमल में धारण करें हैं कि साक्षात् अंगीकार हू या प्रकार अपने भक्ति मार्ग संबंधी श्री आचार्यजी के परम अद्भुत अतुल बल कूं हू सुन्दरवर श्री महाप्रभुजी सूचना करते भये हैं ॥२५॥ और पेंतीस श्लोक वारो सर्वोत्तम नाम ग्रंथ हू या श्री गोस्वामीजी ने ही रच्यो है ॥ वाके हू व्याख्यान कूं श्री महाप्रभुजी करते भये हैं ॥ वामें रसिकराय श्रीजी श्री आचार्यजी के कृष्णमुख भाव कूं वैसे और हू वा वा अलौकिक आनंदमय भाव कूं कहत वा मिस सूं अपने मुखरूपता कूं स्पष्ट ही करते भये हैं कि व्याख्यान के मिस सूं स्वमार्गीय श्री आचार्यजी के वैसे गुण धर्म तथा सर्वोपर बल वारे स्वरूप कूं हू सूचना करते भये हैं ॥२८॥ तथा गुणसागर सर्वश्रेष्ठ सर्व मूल सर्व सुन्दर शिरोमणि कि सर्व महिमा गुरु भाव मधुरता के आधार या अपने प्रभुन की जे भक्तजन या प्रभुन की कृपा सूं प्राप्त भये सर्व प्रकार सूं उछल रहे सर्वोपर विराजमान सर्वतः सुन्दर अत्यंत बल वारे भाव सूं सेवन करें हैं यासूं अन्य कूं तृण रूप हू नहिं गिने हैं वे भक्तजन पारस सुधासिंधु के पान सूं ही ईश्वरन कूं हू दुर्लभ परम कृतार्थता कूं ही प्राप्त होय हैं ॥ और या सर्वोत्तमजी के **कृष्णा धरामृता**

स्वाद सिद्धरत्न न संशयः या आधे श्लोक पर व्याख्या कूं करत प्रिय श्री महाप्रभुजी अपने भक्ति मार्ग संबंधी श्री आचार्यजी के पाठ किये नामन सूं विना यत्न ही अमृत के परार्द्ध समुद्रन कूं विजय करिवे वारे अपने महामधुर अधरादि के सुन्दर आस्वाद की सिद्धी की हू सूचना करते भये हैं याके अनन्तर करुणा सागर सुन्दर श्रीजी श्री आचार्यजी कृत्य सन्यास निर्णय नाम ग्रंथवर हू व्याख्यान करते भये हैं ॥ वामें बहुत प्रकार सूं ही प्रवाह मर्यादा मार्गीय संन्यास कूं निषेध करते भये हैं और पुष्टिमार्गीय अपने कृपापात्र जीवन कूं अपने चरणकमलन की प्राप्ति अर्थ पुष्टिमार्ग में योग्य जो सन्यास है जो भाव की अत्यन्त बुद्दि में अपने वियोग रस के अनुभव अर्थ वाके विरोधी सर्व पदार्थन कूं सदा त्याग रूप अत्यंत गूढ़ है सो आचार्यजी की कृपा सूं प्रकट भये महाप्रभुन के प्रेम सूं ही सिद्ध होयवे वारे वा संन्यास कूं ही विन कृपापात्रन में सर्व प्रकार सूं कर्तव्य भाव सूं सूचना करते भये हैं ॥३०॥ तामें बंधु आदिकन के करिवे योग्य प्रतिबंध के निवारण अर्थ ही वो रचना कूं आज्ञा करते भये हैं ॥ वास्तव में और प्रकार सूं वा वेष रचना की आवश्यकता नहीं है ॥ यह अभिप्राय प्रगट करते भये हैं ॥२१॥ और श्रीमद वल्लभाचार्यजी ने अपने देह त्याग समे में जो अंतःकरण प्रबोध नाम ग्रंथ है वाके ऊपर हू शोभायमान टीका कूं प्रगट करते भये हैं ॥३३॥ वामें ईश्वरेश्वर करुणासागर श्रीजी अपने प्रियतम की इच्छा के निश्चय होयवे में तासूं प्रगट भये वियोग भाव के बढ़िवे पर वा प्रियतम के संयोग रस की प्राप्ति के अर्थ वैसे विरही भक्तन कूं देह त्याग करनो अत्यंत हितकारी है वामें विलंब करनो उचित नहीं है वामें वा प्रियतम की अन्य आज्ञा संबंधी कार्य के विचार करिवे सूं हू विलंब तो पुष्टि मार्ग संबंधी परम स्वादु श्रेष्ठ फल के लाल कूं नाश करवे वारो है ॥३६॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि जब श्री महाप्रभुजी ग्रंथ रचना कूं करते तब सगरे मनोहर अर्थ तथा भाव हू अत्यन्त प्रेम सूं प्रकाशमान होवत ही प्रेम के भार सूं हाथन कूं बांधके सदैव ही आगे आयके सेवा के अर्थ विराजमान होते तब करुणासिंधु श्री महाप्रभुजी वा अर्थ तथा भावन में कितनेक अर्थ तथा भावन कूं अंगीकार करिके जो महात्मा भाग्य वारे शब्दन में प्रवेश करावते भये हैं तब वा श्री महाप्रभुजी ने अपनी कृपा सूं अपने पास बैठायो कृपापात्र सेवक है सो श्री आपकी आज्ञा सूं प्रेम नम्रता के सहित ही विन शब्दन कूं लिखतो भयो है ॥४१॥ कहु समय

में तो कितनेक भाव तथा सुन्दर अर्थ हू और शब्द हू नम्रता सहित धीरे धीरे गोवर्धन भट्ट के आगे हू बारंबार विज्ञापना करते भये हैं कि महाप्रभुन सूं हमकूं अंगीकार कराओ सो गोवर्धन भट्टजी तो बारंबार विनकूं अविज्ञा करिके दूर करिके हू विनके विशेष उत्साह कूं तथा दीनता कूं हू देखिकें उदय भई कृपा सूं विनके लिये या महाप्रभुन के आगे विज्ञापना करतो भयो है ॥ स्वतंत्र इच्छा वारे श्री महाप्रभुजी विन शब्दन में कोउ कूं अंगीकार करिके वा गोवर्धन भट्ट कूं आज्ञा करते भये हैं कि शब्द कूं हू लिखो ॥४५॥ वैसे परम बुद्धिमान चतुरवर श्रीजी वा गोवर्द्धन भट्ट कूं समाधान करिके और शब्दन की वामें वैसी अयोग्यता कूं स्पष्ट करत ही और शब्दन कूं दूर ही कर देते भये हैं ॥४६॥ याके अनन्तर भगवान कृपा सागर श्री महाप्रभुजी श्री आचार्यजी कृत भक्तिवर्द्धनी नाम ग्रंथ पर व्याख्या कूं प्रकट करते भये हैं ॥४७॥ वा ग्रंथ में स्नेह आशक्ति आदि कूं प्रगट करत हते अपने जीवन में कृपा समूह या मिस कर अपनी रस रूप भक्ति के हू उपाय कूं आज्ञा करते भये हैं ॥४८॥ याके अनन्तर करुणा सूं कोमल मन वारे प्राणनाथ श्रीजी वा श्री आचार्यजी कृत्य भक्ति सिद्धांत रहस्य नाम ग्रंथ कूं हू व्याख्यान करते भये हैं वामें प्रियवर श्री महाप्रभुजी अपने जीवन के आगे यह सूचना करते भये हैं ॥ **मेरे में असमर्पित कछु हू न लेनो किन्तु मेरे आगे सर्व सामग्री समर्पि के ही लेनी नहीं तो अनर्थ होय है** यह आज्ञा करते भये हैं, याके अनन्तर श्रीजी आचार्यजी कृत्य पुष्टि प्रवाह मर्यादा नाम ग्रंथ कूं व्याख्यान करते भये हैं ॥ वामें पुष्टि प्रवाह मर्यादा कूं प्रगट करते ही **हों तो पुष्टिमार्ग संबंधी श्रृंगार रस रूप सर्वोपर विराजमान भक्ति सूं ही प्राप्त होवुं अन्य कोउ प्रकार सूं नहीं प्राप्त होवूं हूं** यह श्री गोकुलोत्सव श्रीजी कृपा समूह सूं अपने जीवन में प्रकट करते भये हैं ॥५३॥ कि या टीकान के चिन्तन सूं कि श्रवण सूं हू कि यामें कथन किये वैसे आचार सूं मेरे भक्तन की कृपा के समूह सूं कि मेरे भक्तन के निरन्तर संग सूं तथा विनके सेवन सूं हू कि या श्री आचार्य चरणन के निष्कपट आश्रय सूं तथा विनकी शरणागति समूह सूं कि विनके बल सूं तथा विनकी कृपा समूह सूं या टीकान में कहे जे वे वे भाव हैं सो मेरी कृपा सूं वा मेरे जीवन में वेग ही प्रगट होय हैं कि मेरे भाग्य योग्य विनकूं रसात्मिक अलौकिक देह हू प्रकट होय है तथा वैसे रस रूप अवस्था बुद्दि सुन्दरता विलास चतुरता हू प्रकट होय है ॥५८॥

और सगरे सिद्ध हैं पुरुषार्थ जिनके ऐसे रसात्मक मेर भक्तन के मंडल में हू वाकूं वेग ही प्रवेश होय है ॥ तथा वामें मनोहर स्थिति हू होय है ॥५९॥ तथा मेरे संबंध रूप वैसे मनोहर फलन कूं हू सदा भोग होय है कि विनसूं गिरनो नहीं होय है ॥६०॥ या प्रियतम की यह वाणी या प्रकार सूं मैंने निरूपण करी है स्वतंत्र होयवे सूं उदार बुद्धि श्रीजी या मर्यादा कूं उल्लंघन करिके हू ऊपर कहे वा वा फल कूं विन न कहे हू फल कूं देवें हैं तथा अन्य प्रकार सूं हू देवें हैं और पीछे कही तीन टीका कूं जब श्रीजी करते भये हैं तब आपको जो भाग्यवान खंभालिया ग्राम वासी बुद्धिमान कल्याण भट्ट ही दीनता प्रेम सूं ही लिखतो भयो है ॥६२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां नवम् स्तरंग समाप्तम् ॥९॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- १०

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १० लिख्यते ॥

श्लोक -- **सप्तत्रिशन्मिता नीशः श्लोकाश्चैव विनिर्म मे ।**
विधातु मंगलं स्वेषां ततङ्क व प्रकाशनात् ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि यह श्री महाप्रभुजी वा वा भाव के प्रकाश करवे सूं अपने जीवन के मंगल करवे कूं सेंतीस श्लोकन कूं रचना करते भये हैं ॥१॥ हे तदीया, कि वा श्री महाप्रभुन के कृपापात्र भक्तवर वा वा अनुभाव के तरंग वारे तथा अमृत कूं हू जिनने विजय कियो है ऐसे महारसमय वा श्लोकन कूं हों पान करावुं हूं, तुम पान करिये ॥२॥

श्लोक -- **यद्दैन्यं त्वन्कृपा हेतुर्न तद्रस्ति ममाण्वपि ।**
तां कृपा करु राधेश, ययात दैन्य माप्तुयाम् ॥३॥

हे राधेश ! जो दीनता तिहारी कृपा में कारण है सो तो मेरे में अणुमात्र हू नहीं है ॥ जासूं वा दीनता कूं हौं प्राप्त होवुं ॥ श्री आप कृपा कों ही करोगे ॥३॥

श्लोक -- **सर्वेषां जीवीनं लोके दृष्टं सर्वार्थ साधकम् ।**

ग्लान्येक फल कं, जात मधुना मम जीवितंगत् ।।४।।

लोक में सबकूं जीवन सर्व अर्थ कूं सिद्ध करवे वारो देख्यो है ।। अब मेरो जीवन तो एक दुःख फल वारो ही भयो है ।।४।।

श्लोक -- **कर्तुं पुनरथाम् अन्यथा कर्तुं श्रीहरी ।**

सामर्था यन्मयो दृष्टं त्वमेववा तो न संशयः ।।५।।

कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं ईश्वर में जो सामर्थ्य मैंने देख्यो है यासूं सो तो तु मेरे में ही फूल्यो ही यामें संशय नहीं है ।।५।।

श्लोक -- **तं न पश्यामि यस्याग्रे वार्ता स्वस्य मनोगतां ।**

उकत्वा तदुत्तरं लब्धा मनो विश्रामये क्षणं ।।६।।

वाकूं नहीं देखूं हूं कि जाके आगे अपने मन की बात कूं कहेकर वाको उत्तर पायके क्षण एक तो मन कूं विश्राम करावुं ।।६।।

श्लोक -- **अतीय नीचामत्प्राणां मुर्खा अपि गतित्रयाः ।**

स्वास्थित्य् अयोग्य कालेपि यत स्थिष्टंति सांप्रतं ।।७।।

मेरे प्राण तो अत्यन्त ही नीच हैं मूर्ख बैं, निर्लज्ज हू हैं ।। जासूं अब अपनी स्थिति के अयोग्य समय में हू स्थिति होय रहे हैं ।।७।।

श्लोक -- **शास्त्रं नियामकं तावद्याव त्पूर्ण कृपान्नुते ।**

कृपया तेसु पूर्णस्य नैवकोपि नियामकम् ।।८।।

शास्त्र तो तोलों हूं नियामक होय हैं जो लों तिहारी कृपा न होय ।। तिहारी कृपा सूं जो पूर्ण है वा पर कोऊ हू नियामक नहीं है ।।८।।

श्लोक -- **सुभगारूप जानंति प्रिय सौभाग्य जं सुखम् ।**

तद्दीना या स्तदीयेति प्रसिद्धः शरणं सखि ।।९।।

हे सखी सौभाग्यवारी ही प्रियतम के सौभाग्य संबंधी सुख कूं जानें है ।। वा सौभाग्य सूं रहित की तो यह वाकी है इतनी प्रसिद्ध ही शरण है कि आश्रय है ।।९।।

श्लोक -- **प्रिय संगम राहित्याद् व्यर्था छाया सर्वे मनोरथाः ।**

निरपत्र पता सिद्धयै जीवामि सखि सांप्रतं ।।१०।।

प्रियतम के संगम न होयवे सूं सगरे मनोरथ ही व्यर्थ हैं ।। सखी अब तो निर्लज्जता की सिद्धी लीये हों जीवुं हूं ।।

श्लोक -- **न लब्ध स्तादृशः कोपियस्याग्रे स्वमनोगतां ।**
वार्ता मुक्त्वास्वमात्मानं क्षणं विश्रामयाम्यहं ॥११॥

वैसो कोउ नहीं मिल्यो है कि जाके आगे अपने मन की वार्ता कूं सुनायके क्षण एक तो अपने कूं सुखी करूं ॥११॥

श्लोक -- **श्रीमुखालोक नेतस्य प्रियस्य च वहिर्गतौ ।**
पक्ष्मापकारो पकारौ निर्णतु नैवश कतृमः ॥१२॥

श्रीमुख के दर्शन में जे पल के अंतराय करिवे सूं जे अपकार है तथा भीतर स्थित प्रियतम के बाहिर पधारवे में वाधा करिवे सूं जे उपकार करे है वाको निर्णय करिवे में हम समर्थ नहीं होय हैं ॥१२॥

श्लोक -- **अधश्वो वा परस्वो वा कदाचित कृपयिष्यति ।**
नाथ इत्याशया सर्वगत जन्म करोमि किम् ॥१३॥

आज कल कि परसों कबहू तो प्रभु कृपा करेंगे या आशा सूं ही सगरो जन्म गयो कहा करूं ?॥१३॥

श्लोक -- **तथापि स्वत्कृपाकांक्षां मनोमे निपत्रपं ।**
कंपा हेतुं विनिश्चत्य करोति ति न वेध्यंहं ॥१४॥

तोहू वाकी कृपा की वांछा कूं निर्ल्लज मेरो मन को कारण कूं निश्चय करिके करे हैं यह हों नहीं जानूं हूं ॥१४॥

श्लोक -- **स्वभावतः सदा मेघः सर्वेषां जिवन प्रदाः ।**
जानेतस्यैव दौर्भाग्यं सोऽ्पियत्त मुपेक्ष ते ॥१५॥

मेघ तो स्वभाव सूं ही सबकूं जीवन रूप जल देवे हैं । सो स्वभाव को दयालु हू जाके ऊपर अपेक्षा करे है तासूं वाको ही दुर्भाग्य है हों यह जानूं हूं ॥१५॥

श्लोक -- **तदीयत्वमपि विज्ञात्वां मयि कालादयः प्रभो ।**
प्रभवंति ततो मन्ये, त्व-त्कृपाशून्यतामपि ॥१६॥

हे प्रभो यह तिहारी ही है यह जानके हू मेरे में जो काल कर्मादि पराभव करें हैं तासूं हों मानूं हूं कि मेरे में तिहारी कृपा नहीं है ॥

श्लोक -- **ये तेषांनह मेवास्मि सर्वस्वम् ईति सुंदर ।**
जानात् अस्माकम् ज्ञानेप्यतः कर्ता स्वतोःखिलं ॥१७॥

यद्यपि हम नहीं हू जानें, तोहू इनको सर्वस्व तो मैं ही हूं ।। यह सुन्दरवर प्रभु जानें हैं तासूं स्वतः हमारो सब कछु हू करेगो ।।१७।।

श्लोक -- **विज्ञप्तौ वा अपराधे वा पाखंडे वा मदुक्यतः ।**

पर्यमस्यंति कुत्रेति न जानेहं विमूढाधीः ।।१८।।

विज्ञापना में कि अपराध में कि पाखंडमें कि कामें मेरे वचन फलेंगे यह मूढ़बुद्धि हों नहीं जानूं हूं ।।१८।।

श्लोक -- **दुर्मगासि तथापि त्वंमात्यज स्व प्रियांतिकं ।**

कदाचित् कृपया पश्येत् प्रियसत्य द्राग्यः योग्यतः ।।१९।।

यद्यपि दुर्भगा है तोहू अपने प्रिय के निकट रहिवे कूं मत छांड़ियो ।। कबहू तो तिहारे भाग्यन के संबंध तेरी ओर देखेंगे ।।१९।।

श्लोक -- **विरहेणांऽनिल त्यामांस्मरे श्वेत्प्राणवल्लभः ।**

तदाति द्विगुणं दुःखं सोढुनै वालि पारये ।।२०।।

विरह सूं अत्यन्त होय रही मोकूं यदि प्राणप्रिय स्मरण करें तब तो अत्यन्त द्वि-गुने दुःख कूं सहन में हे सखि हों समर्थ नहीं होय सकूं हूं ।।२०।।

श्लोक -- **राजा योग्ये तदांकाक्षा दंडा प्राप्त्ये भवेत् ।**

त्वत्सेवायांमहं नाहक तद्वाप दशामिमाम् ।।२१।।

राज्य के योग्य होय तो वाकी अभिलाखा करे सो जैसे दंड प्राप्ति योग्य होय है ।। हों हू वैसे तिहारी सेवा में योग्य न होयके वैसी या दशा कूं प्राप्त भयो हूं ।।२१।।

श्लोक -- **स्वीयं कृतांगसं चेत्यं दुरस्थं कुरुषे यदि ।**

ईतो परोधिको दंडस्त्वदीयस्थ न विद्यते ।।२२।।

अपराधी अपने जन कूं यदि तुम दूर कर देवो तो तिहारे जन कों यासूं अधिक और दंड नहीं है ।।२२।।

श्लोक -- **वियोगी वाध्यते तां वधा वध्यै हृदय ते स्थितिः ।**

यदा बहिस्त दानेति विचित्रेयं स्थितिः सखि ।।२३।।

वियोग तो तोलों ही बाधा करे है कि जालों तिहारी हृदय में स्थिति होय है ।। जब बाहिर विराजो हो तब वियोग नहीं होय है ।। सखी यह विचित्र मर्यादा है कि रचना है ।।२३।।

श्लोक -- **भूर्जत्व गिव मददोषा निसरत्येव सर्वतः ।**
तथैवानन्य गतिके त्वत्क्षमेति न मे भयं ॥२४॥

भोजपत्र के त्वचा जैसे ही चारों ओर सूं मेरे तो दोष ही निकरे है ॥ तथा जाको और आश्रय न होय ऐसे अनन्य गति निः साधंन में ही तिहारी क्षमा होय है या विचार सूं मोकूं भय नहीं है ॥ जासूं कि मैं हू निःसाधन हूं यह भाव है ॥२४॥

श्लोक -- **बलिष्टा अपि मम दोषाः त्वत्क्षमाग्रेति दुर्बलाः ।**
तस्या ईश्वर धर्म त्वा, दोषाणां जीवं धर्मतः ॥२५॥

मेरे दोष प्रबल हू हैं तोहू तिहारी क्षमा के आगे तो अत्यन्त दुर्बल ही हैं ॥ जासूं क्षमा है सो प्रभुन को धर्म है और दोष है सो जीव को धर्म है ॥२५॥

श्लोक -- **मत्प्राणानां स्वतो लज्जानैवास्तिं परतोपि ।**
य प्राप्याप्य वस्थां नो यांति ईहांमुत्र चा गर्हितामें ॥२६॥

मेरे प्राणन कूं तो स्वतः हू लाज नहीं है ॥ अन्य सूं हू लाज नहीं है जासूं या लोक तथा परलोक में निंदित अवस्था कूं पायके हू छांड़ो नहीं जाय है ॥२६॥

श्लोक -- **त्व दर्शन विहीनस्य त्वदीयत्तस्य तु जीवीतं ।**
व्यर्थमेव यथा नाथ दुर्मगायाः नववयं ॥२७॥

हे नाथ तिहारे दर्शन सूं रहित तिहारे ही जन कूं जीवन तो दुर्भगा स्त्री कूं नवीन अवस्था जैसे व्यर्थ है ॥ वैसे ही व्यर्थ है ॥२७॥

श्लोक -- **गतः सकालो यत्रासीत्सु दुर्ल्लभ कृपामयि ।**
इदानिमिदशः कालो यत्वं दग्गोचरोपिनः ॥२८॥

हे अत्यन्त दुर्ल्लभ प्रिय सो काल गयो जामें आपकी मेरे में कृपा हती अब तो ऐसो काल है कि तो सदस सरीखे कूं हूं दर्शन नहीं होय है ॥२८॥

श्लोक -- **त्वदीयानां सुखं दुःखं न लोक सदृशं भवेत् ।**
तत्सेवायां सुख सर्वनो चेतस्य विपर्ययः ॥२९॥

तिहारे ही जे जन हैं विन कूं दुःख कि सुख लोक तुल्य नहीं होय है ॥ किन्तु तिहारी सेवा में विनकूं सुख होय है ॥ नहीं तो दुःख ही होय है ॥२९॥

श्लोक -- **मत्वा स्वकीयतां नाथं रोषेण कृपया तव ।**

ताडनं लालनं चापि परमानंदं मम ॥३०॥

हे प्रभो ! आपुनो ही जानिके कोप सूं कि कृपा सूं कि मेरो ताड़न करो कि लालन करो सो मोकूं परमानंद दायक होय है ॥३०॥

श्लोक -- **त्वद्वियुक्तस्य जीवस्य त्मदीयस्यापि नित्यता ।**

संगं विना न चै-वास्तु विज्ञापन मिदं मम् ॥३१॥

हे प्रभो ! तिहारे विप्रयोग वारे तिहारे ही जन कूं संग के बिना जीवन कबहू न होय यह मेरी विज्ञापना है ॥३१॥

श्लोक -- **याह बाग्यं पुरामे भूतन्मह त्वं न येदम्यहम् ।**

येनासीत्व त्कृपा पूर्णा, सूं-दुर्ल्लभ-तरामपि ॥३२॥

हे प्रभो ! जे सौभाग्य मेरो प्रथम हतो वाकी महिमा कूं हों नहीं जानूं हूं जासूं अत्यन्त दुर्ल्लभ हू तिहारी कृपा मेरे पर पूर्ण हती ॥३२॥

श्लोक -- **मा जीवता त्वदीयोय, स्तव सेवा विपर्जितः ।**

सत्या विज्ञप्ति रेषामे नाथत्वं मनुषे यदि ॥३३॥

जो तिहारो ही जन तिहारी सेवा सूं रहित होय तो कबहू नहीं जीवे है ॥ नाथ यदि मानो तो यह मेरी सांची ही विज्ञापना है ॥३३॥

श्लोक -- **स्वस्थित्य योग्यं मत्वापि मच्छ्रीरं ममासवः ।**

यन्न त्यजंति तेनाहं मन्येता मन्येता पत्र पान् ॥३४॥

अपनी स्थिति के न योग्य मानके हू मेरे शरीर कूं जे मेरे प्राण नहीं त्याग करें हैं तासूं विनको हों निर्लज्ज ही मानूं हूं ॥३४॥

श्लोक -- **ततकृपातः पुरानाथं मया कालादयः प्रभो ।**

तुच्छो कृताः सांप्रतं मां बाधंते त्वकृपां विना ॥३५॥

हे प्रभो ! तिहारी कृपा सूं प्रथम मैंने कालादि कूं पराभव कियो हतो वा बेर कूं स्मरण करके अब तिहारी कृपा के बिना वे मोकूं बाधा कर रहे हैं ॥३५॥

श्लोक -- **त्व सेवायाम् अयोग्यस्य त्वदीयस्य मम् प्रभो ।**

ईत्येवही पराकाष्ठा अभाग्यस्येतिमे मति ॥३६॥

हे प्रभो ! आपकी सेवा में अयोग्य भये तिहारे ही जन मेरी अभाग्य की इतनी परमकाष्टा है मेरी यह मति है ॥३६॥

श्लोक -- **तुच्छी कृतास्त्व तत्कृपातः पूर्वकालाः दयो मया ।**
स्मृत्वात द्वैमधुनां वाधंते त्वत्कृपा विना ॥३७॥

हे प्रभो ! तिहारी कृपा सूं प्रथम मैंने कालादि कूं पराभव कियो हतो ॥ वा बेर कूं स्मरण करके अब तिहारी कृपा के बिना वे मोकूं बाधा कर रहे हैं ॥३७॥

श्लोक -- **माहानस कुरुक्षेत्रे कबलार्क ग्रहेस्यति ।**
सत्पात्रे स्वोदरे दत्ते तस्य बुद्धि किं अद्भूतं ॥३८॥

भोजन घर नाम कुरुक्षेत्र में ग्रास रूप सूर्य ग्रहन के होयवे पर सत्पात्र रूप अपने उदर में दान कियो जाय वाकी बुद्धि में कहा आश्चर्य है ॥३८॥

श्लोक -- **कुरुक्षेत्रे दान वृद्धिः श्रुयते नानुभूयतेः ।**
मत्कुरुक्षेत्र दांनस्य बुद्धीः सद्योऽनुभूयते ॥३९॥

कुरुक्षेत्र में दान की बृद्धि शास्त्रन में सुनी है परन्तु अनुभव में नहीं आवे है ॥ परन्तु मेरे कुरुक्षेत्र में दान की बृद्धि तो वेग ही अनुभव में आवे है ॥३९॥

सर्व लोकन के हित की इच्छा वारे अदेय दान में दक्ष करुणासागर स्वयं भगवान श्री गोकुल भूपाल श्री महाप्रभुजी ने विप्रयोग रसरूप अर्थ वारे अत्यन्त गूढ़ भाव अर्थ वारे यह सेंती पद्य रचे हैं ॥४१॥

जे जन या प्रियतम के श्रृंगार रस के सर्व रूप पुरुषोत्तम के मुकुटमणि ऐसे स्वरूप कूं हृदय में धारण करिके याकूं पढ़ेंगे वे जन वा विप्रयोग रस के अनुभव कूं बेग ही प्राप्त होंयगे ॥ कि जो विप्रयोग रस बेग ही निर्दोष सर्व पुरुषार्थों के मुकुटमणि रूप स्थिर संयोग रस कूं ही दान करेगो ॥ और जन याकूं सुनेंगे कि स्मरण करेंगे कि अर्च्चन करेंगे कि व्याख्यान करेंगे विनकी हू निसंशय यह गति होयगी ॥४५॥ मृग के छोना सदृश जाके नयन हैं ऐसे प्रियतम के नामात्मक श्रीमुख कमल सूं यह पद समूह प्रगट भये हैं ॥ वाके अर्थ सूं मधुर अर्थ प्रगट भयो है ॥४६॥ तथा कटाक्ष सूं ध्वनी प्रगट भयी है ॥४६॥ या प्रकार कृपा रस के सागर श्री महाप्रभुजी अपने कृपापात्र जीवन में अपने स्वरूप में अति दुर्ल्लभ साधनातीत भावन कों दान करिवे लिये जा

टीका कि पद्यन कूं प्रगट करते भये हैं ॥ संक्षेप सूं विनकूं जनायके अब प्रभुन के अमृत कूं हू विजय करिवे वारी और लीला कूं कहूं हूं ॥४७॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां दशम् स्तरंग समाप्तम् ॥१०॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- ११

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- ११ लिख्यते ॥

श्लोक -- **प्रियः कदाचि द्वगवान कृताभिर्व्याख्या वा माना भिरेचः**
कालि द्वि प्रवरे स्पधा भ्रि विभूषय प्रासान मात्मन स्तत् ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि यह प्रिय भगवान निर्दोष रससिंधु श्री महाप्रभुजी कबहू श्री गिरिराजजी में अपने मंदिर में अपने वा आसन कूं शोभायमान करत प्रथम रचना करी व्याख्यान करी या टीकान सूं भक्तन में तथा विशेष सूं तो कमलनयनी सुन्दरीन में रस के समुद्रन कूं वर्षा करें हैं और श्री गोकुल में तो प्रिय चक्रवर्ती कृपासिंधु श्रीजी प्रायः बहुत वार ही अत्यंत बहुत ही रस समुद्रन कूं वर्षा करें हैं ॥२॥ और वा समय कूं जो या महाप्रभुजी को वैसो महा रसात्मक उदार स्वरूप है जो अत्यन्त उछल रहे उज्ज्वल भाव सुन्दरता लीला तथा करुणा रस के समुद्र वारो है कि तुच्छ किये हैं पुरातन सगरे अवतार कि अवतारीन के समूह जाने तथा चारों ओर सूं वाको पान कर रही जे मृगनयनी हैं कि भक्तजन हैं विनके हू अत्यन्त विस्तार वारी पर्वत की गुहा रूप अनुभव में जो विराजमान है ऐसे वा महा रसात्मक स्वरूप कूं वा भक्त सुन्दरीन की कि भक्तन की प्राप्ताप्राप्त के विचार के बिना ही अपने चरण शरण स्थिति मो सरीके दिनन में प्रसरवे वारी कि स्पर्श मणि के हू प्रभाव कूं जाने विजय कियो है कि कल्पवृक्ष कामधेनु जाने तुच्छ किये हैं ऐसी निमर्याद कृपा के बिना काको मन वा दुर्गम अनुभव रूप गुहा में प्रवेश करिके भलीभांति स्पर्श करिवे में समर्थ होय सके अपितु वा भक्त सुन्दरीन की तथा बिन भक्तन की कृपा के बिना वा समय के महाप्रभुन

के महा उच्छलित रसमय स्वरूप कूं कोऊ को मन स्पर्श नहीं कर सके है यह भाव है ॥६॥ और तब कथा के समय में वा प्रिय की अत्यन्त विशाल हू सो सगरी सभा गंभीर मनोहर भाव सूं कि सौंदर्य को सार कि रस के समुद्रन सूं कि स्तंभ कंप रोम हर्ष, पसीना की गदगदता के समूहन सूं कि स्वराभंग विवर्णता कि हर्ष के आंसू तथा मूर्छा जयनाद वारनो कि प्रमाण समूह कि टकटकी लगायके देखने आदि भावन सूं पूर्ण होय जाती भई हैं ॥८॥ और तब कथा को व्याख्यान कर रहे करुणा रस सागर श्री महाप्रभुजी की उच्छलित होय रही मुखकमल की जो शोभा है तथा अधर की सो कोऊ अनिर्वचनीय जो अरुण कांति है तथा कपोलन के फरकन की जो मधुरता है कि प्रकाशमान भ्रूव की विलास धारा है कि ॥१०॥ नयनन की जो मनोहर चंचलता है कि मंदहास्य को जो उदय है कि कुंडलन में शोभायमान मणि समूहन के किरण समूह रूप जो त्रिवेणी है तथा उछल रही जो मूंछन की श्याम चंद्रिका है सो मृगनयनी सुन्दरीन के कि भक्तन के नयनों में कि मन में प्रवेश करिके वा समय में विन में परम काष्टा कूं प्राप्त भये आदर कूं कि परम दशा कूं प्राप्त भये प्रेम रस रूप कूं वेग ही वर्षा करत सर्वोपर शोभायमान होवत ही आकाश में भादों मास के सघन मेघन की शोभा कूं धारण करें हैं ॥१३॥ प्रियतम के सौंदर्य रस पान में लोभी सगरे भक्त तथा हरिण नयनी सुन्दरी हू अत्यन्त उत्साही चित्त होयके प्राणनाथ के चारों ओर बैठिके अत्यन्त विलास करें हैं ॥१४॥ वैसे और भक्त तो रस सूं आर्द्र होयके तिबारी में श्री महाप्रभुजी के निकट ही ऊंचे ठाड़े होयके ही विराजे हैं ॥१५॥ और तो वेदी में रहे हैं कि सोच घर की गली में कि वैसे और कितनेक तो चरणक्षालण के स्थल में विराजे हैं और तो जलघरा की भीत को सहारा लेके बैठे हैं वैसे और तो बड़े विस्तार वारे आंगन मां ही ठहरे हैं ॥१६॥ वैसे और भक्त तो जलघरा के मध्य में कि उत्तम फूल घर की पंगतीन में कि जलघरा के ऊपर कि फूल घर के ऊपर शोभायमान होय हैं ॥१७॥ वैसे असंख्य और भक्त तो और स्थलन में ही विराजके या प्रियवर श्री महाप्रभुजी के वचनामृत को अत्यन्त ही पान करें हैं या प्रथम प्रकार सूं कहे भक्तन ने आगे बैठे भक्तन सूं उठिके ठाड़े भक्तन सूं रुक रही है दृष्टि प्राप्ति जिनकी ऐसे अत्यन्त उत्साही जे भक्तजन प्रिय को दृष्टि रूप अमृत को पान नहीं कर सकें हैं वे कितनेक

तो वा कितनेक भक्तन कूं निश्चय कही नम्रता प्रेम सहित ही विनके प्रार्थना किये वा मार्ग कूं विनके प्रति दान करें हैं वैसे और कितनेक तो और भक्तन कूं हाथ कमल सूं पाग पर पीड़न करिके कि और तो औरन कूं मस्तक के कि हाथ में वैसे औरन कूं वस्त्र में कि कि कान में कि अंतदेश में कि वैसे औरन कूं अन्य अन्य अंगन में स्पर्शादि करिके मार्ग करें हैं वैसे विनसूं हू करावें हैं कि जैसे अपने नैनन को योग्य होय है और जब तो कोऊ भक्तजन आगे ठहेर रहे बड़े यत्न सूं हू कबहू न चलि रहे और जन सूं दृष्टि के मार्ग रुकवे सूं प्रियतम के दर्शन को पाय सके है तब अहो यह तो पापी है प्रियतम के श्री मुखारविन्द के संबंधी गिर रहे रससागर समूह के पान में विघ्न को करिवे कूं यहां कैसे आयो है कहां सूं आयो है कहां जायेगो ? या प्रकार वाकूं ऊंची स्वरा सूं बहुत प्रकार सूं निंदा करत हू जब दोनों नयनों कूं मार्ग प्राप्त नहीं होय है तब तो और ठौर में ही चल्यो जाय है जहां वा प्रियतम के श्रीमुख संबंधी सुधासिंधु के पान कूं प्राप्त होय है ।।२५।। हां हां कितनेक अत्यन्त ऊंचे भाग्य वारेन को तो प्राणनाथ के श्री मुखचन्द्र सूं गिर रहे अमृत सिंधु समूह के पान बिना एक क्षण हू परम करोड़न कल्प रूप सूं लग रहे हैं ।।२६।। तब कारुणिक दयालु रस सागर प्यारो श्रीजी स्वयं हू विनके बहुत प्रकार सूं प्राप्त भये विघ्न को नाश करत अपने मनोहर बल सूं ही वाके वा मनोरथ को सदैव सिद्ध करे हैं ।।२७।। यासूं यह रस सागर उदार चित्त श्रीजी तिल मात्र हू विनके दुःख कूं सहन नहीं करें हैं सदैव ही विनकूं अपने हर्ष सागर में निमग्न करावें हैं ।।२८।। प्रियतम के कृपा समूह सूं विनको सघरो ही सो सो मनोरथ वैसे सिद्ध होय है कि जैसे भक्तजन बिना यत्न ही या प्रियतम के संग सदैव विलास करे है ।।२९।। और यह श्री महाप्रभुजी सदैव तिबारी में ही विराजें हैं केवल ज्येष्ठ अषाढ़ में तिबारी में नहीं विराजें हैं या समय में कि ज्येष्ठ अषाढ़ मे तो मनोहर आंगन में बिराजें हैं हाथ में शोभायमान है मोरपंख तथा ताल के पंखा जिनके और प्रियतम के मुखचंद्र संबंधी शोभा रूप अमृत के पान में तृष्णा वारो है दोनों नेत्र कमल जिनके ऐसे अपने जे भक्तजन हैं सो पंखा करें हैं स्वतंत्र यह प्रिय श्री महाप्रभुजी या समय में कबहू तो कथा नहीं बांचें हैं तब तो कितनेक भक्तजन या श्री महाप्रभुन के गुणन सूं कि कर्मन सूं मिले भाषा पद छंद दोहा कवित्त कूं

पढ़े हैं और कितनेक तो श्री महाप्रभुन के पदन कूं गावें हैं कितनेक तो श्री गोवर्द्धन धारीजी के पदन कूं गावें हैं ॥३२॥ और सौभाग्य के सागर कि गुणन के मुकुटमणि कि महाप्रभुन को कृपापात्र जो ऐसो ध्यानदास है सो उत्तम मंगल रूप सारंगी कूं हाथ कमलन सूं लेकर हर्ष सूं मनोहरता सूं बजावत ही अत्यन्त चतुर सो स्वयं सुन्दर बहोत प्रकार के तान पद तथा रागन कूं प्रकट करें हैं गुण के परीक्षक ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी कूं ही वेग ही अत्यन्त ही प्रसन्न करें हैं ॥३४॥ और दामोदरदास नाम जो सर्व प्रकार सूं चतुर बुद्धिमान है सो वीणा सूं गुणसागर प्राणनाथ कूं वैसे वैसे प्रसन्न करे हैं और वेग ही हंसावे है ॥३५॥ और कबहू तो चतुर बिहारी के भैया को पुत्र जो वृंदावनदास है सो हू गान सूं महाप्रभुन कूं अत्यन्त प्रसन्न करे है ॥३६॥ पश्चिम देश को जो हरिदासदत्त नाम वैष्णव है सो पश्चिम देश की भाषा के जो लोकोत्तर भाव वारे निर्दोष मनोहर पद दोहा छंद विष्णुपदन को गान कर तथा महाप्रभुजी कूं प्रसन्न करे है ॥३८॥ तथा पुत्र के सहित सो ईश्वरदास हू कबहू भाषा के सुन्दर पदन को गान करे है और हर्ष सूं वैसे पदन कूं हू पढ़े है ॥३९॥ और कितनेक गुजराती भक्त श्रेष्ठ तो महेता नाम सूं प्रसिद्ध नरसी मेहता के रचना किये सुन्दर पदन कूं गान करें हैं ॥४०॥ भक्त श्रेष्ठन में चक्रवर्ती रूप परम रस सागर में निमग्न जो खंभात तीर्थ में निवासी माधवदास भक्त है वाने जे महाप्रभुन के मनोहर वैसे स्वरूप कूं कि रसमय विविध लीलान कूं संशय रहित ही स्पर्श कर रहे जे अत्यन्त गूढ़ भाव वारे मधुर मनोहर भाषामय सुन्दर गीत की (धोल) प्रगट किये हैं जो उच्छलित भाव वारे कितनेक रसिक भक्त तो विनको गान करें हैं ॥४३॥ कबहू तो भगवान श्रीजी सुदामा नाम ब्रह्मचारी के संग अत्यन्त मधुर निर्मलाप रूप लीला कूं करें हैं ॥४४॥ अत्यन्त अतुल महा भाग्यवान धूर्त अत्यन्त धृष्ट यह सुदामा ब्रह्मचारी प्रिय के सुख कूं प्राप्त करिवे वारे मनोहर हास्य रस कूं पुष्ट करिवे वारे वैसे निर्मलाप कूं हास्य वार्ता कूं प्रगट करें हैं मध्य मध्य में प्रिय के आगे वा वा रहस्य कि वैसो वा वा लीला कूं प्रगट करिवे वारी कि कछू लज्जा कूं प्राप्त करि रहे ऐसे वचन कूं हू अत्यन्त अशुद्ध संस्कृत वाणी सूं बोले हैं वाकू सुणिके रसिकवर श्री महाप्रभुजी मंद हास्य सूं सुशोभित मुखचंद्र वारो होयके विलासपूर्वक आक्षेप सहित ही वाकूं कहें हैं कि जा जा रे अबे मूर्ख जब तब कैसो ही बके है

और कबहू तो स्वयं हू श्री महाप्रभुजी हास्य रस को बढ़ायवे अर्थ वाकों कहे है कि तूने आज कहा खायो है ।।४९।। और यह सुदामा ब्रह्मचारी महाप्रभुजी के या वचन कूं सुनिके तब कछु मिथ्या सो सो कहे कि महाप्रभुन को अत्यन्त ही हंसावे है ।।५०।। प्रिय श्री महाप्रभुजी या हास्य सूं मृगनयनी सुन्दरीन के तथा भक्तन के प्रफुल्लित नयनकमलन में मनोहर सुधा कूं निरन्तर वर्षा करत कि बिनके मुखचन्द्रन ने विजय कियो है कुमोदिनीन के प्रकाश समूह जाने, ऐसे हास्य कूं हू वर्षा करत अत्यन्त ही हंसे हैं और सगरे जगतों के नियामक हू श्री महाप्रभुजी अत्यन्त उच्छलित होय रहे रस के प्रवाहन सूं निमर्याद भाव कूं प्राप्त भये हास्य कूं रोकवे की इच्छा करत हू वा सुदामा ब्रह्मचारी के वा वा वचन सूं प्रगट भये हास्य कूं रोकवे में समर्थ न होते भये हैं ।।५३।। या प्रकार के प्रसंग में वा रस सागर श्री महाप्रभुजी की सगरी सभा ही हास्यमय ही होयके निरन्तर सर्वोपर ही विराजमान होय हैं ।।५४।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां एकादशम् स्तरंग समाप्तम् ।।११।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- १२

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १२ लिख्यते ।।

श्लोक -- **एवं वद्धोविपः श्रीमाली ज्ञाति संभवोहत**

हास्य रस बदर्दने लं निपुणतमो रामदास साख्यः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या प्रकार हास्य रस में अत्यन्त चतुर सो बूढ़ो ब्राह्मण श्रीमाली जात वारो रामदास है ।।१।. वा सभा में आये वाकूं हू महा कौतुकी श्री महाप्रभुजी हंसत हंसत ही आदर सहित पूछें हैं ।।२।। कहो कहो तुमने किये विवाह के योग्य आज की रात्रि में कछु भयो कि नहीं ।।३।। वा अर्थ तिहारी स्त्री तिहारे अनुकूल भई कि नहीं या प्रकार सूं जब पूछें हैं तब सो रामदास तो श्री महाप्रभुन के वैसे वचन सूं अपने कानों में एक समय में ही अमृत के प्रवाह समूहन कूं वर्षा कर रहे

हर्ष कूं अभिनय करत महाप्रभन के प्रसन्नता अर्थ तब कहे है कि हां भयो ।।५।। तब रस सागर श्री महाप्रभुजी अत्यन्त प्रसन्न होंय हैं और अत्यन्त ही हंसे है और उच्छलित होय रहे हजारन विलासन पूर्वक बहुत प्रकार सूं अनुमोदन हू करें हैं ।।६।। और काहू समय में तो सो रामदास वामें वृद्धता समूह सूं अपनी असमर्थता कूं जतावत कहे है कि आज नहीं भयो तब कृपासिंधु प्राणनाथ श्रीजी वा रामदास के प्रति गुड़ पापड़ी कि रोटला तथा गुजरातीन कूं अत्यन्त प्रिय घृत गुड़ सहित गेहूं के चून के करिवे योग्य सुन्दर स्वाद लड्डुवान के कि लापसी के उपयोग सामग्री कूं दिवावें हैं वैसे और हू वा वा पदार्थन में उपयोगी सामग्री कूं दिवावें हैं । तब सो बूढ़ो ब्राह्मण हू इच्छानुसार वा सगरी सामग्री कूं आदर पूर्वक लेके प्रसन्न होयके उच्छलित भाग्य वारो सो फेर और प्रकार सूं ही या महाप्रभुन के हास्य कूं बढ़ावे है और मथुरा नाम जो तंबोली है सोहू अनेक प्रकार के वेषन कूं धरिके प्रभुन के निकट आयके सभा तथा मृगनयनी समूहन के सहित ही रसिकन के चक्रवर्ती कमलनयन महाप्रभुन कूं बहुत वार ही हंसावे है ।।१२।। वा वा देश वासी जनन के वैसे वैसे रूप भाषा प्रकार स्थिति चलनो आदि सगरे वैसे अनुकरण कूं करत चतुर सो मथुरिया वा महाप्रभुन के हास्य कूं प्रगट करें हैं और महाप्रभुन कूं अत्यन्त हंसावे है कबहू सो मथुरिया जट जाति वारी स्त्री के वेष कूं बनायके ।।१४।। वस्त्र के स्तन बनायके प्रभुन के निकट आवे है ।। प्रभुन कूं प्रणाम करे है तब उच्छलित है आनंद जिनमें कि मंदहास्य वारे मुखचंद्र की चांदनी के कल्लोलन सूं आर्द्र किये हैं सगरे स्त्री पुरुष जाने ऐसे प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी हू विलास पूर्वक वासूं पूछें हैं कि कहो कहो यह कहा भयो तेरो दूसरो स्तन कहां गयो ? तब यह सुनिके बड़ो धूर्त विदूषक सो मथुरिया हू हंसत हंसत कहे है कि प्राणनाथ धर्म के सिद्ध करिवे वारे बहुत ही तीर्थन में हू गयो हूं वहां अपने सुख मंगल के अर्थ सगरे ब्राह्मणन के प्रति सो स्तन मैंने दान कर दियो है ।। यह सुनिके कृपासागर रसिकवर श्री महाप्रभुजी हू मधुर प्रकार सूं अत्यन्त हंसें हैं ।। ऐसे हास्य समूह श्री प्राणनाथजी कूं अत्यन्त ही रुचें हैं ।। तासूं उत्साही वा प्रियवर कूं सो हास्य समूह समय समय में ही सेवन करें है ।।१९।। या प्रकार के समय में यह प्रिय श्री महाप्रभुजी विलास समूह सहित हंसत हंसत ही शोभा सूं सेवित श्रीमुख कमल सूं मधुर प्रकार सूं ही

कहें हैं कि ।।२०।। पंड्या शब्द सूं प्रसिद्ध कोउ ब्राह्मण हतो वाके घर में एक भेंस गर्भ वारी हती वानें पाड़ी ही जनी ।।२१।। अहो अपदा की वृद्धी को समय हतो ।। घर की भेंस ने सुन्दर मनोहर पाड़ी ही जनी या प्रकार बढ़्यो उत्साह समूह जामें, ऐसो सो पंड्या वा पाड़ी कूं गोद में लेकर अपने घर में जाय रह्यो है तामें कमर सूं गिरी अपनी धोती कूं हू न संभारत और मार्ग में अपने नग्न भाव कूं हू न विचारत ही मार्ग में बहुत ही लोक बहुत प्रकार सूं ही बारंबार हंसें हैं और पूछें हैं कि पंड्याजी यह कहा है ? ऐसो पूछ्यो भयो पंड्याजी यह सब काहे कूं हंसें हैं और विनके हास्य कूं हू उत्साह समूह सूं मिल्यो सो न विचारत ही परनी पाड़ी, पाड़ी जणी या प्रकारके भाषामय वचन कूं बारंबार कहत और दौड़त फेर हू अन्य लोकन सूं पूछ्यो भयो सो बारंबार वैसे कहेत ही वा प्रकार सूं ही अपने घर में जातो भयो है ।।२७।। ऐसे पुरुषोत्तमो के मुकुटमणि भगवान प्रिय श्रीजी के या प्रकार के अनुकरण सूं शोभायमान जो यह मधुर वचन है सो पूर्णचन्द्र मुख वारे भक्तन के तथा भ्रु वारी सुन्दरीन के हू पुष्ट-दीर्घ मनोहर मधुर हास्य कूं प्रगट करें हैं ।।२९।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि वा समय की तथा वा सभा की कि वा भक्ति सूं पवित्र हृदय वारे विन भक्तन के कि हरिण नयनी बिन सुन्दरीन के कि वा मेरे कि हमारे वा प्रियतम प्रभुन के कि वा सगरे संबंधीन के हास्य की जो मधुरता है सो जिनके हृदय में निवास करे है हां, हों विनके चरणन के रज कूं प्राप्त होवुं हूं ।। श्री गोकुलजन के जीवन भगवान प्रियतम श्री महाप्रभुजी सगरे अर्थ कूं गुजराती भाषा सूं प्रकाश करत ।।३२।। वैसे श्री मोहनभाईजी श्री गोकुलभाई आदि अपने भक्त चक्रवर्ती प्रवरन के तथा वैसे और हू भक्तन के तथा गुजरात वारी वा सुन्दर पूर्ण चन्द्रमुखी सुन्दरीन के शरीरन में कि चित्त में तब जा रोम हर्ष कूं धारण करते भये हैं वाके चरण रज कूं कि वा भक्तराज भक्त सुन्दरीन के हू चरणरज की हू अभिलाषा करूं हूं और काहू समय में तो प्रिय श्री महाप्रभुजी हंसत हंसत ही अनुकरण सूं अत्यन्त शोभायमान बलयी मिश्र की हास्य वार्ता कूं करें हैं कि हास्य रस में अत्यन्त चतुर पंडित बलयी मिश्र श्रेष्ठ पुस्तक हस्त में धारण करत ही वैसे हास्य रस में अत्यन्त ही तत्पर हाथ में धारण किये पुस्तक वारे अपने पुत्र कूं यन्त सूं पढाय रह्यो हतो तब सो पुत्र कछुक नून्य अक्षर एक पद्य कूं पढिके कहेतो भयो है, हे

पितु या श्लोक में लिखे अक्षर तुमने नहीं देखे हैं तासूं न्यून अक्षर पढ़िवे सूं जो पढ़्यो है श्लोक तासूं छंदो भंग भयो है कि हे पितुः ऊपर वर्तमान अक्षर नीचे कैसे जाने जाय हैं तब पिता पुत्र कूं कहेतो भयो है कि ऊपर वर्तमान हू अक्षर ऊपर काग पद सूं ही नीचे को ही सगरे लोक जाने हैं यामें कछु संदेह नहीं है ॥ या वचन कूं सुनिके अत्यन्त धूर्त सो पुत्र मंद मंद हंसत ही चित्त में कछु अभिप्राय कूं राखिके मौन ही होय जातो भयो है सो कछुक दिनन के पीछे अपनी धोती कूं शिर पर बांधिके स्वयं नग्न होयके सभा में ठहेरे पिता के निकट पोहोचतो भयो है ॥ तब सो पिता सभा में नग्न पुत्र कूं आयो देखिके ॥४४॥ क्रोध करतो भयो है कि अरे नग्न होयके तू सभा में काहे कूं आयो है ? यह कहेतो भयो है तब यह सुनिके पुत्र ने कह्यो कि हू काहे कूं नग्न हूं ऊपर मेरे माथे पर बिराजमान धोती कूं नहीं देखो हो का ? तब बलयी मिश्र ने कह्यो कि हे दुबुद्धे मूर्ख माथे पर धोती सूं नीचे को नग्न भाव कहा दूर होय जाय ? तब पुत्र ने कह्यो कि हे पितुः तुम देखो नहीं हो का स्वेत मृतका सूं मेरे उदर पर जो काक पद लिख्यो है तब तुमने स्पष्ट नहीं कह्यो हतो कि ऊपर वर्तमान हू लिखे काक पद सूं नीचे को ही होय है यह सब लोक जानें हैं यामें कछु संशय नहीं है ॥४९॥ ऐसे हास्य परायण पुत्र के या वचन कूं सुनिके हास्यप्रिय पिता क्रोध रहित होयके अत्यन्त ही हंसतो भयो है या प्रकार अमृत कूं हू विजय करिवे वारे या श्री महाप्रभुन के श्रीमुख सूं प्रगट भये वचनामृत कूं कान रूप अंजुलिन सूं पान करिके भक्त तथा मृगनयनी भक्त सुन्दरी हू अत्यन्त ही हंसें हैं ॥५१॥ श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि रसिकराय श्री महाप्रभुजी वा वार्ता कूं प्रकाश करत मध्य मध्य में अत्यन्त ही हंसें हैं ॥ बढ़ि रहे हास्य कूं रोकिवे में हू समर्थ नहीं होय हैं ॥५२॥ और वे भक्त तथा सुन्दरी हू अत्यन्त हंसें हैं और हूं हू निर्भय होयके हंसू हूं ॥ तब सगरी सभा अत्यन्त हास्य रूप ही होय जाय है ॥५३॥ या वार्ता कूं तो बड़े यत्न सूं समाप्त करें हैं बढ़्यो सो हास्य तो बहुत पीछे ही समाप्त होय है फेर हू यदि स्मरण में आवे तो फेर हू अत्यन्त ही बढ़ जाय है ऐसे रसिकवर श्री महाप्रभुजी स्वयं हंसत वैसे औरन कूं हू हंसावत और वा बलयी मिश्र की हास्य वार्ता कूं कहें हैं कि सो बलयी मिश्र अपने सेव्य राजा कूं अत्यन्त प्रसन्न करिके काहू समय में

एक गाम कूं मांगतो भयो है ।। यह सुनिके राजा ने अपने कार्याधिकारी कूं कह्यो कि याकूं एक सुन्दर गाम दे देवो सो अधिकारी तो वाके प्रति उजर गाम कूं देतो भयो है, राजा ने प्रसन्न होयके यह गाम तोकूं दियो है ऐसे हू कहेतो भयो है ।।५८।। बलयी मिश्र तो वा अधिकारी के वचन कूं मानके वा गाम कूं ही ले लेतो भयो है ।। जब जायके देख्यो तो गाम तो अत्यन्त ऊजर है ।। तासूं या गाम में तो एक कौड़ी को भी मोकूं लाभ नहीं होयगो या विचार सूं अत्यन्त ही दुःखी होतो भयो है तब वा अधिकारी की दुष्टता तथा वंचक भाव कूं मन में राखिके मौन ही होय रहतो भयो है ।। राजा कूं कहिवे में समर्थ नहीं है यासूं कछुक काल प्रतीक्षा ही करतो भयो है पीछे काउ दिन में या बलयी मिश्र ने जान्यो कि आज राजा सैना सहित ही मेरे गाम वा रस्ता सूं ही शिकार खेलिवे जायगो सा आज ही या प्रकार सूं अपने राजा सूं आछे गाम कूं पावुंगो और प्रगट कराये क्रोध सूं अधिकारी कूं हू राजा सूं निरन्तर निरादर करावुंगो ।।६४।। यह विचारके बलयी मिश्र स्त्री कूं संग लगायके अपने गाम के मध्य वारे मार्ग में प्रथम ही आयके अपने राजा कूं देखत ही ठहरतो भयो है ।।६५।। तब राजा आयवे लग्यो तब यह बलयी मिश्र हू अपनी स्त्री के संग मैथुन करवे कूं प्रारम्भ करतो भयो है तब राजा के मंत्री प्रधान तथा चाकर या बलयी मिश्र के निकट आयके याकूं देखिके बड़े क्रोध सूं कहेंते भये हैं कि हे मूर्ख हे मंदात्मन दिन में बड़े प्रकाश में मार्ग में ही राजा के सेना सहित के आवत ही राजा के अत्यन्त निकट ही यह कहा करे है ।। अरे पापी लज्या हू नहीं करे है, डरे हू नहीं है ऐसे वे कहि रहे हे तब घोड़ा पर सवार राजा हू स्वयं वेग आय जातो भयो है और याकूं ऐसे स्त्री के संग मैथुन कर रहे याकूं देखतो हू भयो है क्रोध हू करतो भयो है यह पापी निर्लज्ज मूर्ख धृष्ट सठ नीच काहे जो सेना के सहित हों राजा देखि रह्यो हूं तोहू निडर होयके ऐसो काम करि रह्यो है ऐसे हू कहेतो भयो है और सो बलयी मिश्र तो वैसे मैथुन करत ही रह्यो दक्षिण हाथ कूं उठायके राजा कूं चिरंजीव चिरंजीव सब शत्रुन कूं विजय करो या प्रकार वाकूं आशीरवाद करत भयो है ।।७१।। राजा तो वाकूं बलयी मिश्र वैसो काम करे है यह जानके वा पर अत्यन्त क्रोध करतो भयो है तथा कहेतो हू भयो है कि अहो मेरे आगे तुम कैसे धृष्टता करो हो ? कासे लाज

हू नहीं करो हो मोसूं डरो हू नहीं हो ? तब बलयी मिश्र राजा के प्रति कहेतो भयो है कि हे राजन ! चिरंजीव मेरे पर क्रोध मति करिये मेरो सत्य वचन सुनिये कि प्रसन्न होयके आपुने जो मोकूं गाम दियो है सो अत्यन्त ही उजार है प्रजा रहित है यासूं यामें नयी प्रजा उपजावुं हूं ऐसे वाके हास्य वचन सुनिके राजा क्रोध रहित होयके वा बलयी मिश्र पर प्रसन्न होतो भयो है ॥ अधिकारी पर अत्यन्त ही क्रोध करतो भयो है, कहतो हू भयो है कि मूर्ख याकूं ऐसो उजार गाम काहे कूं दियो है ॥ अब वेग ही याकू बहुत प्रजा सूं मिले सुन्दर गाम कूं दे दे ॥७७॥ यह सुनिके अधिकारी हू अत्यन्त डरपिके बलयी मिश्र कूं बुलायके वाकूं प्रणाम करिके वांछित गाम देतो भयो है ॥७८॥ ऐसे हंसत हंसत कबहू कमल नयन श्री महाप्रभुजी कोउ कोउ तंतुवायकी हू हास्य संबंधी वार्ता करें हैं ॥ कोई एक तंतुवाय की वस्त्र बुनवे वारो भूमि पर गिरे बड़े दर्पण कूं देखतो भयो है सो लोभी वाकूं उठाय लेतो भयो है तथा वाके लाभ सूं अत्यन्त ही प्रसन्न होतो भयो है तब यामें अपने प्रतिबिंब कूं देखिके अत्यन्त डरपिके जाको दर्पण है यह सोऊ पुरुष है ऐसे अपने प्रतिबिम्ब कूं वा दर्पण वारो स्वामी जानके वाकूं कहेतो भयो है कि मित्र यदि तेरो है तो तू ले ऐसे विनय पूर्वक भय सहित दोय तीन वार कहे कि वा दर्पण कूं भूमि में धरिके बढ़ि रह्यो है भय जामें ऐसो सो तंतु वायु वेग सूं ही दौड़ जातो भयो है ऐसे वा तंतु वायु के स्वराभाषा के अनुकरण वारी या वार्ता कूं करत ही भगवान श्री महाप्रभुजी सभा में वा दर्पण कूं वाके भय सहित धारण करें हैं ॥९४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां द्वादशम् स्तरंग समाप्तम् ॥१२॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- १३

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १३ लिख्यते ॥

श्लोक -- **हास्योदध स्तरंगे तेष्वेवं प्रस्टतेष्व तंद्रेय**

सोस्यचमत्का नां मुदीक्ष्य रुचि मुत्कटां ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें कि या प्रकार हास्य समुद्र संबंधी वा तरंगन के ऐसे अत्यन्त प्रसरवे में या महाप्रभु की तथा याके भक्तन की अत्यन्त रुची हू देखिके समीप जायके विनके अत्यन्त प्रबल बहुत प्रकार के रसायन रूप कृपादृष्टि सुधासार सूं बारंबार अत्यन्त पुष्ट भयो तथा प्रगट भये अत्यंत उत्साह समूह वारो हों प्रसन्न भये बिन सबन के प्रफुल्लित होय रहे मुखचन्द्र के पान करिवे की इच्छा वारो होयके हृदय में महाप्रभुन को प्रणाम करिके विज्ञापना करतो भयो है कि हे महाराज पुरुषोत्तम मुगटमणी महाप्रभो कोऊ देश में कोऊ एक अत्यन्त प्रतिष्ठित क्षत्री हतो वाकी बहुत ही स्त्री हती पुत्र न हतो ॥ अन्त अवस्था में एक कन्या प्रगटी वाकूं सो क्षत्री यथा विधि बड़े उत्साह सूं गुणवान धणी अच्छे कुल वारो कोऊ क्षत्री प्रति देतो भयो है ॥ सो वाको भरथार तो अपने कर्म दोष सूं थोरे ही दिन में मृत्यु कूं प्राप्त होय गयो ॥ यह छोरी अत्यन्त दुःखी होयके अत्यन्त रुदन करे है ॥७॥ यह वृत्तांत वाको पिता सुनिके अपने गाम सूं वेग ही आयके वा कन्या कूं धैर्य देकर धन के सहित ही वाकूं अपने ही घर में ले जातो भयो है ॥८॥ कन्या पर दयालु सो क्षत्री वाकूं अपने ही घर में ठेहरावतो भयो है ॥ थोरे काल पीछे सो पिता हू मर जातो भयो है ॥ वाकी स्त्री सगरी पतिवृता भाव सूं प्रसिद्ध हतीं तासूं पति के पीछे सती होइ जाती भई हैं ॥ तब भरतार तथा पिता को हू धन सगरो ही वा कन्या के ही हाथ में पर गयो तब यह धर्मिष्ट कन्या वा धन सूं ही धर्म कार्यन कूं करत अतिथि सेवा पितृदेव पूजन कूं हू करत पिता के घर में रहेती भई है ॥ और दुष्ट चित्त वारे ज्ञाति बांधव तो अकेले घर में निवास कर रही या नव जोवन वारी धर्मिष्ट कन्या कूं देखिके यह कोऊ नवयोवन वारे पुरुष में आशक्त है यह संदेह करते भये हैं ॥ ऐसे

विनके दुष्ट संदेह कूं जानके श्रेष्ट बुद्धि वारी यह कन्या ज्ञाति वारेन सूं कि घर में निवास सूं उदासीन होयके सघन वन में चली जाती भई है ॥ वहां जायके निकट शोभायमान है जलाशय जाके और पुष्प फल के भार सूं नम्र होय रहे अनेक प्रकार के वृक्षन सूं मनोहर ऐसे स्थल में भीतर बड़ी अत्यन्त गंभीर कि छोटो जाको द्वार है ऐसी एक सुन्दर गुफा कूं बनवावती भई है ॥ वहां एकांत में सगरे अपने धन कूं अपने योग्य स्थल में चतुरता सूं राखती भई है ॥१६॥ वा थोरे से धन कूं खर्चके वस्त्र अन्न पान खाट बिछोना आदि के और वा वा पदार्थन कूं लेकरसंग्रह करती भई है ॥ और नित्त ही प्रातःकाल में उठिके यह कन्या आवश्यक देह कार्य कूं करिके वा जलाशय में न्हायके शुद्ध वस्त्र पहेरिके सूर्य कूं तथा देवतान कूं प्रणाम करिके अपनी गुफा में आयके वहां मृतिका को शिवलिंग बनायके भक्ति श्रद्धा समूह सहित यथाविधि पूजन करत दोय प्रहर ठहेरती भई है ॥ पीछे रसोई कूं बनावे है सो यथायोग्य पितृदेव अतिथीन के प्रति हू भोजन कूं दान करत पीछे स्वयं हू सो सुन्दरी भोजन करे है ॥ ऐसे दिन गुजरतही कोई रात्रि में वा सुन्दर भ्रु वारी सुन्दरी के हृदय में अत्यन्त दुर्जय भारी कामदेव अत्यन्त प्रसरतो भयो है ॥ तब ठहर न सकत और चारों ओर लज्जित होवत ही कोऊ कूं कहिवे में हू समर्थ न होती भई है ॥१३॥ तब कृपानिधि सर्व काम पूरक आशुतोष महादेव की हू मन सूं शरण कूं सो सुन्दर बुद्धि वारी प्राप्त होती भई है ॥ वासूं सदैव प्रथम सूं ही पूजा किये महादेवजी वाके दुःख कूं सहन न करत तब ही प्रकट भये हैं और कहते हू भये हैं ॥ "हे कोमलांगी वर मांग ॥ तिहारे तप श्रद्धा भक्ति पूजा सूं हूं सर्व प्रकार सूं प्रसन्न भयो हूं ॥ हे सुन्दर अदेय हू जो मांगे सो तोकूं देवुंगो" ॥२७॥ तब तो सुन्दरी तो लज्जा समूह सूं आक्रांत भई थकी हृदय में प्रसन्न होयके हू हृदय में स्थित मनोरथ कूं महादेव के आगे कहवे में समर्थ न होती भई है तासूं तब अंचल सूं मुख कूं छिपाय के अत्यन्त ही नीचो करिके चरण के अग्र सूं भूमि कूं लिखत ही हाथनकूं बांधके ही ठहेर जाती भई है ॥ सर्वज्ञ महादेवजी बोले हे सुमुखी तुम मति दुःखी होवो ॥ यह सदैव पूजन कियो मेरो लिंग लेवो ॥३१॥ हे कोमलांगी तुम दिन में सदैव ही बड़ी सामग्री सूं परम भक्तिभाव सूं मन शरीर वाणी सूं याकूं धूप दीप पुष्प माला बेलपत्र सोना, हीरा, मणि, मुक्ता आदि के आभरणन सूं कि अनेक प्रकार

के नैवेद्य वस्त्र कि दंडवत प्रणामन सूं कि स्तोत्र, गीत, वाद्य तथा और हू वा वा प्रकारन सूं आर्ती कि बहुत जयनाद तथा मंगलमय नानाविधि उपहार कि प्रिय वस्तु के अर्पण तथा मृदंग झांझ, झालर के शब्दन सूं कि उत्साह भरे नृत्य, प्रदक्षिणा, परिक्रमा कि बहुत प्रकार की विज्ञापना प्रेम दान मान, ध्यान, प्रणाम, विनय, आदर आगे उठवे आदि सत्कारन सूं हू पूजा करियो ॥ ओर प्रतिदिन ही अमूल्य सिंघासन पर विराजमान याकूं कपूर, कस्तूरी आदि सूं प्रभात में कि सायंकाल तथा मध्याह्न में हू पूजा करियो ॥ और याके पोढवे लिये बहुत मूल्य वारो अत्यंत दृढ़ सुन्दर दीर्घ विस्तार वारो मनोहर शय्या की रचना करियो ज्या पर कोमल सुन्दर दोय तूल बिछी होय सुन्दर ऊपर चादर होय सुन्दर ऊपर के वस्त्र वारे सुखदायक सिराहनो जापर होय ऐसो सुन्दर सुगन्धी वारो पर्यंक होय ॥

(यहां से चार पांच पान छोड़ दिये हैं ।)

एक समय शिव भक्ति वारो कोऊ सन्यासी व्यतिपात योग में कहूं अपने स्थान में प्रस्थान करिके वा सुन्दरी की गुफा में आवतो भयो है ॥ वाकूं देखिके सो विलास वारी सुन्दरी आदर पूर्वक अपने कल्याण अर्थ प्रणाम करती भई है ॥ तथा निवास करावती भई है ॥ कि परम भक्ति सूं परिचर्या करती भई है ॥ कि यथाविधि पूजन हू करती भई है तथा आदर पूर्वक भोजन हू करावती भई है कि परम भक्ति सूं परिचर्या हू करती भई है कि चरणन कूं हू दावती भई है ॥७२॥ जब रात्रि प्रहर गुजरी सो सुन्दरी अपने कार्य में आशक्त भई ॥ तब निर्जन वनमें सो सन्यासी कहुं स्थल में सोय रह्यो हतो वहां सूं भूमि पर गिर गयो वहां ठहेरके, भाग्यहीन सो बारंबार "शिव" ऐसे कहेतो भयो है ॥ ***(कुछ लाइन छोड़ी गई हैं ।।)*** सन्यासी तो अत्यन्त पीड़ित होयके तड़फतो भयो है ॥ वाके उपायन कूं न जानके सर्व प्रकार सूं ही पुकारतो भयो है ॥ वाकूं दुख को शब्द अत्यंत ऊंचो ही अचानक भयो वाकूं सुनिके चारों ओर सूं सगरे लोक आय जाते भये हैं ॥७६॥ सो पशु बुद्धि "नारायण" ऐसे कहेवे की इच्छा हू नहीं करतो भयो है ॥ अत्यन्त स्त्रव रह्यो है रुधिर जाको ऐसो सो मृत समान होय गयो ॥७७॥ तब वा सुन्दरी सूं "नारायण" "नारायण" ऐसे कहेवायो ॥ सो सन्यासी बड़े यत्न सूं नारायण ऐसे कहेतो भयो है ॥७८॥

ऐसे सब लोक ही देखके आश्चर्यित भये ॥ सो सन्यासी तो प्राणन कूं फेर प्राप्त भयो दोय घड़ी विश्राम कूं प्राप्त भयो ॥ बड़ो मंगल भयो, आज हूं या संकटसूं छूट्यो यह मानतो भयो है ॥ सो सुन्दरी तो वा लिंग कूं पखारिके मनोहर वस्त्र सूं ढांपिके वा सुन्दर सिंघासन पर पधरावती भई है ॥८०॥ संकट सूं छूट्यो सो सन्यासी तो शिव भक्त हतो सो दुर्बुद्धि दुर्जय स्वभाव सूं ही फेर तिहारी कृपा सूं या संकट सूं छूट्यो हूं ऐसे भावना करत ही "शिव शिव" ऐसे कहेतो भयो है ॥ ***(यहां से चार पांच लाइन छोड़ दी हैं ।)*** सुन्दरी के कृपा के परवश होयके वासूं "नारायण" ऐसे कहेवायके वा लिंग सम्बन्धी संकट सूं छुड़ावती भई है ॥ और शिक्षा हू करती भई है कि तुम यहां महादेव के नाम कूं मति कहियो ॥ यदि तुम कहोगे तो फेर लिंग सम्बन्धी कष्ट कूं प्राप्त होवोगे ही ॥८६॥ सो सन्यासी तो वाके वचन कूं डरके आदर पूर्वक ही ग्रहण कर लेतो भयो है ॥ और वहां ही दंड कमंडल कूं छांड़िके दौड़ ही जातो भयो है ॥८७॥ और सगरे लोक तो विस्मय होय जाते भये हैं ॥ और स्त्रीजन तो वा विधवा की भक्तिसूं वामें प्रणाम करत वामें बहुत मान करत भयी हैं ॥ तब बहुत स्त्री तो वाकी शिष्य होयवे कूं चाहना करती भई हैं ॥ और वाकी उपासना कूं सर्वोत्कृष्ट मानती भई हैं ॥ अहो ऐसो लिंग जाने वश कर लियो है याके बड़े ही भाग्य हैं ॥ याको तप अत्यन्त सफल है ॥९०॥ जासूं हमकूं दुर्ल्लभ लिंग या प्रकार सूं याके वश में है और बारंबार शिव नारायण ऐसे कहेवे सूं रात्रि में कि दिन में हू जाकूं सदैव महा सुख होय है सो सुख हमकूं कहां है ॥ देवतान की स्त्री कूं हू यह सुख नहीं मिले है ॥९२॥ ऐसे कितनीक जे स्त्री वाकूं चाहना सहित बारंबार स्तुति कर रही हैं ॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि आदि भक्तराज सर्व प्रकार सूं अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं तथा तासूं वैसे वैसे लौकिक कि अलौकिक वा वा पुरुषार्थन सूं मोकूं पोषण हू करते भये हैं ॥ तथा अब हू अत्यन्त पोषण कर रहे हैं ॥ और अपने सूं हू सदैव ही मोकूं विशेष जानें हैं कि बहुत मान देवें हैं ॥ बिन भक्त प्रवरन के गुण, कि कृपा, अत्यन्त विनय, वा परम माधुरी कि उछल रही उदारता कूं कि विनके आदर समूह तथा अद्भुत धैर्य और विनके प्रेम महिमा तथा वा प्रणाम पंक्ति कूं कि विनके विश्वास वैसे मंद हास्य कि हास्य समूह विनके ता मुख कमल कूं कि विनके गान तथा वा स्वरूप नेष्टा की

केवल वा अपने प्रिय प्रभुन में ही परम अनन्यता तथा प्रभुन के संबंधी भक्तन के कार्य में तत्परता कूं कि विनके वैसे वैसे स्वरूप कूं कि विनके चरण कमलन की रज कूं कि वाके कणिकान कूं जे पुण्यात्मा सदा स्मरण करें हैं विनके परम फल रूप दास्य में मेरो मन तुम सदैव ही रमण करो ।। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि रात्रि में आसन के ऊपर विराजमान तथा या प्रकार भक्त समूहन के प्रति हर्ष के समूहन को अत्यन्त दान करि रहे रस सागर प्रिय श्री महाप्रभुजी की परमानंद दायक कछुक लीला मैंने कही है ।।११२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिन्धो रात्री मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले भाषायां त्रयोदशमो स्तरंग समाप्तम् ।।१३।।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- १४

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १४ लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथ तस्मातस्य विभोरुत्यानानेही स समासंन्न**
अंगनिषेपीसात्वा रस पत्यंक यथा सृजो निद्राक् ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि अथवा कथा वारे स्थल सूं श्री गोकुल वल्लभ प्रभुन के उठिवे के समय कूं निकट आयो जानके श्रीअंग को सेवक खवासजी जा प्रकार सूं प्रभुन के रस पर्यंक कूं वेग ही बिछावे है वा प्रकार कूं वरणन करूं हूं कि शीतकाल में श्री महाप्रभुजी तिबारी में बिराजे हैं पीछे अंग सेवक वेग ही वा पर्यंक कूं होमघर के द्वार में ही बिछावे है और ज्येष्ठ अषाढ़ में श्रीजी आंगन में बिराजे हैं तब सो श्रीअंग सेवक तिबारी के सुन्दर मध्य वारे द्वार में वा पर्यंक कूं आदर पूर्वक बिछावे है यामें रज के लेश को हू संबंध नहीं होय या विचार सूं वा पर्यंक कूं प्रथम झटकावे है ।।४।। पीछे भरूच गाम के सुन्दर वासता नाम स्वेत वस्त्र सूं रचना किये मनोहर पर्यंक का चरण वस्त्र कूं वा पर्यंक के ऊपर बिछावे है कोमल तूल कूं बिछावे है तामें शीतकाल होय तो कोमल तंतु वारी कसुंभी रंग की विचित्र दोय कि तीन तूल कूं बिछावे है उष्णकाल में तो सघन वस्त्र सूं सिद्ध एक

तूल ही बिछावे है वा तूल के ऊपर चरणन की और परदेशी रोम वारे अत्यंत अमूल्य मखमल सूं सिद्ध निर्मल उज्जवल चरणोपधान कूं कि चरण के धारण करवे लिये तकिया कूं धारण करे है तामें शीतकाल होय तो कोमल तंतु वारो अत्यन्त सुन्दर मलमल को वस्त्र होय है कि खासा को वस्त्र होय है ऊष्णकाल में तो वास्ता नाम वस्त्र होय है और वा पर्यंक पर दक्षिण दिशा में अमूल्य मनोहर मखमल सूं सिद्ध भयो सिराहने को बिछावे है वा सिराहने कूं देशांतर के कोमल श्रेष्ठ प्रक्षल सूं भरे हैं ऊपर सुन्दर श्वेत वस्त्र कूं ढाके है वाके दोनों ओर सुन्दर श्याम पाट के फोंदना सोहे हैं सुन्दर सुवर्ण के झबिया हू सोहे हैं सुखदायक शोभायमान होय है वा सिराहना के पास ही अमूल्य मखमल सूं सिद्ध देशांतर के कोमल पक्षण सूं भरे सुन्दर श्वेत वस्त्र सूं ढांपे कोमल सुखदाय मनोहर उज्ज्वल पांच वर्ण वारे पाट सूं रचना किये गुच्छान कूं धारण करि रहे पाट के सेज बंधन सूं या पर्यंक के चारों चरण सम्बन्धी भक्तजन कूं सुन्दर बांधे है ।।१५।। याके अनन्तर वा सुन्दर तूल के ढांपिवे लिये सुन्दर नीचोल कूं कि तनसुख के वस्त्र कूं कि मखमल वस्त्र सूं सिद्ध सुन्दर आच्छादन वस्त्रकूं कि दोहर कूं शीत काल कि उष्ण काल की न्यूनता विशेषता कूं विचारके सो सुन्दर बुद्धि वारो श्रीअंग सेवक धारण करे है ।।१७।। शीतकाल के प्रारम्भ में जोलों श्री गिरिधारीजी तूल कूं नहीं ओढे हैं सगरे सेवकन कूं सेवा प्रति धर्म कूं भलीभांति जतायवे लिये तोलों श्रीजी हू तूल कूं नहीं ओढ़े हैं तोलों कश्मीर देश के मनोहर अमूल्य पट को ओढे हैं कि अथवा रोमवारे सुन्दर तोस नाम वारे वस्त्र कूं धरे है कि ओढे हैं अथवा पट सूं रचना किये सुन्दर लाल रंग के गडुर कूं कि टूकूं रचना करी वस्त्र सहित दोहर कूं सो सुखसागर श्रीजी ओढे हैं और जब तो यह श्री गिरिधारीजी वा तूल कूं अंगीकार करें हैं तब यह श्रीजी हू वाकों अंगीकार करें हैं ।।२१।। और ग्रीष्म ऋतु में तो कृपासागर श्री महाप्रभुजी तनसुख नाम वस्त्र सूं सिद्ध भयी सुन्दर चादर कूं ही ओढ़ें हैं अथवा पंचतोलक नाम अत्यन्त कोमल वस्त्र कूं ओढ़े हैं और सुन्दर बुद्धिवारो सो श्रीअंग सेवक खवासजी वा रस पर्यंक के ऊपर मस्तक पै बांधवे लिए सुन्दर फेंटा धरे है और घरी करिके अत्यन्त सुन्दर तनिया कूं धरें है ऐसे या प्रकार विछाये रस पर्यंक के ऊपर रज आदि के निवारण करिवे लिए वैसे चित्रित निर्दोष स्वच्छ

निचोल कूं हू ऊपर डाले हैं और रस पर्यंक के सिराहने की ओर चरण के नीचे दोइ प्रतिपादक धरे हैं जासूं यह पर्यंक ऊंचो होय जाय है याके अनन्तर वाये और मुख्य मंदिर के द्वार के पास एक रत्नजटित चौकी को धारण करें हैं वाके ऊपर छोटे बड़े जलपान के पात्र को धरें है तथा श्री हस्तमकल के पखारवे अर्थ जल सूं पूर्णपात्र पीतल को कलसा कि और धातु को कलसा वहां धरे है तथा पान के बीड़ा मनोहर वरास दानी कि चूना की ड्बी हू वहीं धरे है और फूलन की विचित्र माला हू धरे है याके पास चर्वित तांबूल के डारवे अर्थ भूमि के अर्थ सुन्दर पीकदानी हू धरे है और दक्षिण दिशा में द्वार के बाहिर वारे चोंतरा पर रत्न जटित कंबल पर विलास वारे सुन्दर चरणवस्त्र कूं धारण करे हैं जहां श्री गोकुलाधीशजी चरण कमलन कूं पोंछके वा रस पर्यंक के ऊपर चढ़ें हैं ॥ मखमल सूं आच्छादित जाको स्वरूप है कि सफेद वस्त्र जा पर चढ्यो है ऐसी एक और हू सुन्दर छोटी रत्नजटित चौकी धरी है वाके ऊपर रुईदार आसन कूं बिछावे है ज्यांहां पर प्राणनाथ श्रीजी चरण कमलन कूं धारण करिके रस पर्यंक कूं शोभायमान करें हैं ॥३३॥ ऐसे बड़े यत्न सूं मैंने श्री महाप्रभुन के रस पर्यंक कूं कछु स्वरूप संक्षेप में दिखायो है ॥ बढ़ि रहे हैं उत्साह रूप समुद्र जिनमें, ऐसी सगरी रसात्मक पूर्ण चंद्रमुखी सुन्दरी या रस पर्यंक को दर्शन करिके अत्यन्त ही हर्षित होय हैं तथा वा रसपर्यंक पर अपने सगरे अंगन ने, निरन्तर पान किये जे श्री महाप्रभुन के सगरे श्री अंगन सूं प्रगट भये आकाश कूं हू स्पर्श करि रहे कि अत्यन्त उछल रहे विपुल विस्तार वारे अत्यन्त रोम हर्ष अश्रु तथा कंप कूं धारण करें हैं और भक्त समूह के भाव की अनुकूलता समूह सूं प्राणनाथ के शयन में होय रह्यो थोड़ो सो हू विलंब इन सुन्दरीन कूं नहीं रुचे है और इन सुन्दरीन के मर्मन कूं तिल तिल छेदन करे है तथा श्री मुखचंद्र के दर्शन रस सूं या प्रिय कूं त्याग न कर रहे वैसे भक्तन में विन सुन्दरीन के विषय कूं अत्यन्त बढ़ावे है और यह सुन्दरी प्रियतम के वा रस पर्यंक कूं मन सूं प्रणाम करे है कि अंजुली कूं बांधके उच्छलित होय रही है का कू जामें ऐसे दीनता के वचन पूर्वक जे मधुर विहार किये हैं विनकूं स्मरण करायके वेग ही मोकूं बुलवाय ऐसे इत्यादि प्रकार सूं विज्ञापना करे है ॥ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि या रस पर्यंक के ऊपर प्रियवर श्रीजी प्रिय के संग ही वा प्रिया

में भाद्रपद के मेघ समूहन कूं जिनने विजय कियो है ऐसे सगरे अंगन सूं रस समुद्रन कूं वर्षा करत पोढ़े है कछुक काल के पीछे श्री महाप्रभुजी प्रथम वेला कि आवला आदि नाम सूं प्रसिद्ध तेल सूं श्री अंगन कूं अभ्यंग करायके पीछे श्री गोकुल के प्राण, लीला पर्यंक को शोभायमान करत बिराजे हैं ।।४३।। तासूं अब हों महा अभ्यंग में उपयोगी तैल सय्या को बुद्धि अनुसार कहूं हूं ।।४४।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ।।१४।।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- १५

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १५ लिख्यते ।।

श्लोक -- **अंगानुंगा प्रिय स्यां म्यु त्थानाने इंस समा**
सन्नं ज्ञात्वा तुरिनरुतोशग्लघु पल्यंक गृहे मुख्ये ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि श्री महाप्रभुन को जो श्री अंग सेवक है सो श्री महाप्रभुन के उठवे के समय कूं निकट आयो जानके शीत ऋतु में वेग ही मुख्य घर में छोटे पर्यंक कूं बिछावे है ।।१।। वाके ऊपर भली-भाँति बिछोना बिछावे है कि ऊपर मनोहर तूल कूं बिछावे है याके ऊपर मनोहर निरदोष सिरहाने कूं धारण करे हैं और वाके ऊपर चरणन की ओर खासा के वस्त्र सूं सिद्ध भये मनोहर निचोल वाले चरणोपधान कूं चरणन के धारण करवे योग्य तकिया कूं धरे हैं तथा सिरहाने की ओर बिराजमान पर्यंक के चरण के नीचे अत्यन्त मनोहर दोय प्रतीपादक धरे हैं तथा पर्यंक के नीचे सो श्री अंग सेवक खवास जी काष्ट के जाके सुन्दर चार चक्र हैं ऐसी धूम रहित अंगारन सूं भरी भई मनोहर लोहे की अंगीठी कूं धारण करे हैं कोउ कृपा पात्र तो वा अंगीठी को वैसे-वैसे बहुत वार भ्रमावे हैं कि जैसे सगरी हूं तूल तप जाय वहां आयके श्रीजी जब पौढ़े हैं विनकूं जैसे अत्यन्त

ही सुखदायक होय और प्रभुन में अत्यन्त भक्ति वारो गोपालिया सुतार के विट्ठलदास कि और हू कोउ भक्त महाप्रभुन की या प्रकार की सेवामां सावधान होयके रहे है ॥७॥ इहां और हूं दोय अंगीठी काष्ट के अंगार अग्नि संपूर्ण तैयार ही रहे है वेहू या महाप्रभुन की सेवामां आवे है ॥९॥ सुरत गाम वासी जनार्दन भक्त कि दिल्ली निवासी क्षत्रिय श्रेष्ठ हरीराम कि औरहू भक्त आंबला आदि नाम वारो तैल सुगंधी सूं सुंदर भरे रजत कटोरा कूं आदर पूर्वक हाथ में धारण करके ठाडे रहे हैं ॥१०॥ और प्रियतम श्रीजी के चरण कमलन के अभ्यंग में मैण के सहित अत्यन्त सुगंधी फुलेल उपयोगी होय है या लिये छोटे कर वामें तैयार ही बिराजे हैं ॥११॥ और ग्रीष्म रितु में कि जेष्ठ असाढ़ में कपूर कस्तुरी सूं तथा वस्त्र सूं शुद्ध किये राल के चूर्ण सूं मिल्यो कोमल शीतल तैल चरण कमलन के अभ्यंग में उपयोगी तैयार बिराजे है और ग्रीष्म रितु में तो सो श्री अंग सेवक खवासजी दिन में जहां श्री प्राणनाथ जी बिराजे हैं वहां तिबारी में ही आदर पूर्वक वा मनोहर तैल शैया कूं बिछावे है वैसे और भक्तन के संग स्वयं ही सो श्री अंग सेवक तैयार रहे हैं तथा वा तैलाभ्यंग में उपयोगी ऐक ही गांन के बिना समग्र वस्तु कूं तैयार राखे है ॥१४॥ गरमी विशेष में तो वा तिबारी में वा शय्या कूं बिछाय के वाके ऊपर बास्ता नाम वस्तुर सूं सिद्ध स्निग्ध तूल कूं अत्यंत शीतल तथा यंत्र सूं निकारे अत्यन्त शीतल सुगंधी गुलाब जल सूं सिंचन कीये वस्त्रन सूं ऊपर बिछावे है ॥ प्राण प्रभुन के उठवे के समय कूं जानके सो श्री अंग सेवक तैल शैया कूं आंगण में बिछावे है ॥ वर्षा होयवे में तो तिबारी में ही सो चतुर बुद्धिमान बिछावे हैं तामें उष्ण काल में तैल्याभंग करिवे वारे भक्तन के अंग में कि निरंतर प्राणनाथ कूं जब तैलाभ्यंग होय तब वा भक्तन के अंग सूं या यक्ष कर्दम की सुगंधी कूं ही प्राणनाथ भोगे हैं अब तैल्याभंग को प्रसंग इहां रहे है । भक्तजनो अब श्री महाप्रभुजी के उत्थापन के निर्दोष सुखदायक प्रकार कूं कहूं हूं सो पान करिये आसन के ऊपर बिराजमान श्री महाप्रभुन के निकट छेली बीडी लायके सो श्री अंग सेवक बुद्धिमान खवास जी तैल्याभंग में उपयोगी वस्त्रन के पहेरवे कूं विज्ञापना करे है ॥२१॥ प्रिय श्री महाप्रभुजी तो आरोगत ही वा बीड़ा कूं श्री मुखचंद्र सूं वेग ही आगे धारण कीये पीकदान में डारे है अथवा श्री जी ऐसी वाणी सूं कि हाथ के पसारवे सूं नम्रता आदर पूर्वक प्रार्थना

कर रहे कोउ भक्त प्रवर के हाथ में प्रेम सूं पधरावे हैं सो भक्तराज तो वामें अपनी अयोग्यता कूं विचार के अलभ्य लाभ सूं महा आनंदित होयके उछल्लित रोम हर्ष वारो होवत ही यह तो महाप्रसाद है यह विचार के अत्यंत उछल्लित होय रहे प्रेम हर्ष समूह पूर्वक ही वाको लेवे है ॥ तब श्री अंग सेवक सो खवास जी मैंने प्रथम वरणन करी रीती सूं प्राणनाथ के श्रीहस्त कमल में बीड़ा कूं देवे है पर श्री महाप्रभु जी हूं बरास के खंड सहित वा बीड़ी कूं हर्ष सूं विलास सहित ही आरोगे हैं, तब चूनो हू लेवे हैं वाकूं हूं वेग ही श्री मुखारवींद मां डारे हैं तब श्री अंग सेवक आदर समूह सहित ही विज्ञापना करे हैं कि महाप्रभो श्री आपुके उठिवे को समय भयो है ऐसे विनय करिके प्रथम जलपान के पात्र आदिकन कूं उठावे हैं मंदिर के भीतर पधरावे है याके अनंतर श्री महाप्रभुजी के पीछे जायके यह खवास जी धीरे-धीरे बड़े तकिया के सरकायवे कूं प्रारंभ करे हैं । हमारे प्रिय श्री महाप्रभुजी हूं वाकूं छांड के कछु न्यारे, बिना सहारे ही बिराजे है या अवकाश में सो खवास जी वा बड़े तकिया कूं सरकाय के मंदिर के भीतर वाकूं ऊंचे स्थान में धारण करे है ॥३०॥ तब सगरे भक्तजन अपने-अपने स्थान सूं वेग ही सब ठाड़े होयके जय-जय शब्द सूं सोहाये श्री मुखारविंद वारे वे श्री महाप्रभुजी के निकट ही चारो ओर ठाड़े ही बिराजे हैं वैसे और कितनेक भक्तजन तो प्रियवर सूं हूं वेग सूं आगे ही तैल शय्या के पास जायके अपने स्थान कूं रोक रोक के ही ठहरे हैं वा श्री महाप्रभुजी के श्री मुख कमल संबंधी रस ही है जीवन जिनकूं ऐसे वे सगरे ही वा श्री महाप्रभुजी के भक्त वा श्री प्राणनाथ के सुख कूं आछी रीति सूं विचार करिके ही वा वा कार्य कूं करे हैं तब सो परम चतुर ज्ञानी श्री अंग सेवक तो फेर ही श्री महाप्रभु जी के समीप जायके विज्ञापना करे है कि महाप्रभो अब उठिये अथवा श्री विट्ठलराय जी कि पुत्र श्रेष्ठ श्री गोपाल जी के अत्यंत नम्र पौत्र श्री गोवर्धनेश जी या प्रकार सूं उठिवे के लिये विज्ञापना करे है तब विलास पूर्वक श्री महाप्रभुजी उठे है तब दोनों पुत्रन कूं कि पौत्र कूं अपने स्थान में जायवे लिये आज्ञा करे है तब वेहू महाप्रभुन कूं प्रणाम करिके अपने स्थान पर जावे है तब श्री महाप्रभुजी गोपीकांतादि सगरे भट्टन कूं आज्ञा करे हैं तब वे हू नम्रता आदर पूर्वक प्रणाम कूं करिके जावे है ॥ शीतकाल में आधे बंद जाके बांधे हैं ऐसे रूइदार पहेरे छोटे गद्र कंचुक कूं

कि बड़े कंचुक कूं उतारे है उपरना कूं मस्तक पे बांधे है ।।४०।। या समय में सदैव ही श्री महाप्रभुन कूं कोउ कृपापात्र गोवर्धन भट्ट कि सो पंचोली माल जी कि कोउ और कि प्रभुन ने दान करी है योग्यता जाकूं, ऐसो मठपति कल्याण भट्ट हूं सो प्रभुन के हास्य करिवे वारी वार्ता कूं कि प्रभुन के आनंद कूं देवे वारी अन्य वार्ता कूं करे हैं कि स्वयं प्रभुजी अधिक आनन्द कूं देवे वारी वाके हर्ष के अर्थ कूं पूरण करवे वारी वार्ता करे है कि अथवा रस सागर श्री महाप्रभु जी ही स्मरण करिके हास्य वार्ता कूं स्वयं ही अनुकरण के सहित ही करे है ।।४३।। या प्रकार प्राणनाथ अपने सगरे लोकन कूं बहुत प्रकार सूं आनंदित करिके उछल्लित विलास पूर्वक मुख्य मंदिर में कि तिबारी में कि आंगण में शोभायमान वा तैल शय्या के सनमुख पधारे है वा शय्या के निकट चरण वस्त्र श्री अंग सेवक ने धर्यो हतो वांके ऊपर श्री महाप्रभुजी ठाड़े विराजे है तब अत्यंत बुद्धिमान श्री अंग सेवक ले आयो मनोहर परिधान वस्त्र कि छोटी धोती वाकूं श्री महाप्रभुजी पहेरे हैं ।।४६।। और स्तुति के योग्य है उछल्लित भाग्य जाके ऐसे अत्यंत अमूल मधुर मनोहर निर्मल अत्यंत दुर्ल्लभ या समे में हूं प्रिय कूं नित्य ही प्रसन्न करिवे वारो कि भक्त समूह कूं कि कमल जैसे प्रफुल्लित सुंदर नयनवारी सुंदरी समूह कूं अत्यंत प्रसन्न करिवे वारी कोऊ अन्य ने चलाई कि मैंने चलाई ही सो हास्य वार्ता सर्वोपर बिराजमान होय है ।।४९।। या समय में ही कब्हू सुंदर हंसित श्री मुखारविंद वारे श्री महाप्रभु जी विलास पूर्वक कहेते भये कि सुंदर गोपांचल पर्वत के निकट कोउ नदी शोभायमान हती वहां अपने-अपने घरन सूं माथेन पें कलशान कूं धरी-धरी के बहुत ही स्त्रीजन विलास पूर्वक आवे हैं अत्यंत चतुर बुद्धिवारी वे क्षणुंपर्यंत वहां विलास करिके जल कूं भरिके अपने अपने घरन कूं जाय है कबहु मलेछयति अकबर को कोऊ नपुंसक सेनापति पांच हजार घोड़ा सवारन के संग ही वहां आयो ।।५३।। सो या मनोहर नदी कूं कि याके मनोहर तट कूं कि वैसे मनोहर रूपवारी सगरी मृगलोचनी सुंदरीन कूं देखिके तथा विनने आपस में नाना विधि हास्य की करी वार्तान कूं हूं सुनि सुनि के अत्यंत ही प्रसन्न होतो भयो है तब अत्यंत मीठे हास्यमय विनके वचनामृत के पान करिवे की इच्छावारो होयके विन सूं या नदी को नाम कहा है ऐसो पूछतो भयो है तब वेहू कहेती भई हैं कि या नदी को नाम कुमारी है सो नपुंसक सेनापति

विनके वचन कूं सुनिके हास्य सहित ही विनके प्रति कहेतो भयो है कि अब हूं लो यह कुमारी कैसे ठहरी है यह सुनिके वेहू वा सेनापति के प्रसिद्ध नपुंसक भाव कूं जानती हती तासूं वेहू हास्य सहित ही कहेती भई है कि जे जे इहां आये है वे सगरे ही तो सद्रश ही आये हैं याके संग व्याह को करे यह सुनि के मर्मन में विनसूं वैसे स्पर्श कियो सो सेनापति उदासीन मुख होय जातो भयो है और कछु हू उत्तर कहिवे में समर्थ न होतो भयो है परंतु हर्ष सूं दिखावत ही हंसतो भयो है तथा विनके प्रति कछु दिवावतो हू भयो है ॥ श्रेष्ठ बुद्धिमान सो अपने वांछित देश कूं हूं जातो भयो है ॥६१॥ ऐसे अत्यंत मधुर प्रिय के मुख कमल सूं तथा मधुर स्वरूप सूं अत्यंत मधुर हास्य वार्तारूप वचनामृत कूं कान रूप अंजलिन सूं पान करिके सगरे भक्त तथा सगरी सुंदरी मृगनयनी हूं जो भारी ह्रदय में समाय रही है हर्ष कूं प्राप्त भई है । अपने मुखन सूं हास्यरूप सूं निकरे वा ऐक देश कूं ही अनुभव करायके अपने प्रिय कूं हूं हंसावती भई है ॥६४॥ या प्रकार प्रिय के निकट समय अनुसार उछल रही और हू महामधुर अनेक प्रकार की हास्यवार्ता प्रगट होय है ॥६५॥ सो निरदोष महा अपार हास्य वार्ता को बुद्धिमानन सूं लिखि जाय अपितु कोउ नहीं लिख सके है तासूं इतनी हूं यह बहुत है अब हे भक्ताः या महाप्रभुन के प्रसंगोपान तैल शैया के प्रस्तुत प्रसंग को ही पान करिये ॥६६॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ॥१५॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- १६

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १६ लिख्यते ॥

श्लोक -- **लघु परिधानं प्रेयान् परिधाय तथा विभुस्तदरं**

आवध्नात्यु पवीतं कटि प्रदेशे सविभ्रमेहंत ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि तब प्रिय श्री महाप्रभु जी छोटी धोती कूं वेग ही बाँध के यज्ञोपवीत कूं कटि में विलास सहित ही बांधे है ॥१॥ तब ठाडे भये सगरे भक्त कि सगरी मृगनयनी हूं या प्रिय के निर्दोष परम शोभामृत कूं नयनरूप अंजलीन सूं पान करे है ॥२॥ तब श्री महाप्रभुजी तैल शय्या के ऊपर बिराजे है तब या समय में कोउ भक्त प्रवर वा चरण वस्त्र सूं प्रिय के दोनों चरण कमलन कूं चतुरायी सूं पोछे है । याके अनंतर श्री महाप्रभुजी पश्चिम दिशा में प्रकाशमान निर्मल सिराहने पर विलास पूर्वक सिर कूं धारण करिके पूर्व दिशा में चरणन कूं पसार के अभ्यंग के अर्थ पोढे हैं तब श्री अंग में तैल्याभंग करवे लिये दोय भक्तजन वहां बैठ जाय हैं ॥५॥ विनमें कबहु कोउ कबहु कोउ भक्त होय है विन सगरेन के नाम कूं तो यहां वरणन करिवे में हों समर्थ नहीं हूं तथापि कितनेक भक्तन के अमृत के हूं विजय करवे वारे नाम जोकि महामधुर है में कहूं हूं हे रसिक भक्त तुम कान रूप अंजुलिन सूं प्रान करिये, कि सिंहा भाई, कि भगवान दास रसोइया ॥७॥ कि निहालचंद कंबो, विश्राम जलघरीया, कि विश्नुदास भीतरीया, कि महा भाग्यवान् श्री अंग सेवक दिनकर भाई जी तथा माधवदास, ताराचंद, गोपालिया कि रंगीला ॥९॥ कि सो प्रेम जी जनार्दनदास, कि तुलया, कि चतुर सोरमदास अत्यंत चतुर कान्हदास ॥१०॥ चरणदास, कि माधवदास, ठिगणी कि चतुर माधवदास तथा और हू भाग्यवान माधवदास ॥११॥ तथा सुलतान पुरनिवासी सुंदर बुद्धिमान छोटो त्रीकमदास कि छोकरा पद सूं अत्यंत प्रसिद्ध श्यामदास ॥१२॥ कि भैया नाम सूं प्रसिद्ध जो विट्ठलदास है इन ऊपर कहे भक्तन में दोय भक्त श्रेष्ठ श।तकाल में अग्नि सूं अपने दोनों हस्त कमलन कूं तपाय के ऊंचे ठहरे हैं कि ठाड़े होय रहे सेवक के हस्त कमल में स्थिति पात्र

में विराजमान तातें सुगंधी तैल कूं अत्यंत धीरे-धीरे लेवे हैं ।।१४।। तब श्री महाप्रभुजी के दोनों भुजादंडन कूं तथा दोनों पार्श्व कि वक्षस्थल तथा उदर कूं हूं तैल मर्दन करे है और दोय भक्त तो श्री महाप्रभुन के कमर बंधनादि सगरे अंगन कूं आधी रीति सूं तैल मर्दन करे है और अत्यंत सुंदर भाग्यवारे और दोय भक्त तो दोय घड़ी पर्यंत चरणारविंद की तली में तैल्याभ्यंग के अर्थ विराजे है । कबहु कोउ कबहु कोउ भक्त होय है सो इहां अत्यंत मनोहर अत्यंत मंगलरूप विन भक्तन के कितनेक नाम कूं कहूं हूं कि कसुभाई गुजराती, नाथ भाईजी भरुचके तथा सो कृष्णदास कि लक्ष्मीदास दोशी, सुलतान पुर निवासी माधवदास, सिंधजी, भगवानदास, कि परसराम, हरजी, सुंदरदास, बुद्धिमान नारायणजी, त्रीकमदास, बुद्धिमान केशवदास वेंणी, तथा सगरे भक्तन में अत्यंत मुख्य रस सागर तथा प्राणनाथ कूं अत्यंत प्रिय जो श्री मनोहर भाई जी हैं तथा सुंदर भाई गिरधर भाई कि श्रेष्ठ कृष्णदास, तथा भाग्यवान वल्लभ भाई कि माधवदास भाई जी, तथा जाके स्वरूप में श्री गोकुलाधीश जी सुवर्ण में जटित रत्न जैसे निरंतर वैसी शोभा कूं प्राप्त होय है कि विज्ञान के अर्थ प्रकट मूर्खन के अर्थ अत्यंत अप्रकट जो श्री महाप्रभुजी श्री गोकुलाधीश जी है सो जा भक्तराज के रूप में वीणादि के नाद में गीत अक्षर समूह जैसे जो विराजमान हैं ऐसो श्री गोकुलभाई जी, तथा हरिभाई, दामोदरदास कि श्यामभाई, केशवजी, संतोषी भाई कल्याणदास, कि नारायणदास, तुलछी भाई, काहनदास सो रसिकभाई तथा भाग्य निधि लक्ष्मीदास, यह सगरे भक्त तथा और हू सुंदर भाव वारे भक्तजन शीतकाल में मैण के सहित फुलवा ऐसे प्रसिद्ध पुष्प तैल सूं महाप्रभुजी के चरण कमल कूं अभ्यंग करे है ।।२७।। और समय में तो भक्ति सूं आंबला तथा बेला आदि नाम बारे तैल सूं अभ्यंग करे है ।। अबहूं या तैल सूं ही अभ्यंग करे है वहां श्री महाप्रभुजी निरंतर सुखपूर्वक पोढ़ रहे है और भक्त श्रेष्ठ है सो महाप्रीति रस विशेषता सूं बहुत प्रकार सूं ही अभ्यंग कर रहे हैं तब अत्यंत प्रसन्न मनवारे कृपा समुद्र श्री महाप्रभु जी के मुख्य मंदिर में कितनेक बुद्धिमान भक्त तो निकट कि कितनेक तो दूर ही बिराजमान होयके वा तैल शय्या के चारों ओर ही वा श्री महाप्रभुन की उपासना करे है तिबारी में हू कितनेक भक्तजन दोय पंक्ती बनायके कितनेक चारों ओर ठहरे है के वा श्री महाप्रभुन के श्री मुखारवींद संबंधी रस के समुद्रन

कूं विस्तार वारे नयनरूप अंजुलीन सूं उछल्लित होय रही है मधुरता जामें ऐसे पान करे हैं और भक्त तो वा प्रिय की वार्ता कूं करे है वैसे और भक्त तो या समय के अनुकूल नाना प्रकार की महाप्रभुन की सेवा में आशक्त मन होयके वा वा सेवा कूं प्रेम पूर्वक करे है ।।३३।। कितनेक भक्तजन तो अब अवकाश कूं पायके वेग हू अपने घर जायके आवश्यक कार्य कूं वहां करिके न गये जैसे वेग ही आवे है ।।३४।। या समय में सगरे उछल्लित भाग्यवारे चतुरगुणी श्रेष्ठ श्री महाप्रभुन के निकट बैठिके या प्राण प्रभु की निरंतर उपासना करे है ।।३५।। और गुणवारेन में मुकुटमणी जो ध्यानदासजी है सो यह बजाई सारंगी सूं बहुत सुंदर स्वरूप वारे अनेक प्रकार के निरदोष राग तानन कूं वैसे वैसे प्रगट करत रस सागर श्रीजी के कानरूप दोनान में तथा भक्तन के कि चंचल नयनीन के, भक्त सुंदरीन के हू कानरूप दोनान में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करे है तथा विनकूं रोम हर्ष वारो हू करे है वैसे महा मधुर तान तरंगन कूं जब रसिकवर श्री महाप्रभुजी उत्कंठा वारे दोनों कानरूप दोंनान सूं पान करे है । जब कोऊ जनहूं कोऊ वार्ता कूं नहीं करे है जो ध्यानदास राग की मधुरता कूं जब प्रगट करे है । श्री रसिकराय श्री महाप्रभुजी हूं वाको जब पान करे है तब सो मुख्य मंदिर की वैसी तिबारी कि सो आंगण की वे सगरे ही भांति के सो आकाश कि वे सभावारे जन कि वे सगरी सुंदर सो काल की वहां कूं सगरो और पदार्थ हूं मानो गांन करत कि सारंगी कू बजावत ही हंसत नाचत की अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत ही कि या प्राणनाथ कूं बहुत प्रकार सूं स्तुती करत ही चारों ओर प्रतीत होय है ।।४२।। याके अनंतर या ध्यानदास कूं भैया जो सुंदर बुद्धिमान चतुरदास है सो बहुत प्रकार सूं मधुर सारंगी कूं बजावे है और जाकूं प्रियतम ने आछी रीति सूं ही सिखायो है ऐसो द्वारिकादास हू बहुत प्रकार सूं ही बिनकूं बजावे है और या प्राणनाथ कूं प्रसन्न हू करे है ।।४४।। ऐसे गिरिराज निवासी दामोदर दास हूं आयके मधुर वीणा सूं प्रभुन कूं प्रसन्न करे है ।।४५।। ऐसे भगवान दास, नारायण दास, लखमी भाइ यह करहेरी गाम वासी भक्त हू गान करे है ।।४६।। लालानाम हूं वैसे मधुर परहिका कूं कि ढोलक कूं बजावे है कि अमृत कुंडली कूं बजावे है और प्राणनाथ कूं प्रसन्न हू करे है ।।४७।। या प्रकार मुरली तथा बलीराम मिलके नित्य ही गान करे है । दिन में तथा रात्री में प्रिय कूं नित्य ही प्रसन्न

करे है ।।४८।। और सुंदर भक्त ही वृंदावन दास हूं सोहू कबहू गान करत कि कबहु मोन होय रहित कि कबहु कोई वार्ता कूं करत प्रिय प्रभु की सेवा कूं करे है ।। रस सागर श्री महाप्रभुजी करुणा समूह सूं इन सबन की सेवा कूं अंगीकार करे है । श्रेष्ठ भक्त वत्सल यह श्रीजी जब या भक्तन के संग कि अन्य भक्तन के संग वार्तालाप करे है तब तो और सगरे भक्त ही पूर्ण चंद्रमा कूं विजय करिवे वारे कि मंदहास्य वारे वा श्री महाप्रभुजी के श्री मुख कूं टकटकी लगायके दर्शन करत मौन ही होय जाय है । और समीप निवासी श्रेष्ठ भाग्यन सूं शोभायमान निर्दोष जा जा भक्तन के संग यह श्री महाप्रभुजी अमृत की शोभा कूं जय करिवे वारी वार्तान कूं करे है स्मरण मात्र सूं चौदह लोकन कूं पवित्र करि रहे कि भक्तन के नामन कूं हूं कहूं हूं ।।५३।। अत्यंत भक्त पंचोली जी जो जहां कहां माल जी नामसूं प्रसिद्ध हैं तथा खंभालिया वासी कल्याण भट्‌टजी कि मठपति कुल को कल्याण भट्‌ट नाम हू भ्रत्य हू कि बुद्धिमान गोवर्धन भट्‌ट तथा रघुनाथ दास यह सगरे हम या श्री महाप्रभुजी सूं वा वा वार्ता कूं पूछे है तथा करुणारूप नदी के पति की कृपा सागर श्री महाप्रभुजी हूं सदैव ही उतर दान सूं हमारे ऊपर अनुग्रह करे है ।।५६।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ।।१६।।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- १७

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १७ लिख्यते ।।

श्लोक -- **अप्र कदाचित्कौ तुक हा समयी नर्ममर्ममयी**

प्रसरति वार्ता मधुरा शास्त्रार्थ गर्भिता क्वापि ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या समय में कबहु कौतिक हास्य की कि नर्मरस विशेष की मधुर वार्ता पसरे है कि कबहु शास्त्रार्थ की वार्ता कि पुराण संबंधी अर्थ की वार्ता कि स्मृति संबंधी अर्थ की वार्ता कि

कछू समय में शुभाषित पद्यन की वार्ता कि कबहु भाषा काव्यार्थ संबंधी वार्ता चले है कि कबहु कबहु विश्नु पदन के अर्थ विचार कि वार्ता प्रसरे है कि कबहु राजद्वार की हू अनेक प्रकार की वार्ता होय है ॥३॥ कबहु प्रीयतम की अभीलाषा सूं पुष्ट भयो हास्य रस मैंने कि कोउ और ने बढायो जब प्रसरे है तब वा श्री महाप्रभुन कू कि हमारो आपस में अत्यंत बढयो हू अत्यंत पुष्टि हू जो गोस्वामी की दास्य भावरूप स्वर्ण को महापर्वत है सो अत्यंत ही लीन होय जाय है ॥५॥ जब श्री गोकुल रत्न श्री महाप्रभुजी हंसे हैं तब तो पत्थर हू हंसे हैं कि लोहा कि काष्ट कि बज्र हूं हंसे हैं तामें रस सूं कोमल सरल हृदयवारी वे सगरी मृगनयनी कैसे नहीं हंसे जे तो नहीं हंसे है हम नहीं जाने हैं कि वे कोहे ॥७॥ याके अनंतर सो श्री महाप्रभुजी फिरीके शैया के ऊपर वक्ष स्थल कूं धारण करिके पोढे हैं ॥ तब भक्तजन श्री महाप्रभुजी की पीठ कों तैल सूं अत्यंत मर्दन करे हैं कि बल सूं ही श्रीजी के जंघा तथा चरण कि कमर कूं निरंतर अभ्यंग करे है और कोऊ महाप्रभुन को प्रिय भक्त शीतकाल में सावधान होयके पर्यंक के तले वा अंगीठी कूं चतुरता सूं बारंबार वैसे भ्रमावे है कि जैसे वाकूं ताप सगरी शय्या में व्याप्त होय जाय ॥१०॥ वैसे और हू दोय अंगीठी जे प्रथम कही है प्रभुन के सुखदायक वे दोनों सूखे काष्ट के टुकड़े तथा अंगार समूहन सूं भरी भई ही तैल शय्या के दोनो ओर ही चौकी ऊपर निरंतर ही बिराजे है ॥ कोउ चतुर भक्त विनकी रक्षा करे हैं जैसे धूम हू न होय, अग्नी की हू वृद्धि होय वैसे वामे ऐक ठोर काष्ट के टुकड़े यथा योग्य ही डारे हैं और या समय में उत्तम श्री अंग सेवक खवास जी तो बीरी कूं सजावे हैं और जल घरा में जायके या महाप्रभुन के अर्थ ओखद हू सजावे हैं । महाप्रभुन की इच्छानुसार केवल जल सूं भरे कि सूंठ के टुकड़े सूं कि दोय लोंगन सूं कि दोय कारी मिरच सूं कि हरड़ के टुकड़े सूं कि ऐरंड के छिलके निर्मल टुकड़े सूं मिले वा जल सूं भरे छोटे माटी के पात्र कूं अंगीठीन के ऊपर धरे है ॥१६॥ और यह खवास जी सगरे जलपान के पात्रन कूं ताते जल सूं भरके विनमें शौच घर के योग्य पात्र कूं शौच घर में धरे है । शेष पात्रन कूं चतुरता सूं चरण क्षालण की चौखंडी में राखे है, याके अनंतर अत्यंत सुंदर सो श्री अंग सेवक तैल्याभ्यंग के विराम कूं अवसर जब निकट आवे है तो प्रभुन के मुख्य मंदिर में वेग ही जायके

प्रथम ही जोड़के राख्यो जो महाप्रभुन को श्री मस्तक पे बांधवे योग्य पाग है कि पीत वस्त्र है कि छोटी लाल मखमल की मनोहर गादी है वाकुं हाथ में धारण करिके काहू समय में तो पुष्पमाला कूं हूं अपने हाथ में धारण करिके तैल शैया के निकट श्री मस्तक संबंधी सिरहाने के ओर ही नम्रतापूर्वक ही ठाडो रहे है ।।२१।। और तैल्याभ्यंग करिवे वारे भक्त हूं वा तैल्याभ्यंग के विराम अवसर कूं निकट आयो जानके प्रियतम के सगरे अंगन में उछल्लित होय रहे प्रेम बल सूं ही चतुरता सूं अभ्यंग करे है ।।२२।। श्री महाप्रभुजी की पीठि में कि श्री हस्त कमलों की तली में कि नितंब स्थलन में तथा और हू अंगन में बारंबार अत्यंत ही अभ्यंग करे है तब श्री महाप्रभुन की उठिवे की इच्छा कूं जानिके हूं वे भक्तजन श्री अंग स्पर्श संबंधी हर्ष में अत्यंत लोभ वारे तथा या प्रकार के सुख में अत्यंत उत्कंठा वारे होयके ।।२४।। दोय तीन क्षण तो और हूं अभ्यंग करे है, यह इच्छा करत ही प्रियतम कूं कहू वार्ता रस में निमग्न करत चतुरता सूं ही अभ्यंग करे हैं और यह श्री महाप्रभु जी हू विनकूं कि विनके वैसे अभिप्राय कूं जानके वाकूं अनुमोदन करत ही विनसूं अभ्यंग करावे है । याके अनंतर वा वार्ता रस सागर सूं बांहिर निकसिके वासूं उठे है तब बिलास पूर्वक श्री अंग के आलकस कूं निकारत तैल शय्या के ऊपर ही बिराजे है या समय में मस्तक पे बांध्यो जो उपरना है सो कछुक सिथिल होय रह्यो अत्यंत ही सोहावे है । तब मधुर प्रकार सूं चारों ओर विखरे भये जे सुंदर केस हैं सो अपनी प्रगट महाशोभा कूं उछल्लित करे है । वा शैया के ऊपर बीड़ी कूं सुंदर आरोगत वाके रस कूं भीतर धारण करत तथा भक्त समूहन के प्रति कि वा मृगनयनी के प्रति हू वा बीड़ी के अत्यंत मधुर रस को दान करत शोभायमान होय है, या समय में प्रिय के श्री मुख कपोल दंत अधर कि जे अनेक प्रकार की जे चेष्टा है सो कोउ महा अनिरवचनीय मनोहर रस सागर की वर्षा कूं ही अत्यंत रचना करे है । ऐक कोऊ भाग्यवान भक्तराज तो प्रियतम के पीछे ठहरत ही तैल कूं लेकर धीरे-धीरे प्रिय की पीठ कूं मर्दन करे है और या मुख्य मंदीर के द्वार में सगरी वे मृगनयनी तथा भक्तजन हू या प्रिय की शोभा कूं पान करिवे अर्थ इकट्ठे होय हैं उछल्लित होय रहे भाग्य समूह जिनके ऐसे भक्तजन इत उत सूं वेग ही आयके अत्यंत तृषित होय के अत्यंत मनोहर नेत्र कमलरूप अंजुलिन कूं प्रसार के हों प्रथम

होवुं कि हों प्रथम होवुं या प्रकार सूं सबही आगे होय रहे हैं ।।३४।। तथा पीछे ठहरे रहे हम अमृत के समुद्रन कूं विजय करिवे वारी शोभा कूं धारण करि रहे दरशन कूं तो अणुं मात्र हूं नहीं प्राप्त होयगें या विचार सूं आगे ठहर रहे भक्तन कूं अत्यंत प्रेरणा करि रहे तामें भाग्य समुहन सूं ही आज ही हमकूं बड़े यत्न सूं ही आगे स्थान मिल्यो है सो पीछे ठहरे सगरे भक्तन सूं दुःखी होय रहे देह वारे हू हम या स्थान कूं कैसे त्याग करे या प्रिय के उदय होय रहे निर्मल सुंदर श्री मुख रूप पूर्ण चंद्रमंडल को दरशन नहीं करे या प्रकार सूं विचार के कितनेक भक्त तो पीछे ठहरे भक्तन के प्रति अपने स्थान कूं नहीं देवे है । वैसे और बलवारे भक्त तो उछल्लित होय रहे प्रेम सूं बलात्कार हू ले लेवे है । वैसे और भक्त तो कृपा सूं कि प्रेम सूं कि सखा भाव सूं आगे स्थान कूं दे देवे हैं, वैसे और कितने भक्त तो औरन सूं ग्रहण किये हू स्थान कूं बल सूं छुड़ाय के फेर ले लेवे हैं । वैसे और कितनेक भक्त तो देवे की इच्छा करत हू अवकाश के न होयवे सूं नहीं दे सके हैं कितनेक भक्त तो नीचे ठहेर रहे अपने मिलाप वारेंन में प्रेम सूं विन के प्रति अपनो स्थान देकर विनको स्थान ले लेवे हैं ।।४१।। वा प्रिय के श्री मुख संबंधी शोभा के पानरूप चंद्रमा में लोभी होय रहे कितनेक भक्तन कूं कबहूं झगड़ो हू होय है ।।४२।। यामें मृगनयनीन के वस्त्र हू फट जाय है, भूषण गिर जाय हैं, हार टूट जाय हैं अंग मर्दन होय जाय है ।।४३।। किसी भक्त की पाग स्थिल होय जाय है कि कोई भक्त तो ओरन सूं पीड़ित होवत हू पुकार करे हैं, ये स्थान कूं नहीं छांडे हैं ।।४४।। कोई भक्त तो ओर सूं बारंबार कहयो भयो ही शिर कूं झुकावे है वैसे कोइ और तो ऊंचो करे है वैसे और कोई भक्त तो प्रियतम के दरशन में अवकाश कूं टूटत याचना करे है ।।४५।। या भीड़ भाड़ भारी में हूं कोउ भक्त तो प्रियवर के दरशन कूं कोउ प्रकार सूं पायके अत्यंत प्रसन्न होय है कि अपने भाग्यन कूं अत्यंत सहरावे है कि अपने कूं धन्य जाने है ।।४६।। वैसे कोऊ और भक्त तो दरशन सुख के खंड्ति होयवे सूं अत्यंत दुःखी होय है वा स्थान कूं छांडि के और ठोर में जायके दरशन अर्थ अत्यंत उत्साही अन्तः करण वारो होवत दर्शन के अर्थ यत्न करे है ।।४७।। ऐसे बहुत प्रकार सूं ही सगरे वे वा प्रिय के मुख चन्द्रमा कू दरशन करत वासुं प्रगट होय रहे कोउ अनिरवचनीय महारस कूं अत्यंत पान करे है ।।४८।।

याके अनंतर मुख्य मंदिर के द्वार के किवाड़ के समीप बिराजमान जो स्वेत बिछानां है जाके ऊपर कोमल मनोहर गादी बिराजे है ऐसी जो छोटी चोकी है वाकूं तैल शय्या के नीचे राख के कोऊ उछल्लित प्रेम वारो भक्तजन जो वा पर प्राणनाथ के चरण धरण की आज्ञासूं ठहेर रहयो है तब श्री महाप्रभुजी हू कछुक आगे सरक के वा चौकी के ऊपर चरण कूं धारण करिके वाके मनोरथ कूं पूरण करे है तब श्री महाप्रभुन के श्री मुखकमल उत्तर दिशा के सनमुख है, और पीठ में पीछे ठहेर रह्यो कोउ भक्त मधुर प्रकार सूं मर्दन कर रह्यो है कि और कोउ भक्त श्रीजी के कमर में कि अंगुष्ट और हाथन की तली में चतुरता सूं बल सूं मर्दन कर रह्यो है कि वैसे और कोउ भक्तजन परम कोमल हाथन सूं दोनों चरणन कूं उछल्लित प्रेम पूर्वक सेवन करि रह्यो है ॥५३॥ सगरे क्षणन के चक्रवर्ती राजरूप या क्षण में सगरे हू भाग्यवारे भक्त तथा हिरण नयनी सुंदरी हू वा प्रिय प्रभु के श्री मुख कमल सूं गिर रहे कि वैसे सगरे अंगन सूं गिर रहे कि बहुत प्रकार सूं पीछे दौड़ रहे हू वचनन सूं स्पर्श करवे में हूं नहीं आयवे वारे कि वचनन सूं वर्णन में न आयवे वारे कि अनुभव रूप सागर में हूं न समायवे वारे हू ऐसे सर्वोत्तम मधुर कि रस भावन सूं भरे भये अनिरवचनीय चमत्कारन सूं उछल्लित होय रही रोमावली पूर्वक ही निरंतर पान करे है ॥५६॥ तब श्री महाप्रभु जी श्री मस्तक सूं विलास पूर्वक ही उपरना कूं उतारे है तथा शैय्या के ऊपर धरे है, कोउ भक्त तो वेग ही याकूं उठाय के आछी रीति सूं घरी करिके हाथकमल में धारण करिके ठाड़ो रहे है ॥ श्री प्राणनाथ जी हस्तकमल सूं श्री मस्तक के जूड़ा कूं छोड़े हैं, सगरे केसन कूं पसारे हैं, बारंबार दोनों हस्त कमलन सूं विस्तार वारे करे हैं, तब कोऊ भक्त के सजाये दोनों हाथन पर प्रियवर श्रीजी उछल्लित कृपा सूं विलास पूर्वक ही चर्वित तांबुल कूं कि प्रसादी बीड़ी कूं पधरावे हैं कि ॥६०॥ करुणा प्रेमरस कूं सागर रूप यह श्री महाप्रभु जी अत्यंत प्रसन्न होयके उछल्लित रोमावली वारे किसी भक्त के हाथ में स्वयं ही देवे हैं ॥६१॥ काहू समय में वा भक्त सूं प्रायः चंद्रमुखीजन हूं विनय आदर पूर्वक भाव समूह सहित हजारन निधी कूं जैसे होय वैसे या प्रसादी बीड़ी कूं लेवे हैं ॥६२॥ जो श्री अंग सेवक हाथ कमल में सुंदर श्री मस्तक पे बांधवे योग्य पाग फेंटा कूं लेकर वाके समय कूं देखत ठहेर रहयो हतो सो अब वा समय कूं पायके

वा पाग के बंधायवे लिये वाके मुख्य अंचल कूं हस्त कमल सूं धारण करत वेग ही प्रथम प्रभुन के श्री हस्त में मखमल की गादी कूं चतुरता सूं देवे है ॥६४॥ बांये श्री हस्त में श्री महाप्रभुजी चतुरता सूं वाकूं लेकर वाकूं अत्यंत सुधार के श्री मस्तक पे धारण करे हैं, पाछे वा खवास जी ने अर्पण किये पाग के मुख्य अंचल कूं वा गादी के ऊपर विस्तार के श्री मस्तक पर पुष्प माला तथा पीरे पाट के वस्त्र सहित ही उछल्लित होय रहे विलास पूर्वक पाग कूं बांधे हैं । या प्रकार प्रिय जब अत्यंत सुन्दर अत्यंत कोमल तंतुवारी स्वेत पात्र कूं बांधे है तब वाकी जो किरण मंडली है सो गंगा के तरंगन सूं हू मनोहर ही प्रकाशमान होय रही है वाके नीचे जे केश समूह के उदय होय रहे परम शोभा के समूह है वे तो श्री यमुना जी के तरंग समूहन के शोभा समूह कूं लूटे हैं याके भीतर उछल्लित होय रहे सुंदर पीतांबर सूं इलावृत की शोभा समूह के हरिवे वारी मधुर शोभा ही प्रगट भई है । वाके भीतर बिराजमान नाना प्रकार के पुष्पन की माला के अपार सुगंधी समूह सूं भरे भये पीरे स्वेत लाल हरित शोभा समूह की रेखा बहुत प्रकार सूं ही निरंतर दोड़ रही है तथा वा फूल माला में बिराजमान विजय कि गुलाब जाति फूलन के, कि बकुल आदि फूलन के अत्यंत पुष्ट जे सुगंधी समूह है ॥७२॥ वे तो भक्तन कूं अत्यंत ही सुखी कर रहे हैं कि रोम हर्ष वारो ही कर रहे हैं तथा वामें जो लाल मखमल की जो लालिमा है सो तो सुंदर कांच के पात्र में धारण किये सरस्वती के जल प्रवाह जैसे निरंतर उच्छले है तामें जो इन्द्र गोप समूह के विजय करिवे वारी कांति है सो तो मृगनयनीन में निर्मल अमृत के समुद्रन कूं अत्यंत वर्षा करे है ॥७४॥ चूर्ण किये है असंख्य कामदेव के अभिमान रूप पर्वतन की पंक्ति जाने, कि अनेक प्रकार के विलास रस के जे समुद्र रूप हैं ऐसो जो श्री महाप्रभुन को स्वरूप है सो या समय में अत्यंत सर्वोत्कर्ष सूं शोभायमान होय है तथा रसात्मिक सुंदरीन के धैर्य रूप हस्ती समुहन कूं लीला पूर्वक बिदारण करिवे में सिंह रूप जो श्री महाप्रभुजी हैं सो जब तैलाभ्यंग नहीं करे हैं तब हजारन पद्मन प्राणनसूं प्रिय श्रीजी सुख शय्या पर चढ़िके पीछे ही या प्रकार सदैव ही पाग कूं अंगीकार करत बिराजे हैं ॥७७॥ या समय में भगवान श्री गोकुलाधीश जी अपने कृपापात्र भक्तन के संग हंसि-हंसिके हास्य की अनेक प्रकार की वार्तान कूं विलास पूर्वक

करे हैं। भक्तजन हू वा श्री महाप्रभुजी के स्वरूप रूप कमल सूं गिरि रहे रस के असंख्यात अत्यंत गंभीर अपार मनोहर समुद्रन को पान करे है ।।७९।। अथवा यह रसिकन के चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी सुंदर बाज रही सारंगी के मधुर नाद कूं कान रूप अंजुलीन सूं पान करि रहे ।।८०।। अथवा करेटी गाम निवासी उछल्लित प्रेमवारे अपने बंधु सहित आयके इहां निवास करि रहे भगवानदास के किये गान कूं सुने हैं कि वाकी बेटी सो ताके किये गान कूं सुने है कि मुरली बलीराम प्रथम तो गान नहीं करते हते अब तो नियम सूं चतुरता सूं ही गान करे है कि ऐसे पाग बांधवे के मधुर मनोहर समय में प्रिय के मथुरादास भक्त के किये पद कूं केदार नाम राग में उछल्लित भक्तिवारे कि अत्यंत मधुर कंठवारे वे मुरली बलीराम गान करे है। राग केदारो धन्य तुम प्रताप वल्लभ कुल वल्लभ, हे श्री वल्लभ महाविभो, गोकुल नायक, सुरलोक, भुअलोक, नागलोक पटंतर तिंहूपुर को लायकारा अगणित मार्तंड प्रचंड कर आखंडल के गर्व हाय कारू द्विजवर वपु द्विज कुल के कल्पतरू जन मथुरा के सुखदायक है। याको अर्थ है -- श्री वल्लभ कुल में वल्लभ अथवा श्री वल्लभकुल श्री गोस्वामीजी कूं वल्लभ अत्यंत प्रिय है श्री वल्लभ महाप्रभो, हे श्री गोकुलनायक महा रसरूप महाप्रभो, आपको प्रताप धन्य है, देवलोक, मनुष्य लोक कि नागलोक में हूं ऐसो को है जो श्री आपकी उपमा में योग्य होय अपितु कोउ नहीं है। हे श्री महाप्रभो श्री आपको जो प्रताप है सो असंक्षात सूर्य की किरणन सूं हूं अत्यंत प्रचंड किरण वारो है। बड़े-बड़े चक्रवर्तीन के हू गर्व कूं नाश करिवे वारो है सो हे द्विजवर स्वरूप ब्राह्मण कुल में कल्पवृक्ष स्वरूप श्री आप हैं मथुरादास कहे है मथुरा नाभादास कूं तथा सगरे दासन के हूं सुख के दायक श्री जी है ।।८४।। ऐसे या प्रकार के अर्थ वारे सगरे ही पदन कूं कृपा सागर भगवान श्री जी बड़े प्रेम सूं सुने है याकुं सुनिके करोडन चंद्र कूं विजय करिवे वारो है मुखारविंद जाको ऐसे सो श्रीजी उठवे कूं कबहूं न वांछा करत ही उठे हैं ।।४५।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ।।१७।।

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- १८ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १८ लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथयः स्वभुतरीय प्रीयेण मौलेरह्यो पूर्बे उतरि**

तंद धानोड निष्ट त्समयं प्रती दामांणो वं ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि अब श्री महाप्रभुजी ने श्री मस्तक सूं जो प्रथम वड़ो कीयो उपरना हतो वाकूं लेकर समय कूं देख रह्यो जो यहां भक्त श्रेष्ठ बुद्धिवारो सो वा समय कूं पायके या उपरना के अग्र भाग कूं या श्री महाप्रभु जी के श्री हस्तकमल में धारण करावे है श्री महाप्रभुजी तो वहां विराजत ही दक्षिण हस्त सूं यज्ञोपवित कूं दक्षिण कान में सुंदर विलास पूर्वक धारण करिके उपरेना कूं लेकर वा पाग के ऊपर बांधे है या समय में सुरत गांव वासी जनार्दन दास दीपक कूं सजाय के वहां ले जाय है कि तापीपुर निवासी कल्याण पारख कि कोउ और भक्त दीपक कूं सजाय के वहां ले जाय है तब प्राणनाथ के सुंदर महाप्रकाश कूं पुष्ट भयो जो या दीपक को प्रकाश है सो या श्री महाप्रभुजी के परम शोभा कूं प्रकाश करे है या समय में प्रिय के महामधुर वैसे श्री मुखचंद्र सूं कि कुंडल युगल सूं के तुलसी माला मणी मालादि सूं कि वैसे मनोहर दोनों भुजदंडन सूं कि किंवाडन की शोभा सर्वस्व हरिवे वारे परम शोभायमान वक्षस्थल सूं कि युगल चरण कमलन सूं कि वैसे वैसे और हूं अंगन सूं कि मंद हास्य कूं कि बहुत प्रकार के विलास समूह सूं कि वावा भक्तन के हू वस्त्र अंग भूषण आदि सूं कि वैसी महा मधुर रसात्मिक हरिण नयनी सुंदरीन के वा वस्त्र अंग भूषण आदि सूं महामधुर आपस में शोभायमान होय रहे बहुत प्रकार सूं बढ़ि रहे अत्यंत पुष्ट अद्भुत सर्व सुखदायक निरंतर मनोहर सुंदर ही किरण समूह इहां प्रगट होय है तब बुद्धिमान श्री अंग सेवक जो जहाँ कहा नीमा नाम सूं प्रसिद्ध रूइदार सुंदर उछल्लित कांति समूह वारे छोटे नीमा कूं लावे है तब प्रिय श्रीजी वाकूं पहेरे हैं तब भाग्यावान ऐक भक्त तो कोमल मनोहर पनहीं कूं नम्रता पूर्वक लेकर ठाड़ो है वा पनही के भीतर की शीतलता निवृत्ति अर्थ अपने दोनों हाथन

कूं वाके बीच धारण करिके श्री महाप्रभुजी के उठवे के समय कूं देख रहयो है या समय कूं पाय के श्री महाप्रभुजी हू जब उठवे के अर्थ चरणन कूं आगे पसारे है तब सोहू वा पनहीं कूं आगे धरिके चरणन में धरावे हैं तब कोउ भक्त श्रेष्ठ चरण चोकी कूं सरकाय के वेगही तैल शय्या के नीचे धरे है तबही प्राणनाथ श्री महाप्रभु जी शोभायमान हैं सुंदर पनही जिनमें ऐसे चरण कमलन कूं भूमि पर धरिके शैय्या सूं उठे हैं तब वो महा भाग्यवान पीछे ठहेर रह्यो श्रेष्ठ सेवक हू वा श्री महाप्रभुजी के रूइदार सुंदर छोटे नीमा कूं चतुरता सूं समर्पे है ।।१७।। श्री प्राणनाथ श्रीजी तो हास्य रूप सहित शेषवार्ता के अर्थ घड़ी की आधी घड़ी वहां ठाड़े होवत ही अपने स्वरूपानंद रसके समुद्रन कूं निरंतर स्थल धारान सूं वर्षा करत ही विराजमान हैं, तामें ।।१८।। वचन रूप अमृत कूं वर्षा करि रही है सुंदर रसना जाकी, कि सघन लालिमां वारे मनोहर अधर पल्लवन सूं वाके भ्रुअ वारी सुंदरीन के अंतःकरण में चुंबन के उत्साह कूं जो विस्तार वारो करि रह्यो है कि तैल में बिराजमान नाना प्रकार के सुगंधी समूहन सूं अत्यंत मर्दित होय रहे सुंदर कोमल तंतु वारे निर्मल परिधान कूं कि छोटी धोती कूं जो धारण करि रह्यो है कि रूइदार नीमां के रूइदार बंधन कूं विलास पूर्वक श्री हस्तकमल सूं जो बांध रहयो है कि विन बंदन में ऐक बंद कूं अंगुली सूं अत्यंत मधुर प्रकार सुं ही जो बजाय रहयो है कि कोउ कूं लालन करि रहयो है कि वावा भक्तन के संग वार्ता कूं करि रहयो है कि वा वा प्रकार सूं ही रसात्मिक सुंदरीन कूं कि भक्तन कूं दीर्घ हर्ष के सागर में जो निमग्न कर रहयो है कि कितने भक्तन कूं नीमां की कांती सूं कि कितनेक कूं तो धोती की शोभा सूं कि कितनेन कूं मुखचंद्र की परम शोभा सूं कि वक्षस्थल की, कि भुजदंडन की शोभा सूं कि मणि जटित मुद्रिका की कांती सूं कि कितनेक भक्तन कूं तो पनही युगल की मनोहर कांति सूं कितनेन कूं तो वचनामृत सूं कि मनोहर मंद हास्य की कांती सूं कि भ्रुअ विलासन सूं कि कितनीक सुंदरीन कूं नाभी मंडल की शोभा सूं कि कितनीक सुंदरीन कूं रस सूं अत्यंत सघन मनोहर कटाक्षन सूं के उदर की कोमलता सूं कि रोमावली की शोभा सूं कि दीर्घ हर्ष सागर में निमग्न करत सगरे जगत कूं ही रस समुद्रमय करत ही श्री महाप्रभुजी पधारवे लिये प्रारंभ करे हैं और सगरी जे रसिक हरिण नयनी सुंदरी है सो उछल्लित भाव सूं प्रेम

मनोहर हास्य सहित ऐकांत में श्रीजी के चरण युगल कमलन कूं कोमल हस्तन सूं स्पर्श करिवे अर्थ चिर सूं चाहना करि रहे हैं तथा वा प्राणनाथ जी के वैसे मधुर सुंदर श्रीमुख कमल कूं ऐकांत में दरशन करिवे की इच्छावारी है तासूं वा वा महेद कृपापात्र भगवदीय द्वारा कि वैसे अधिकारी जी द्वारा बड़े प्रयत्न सूं अपनी विज्ञप्ती कूं श्री महाप्रभुजी के कानों में अतिथिरूप बनावे हैं कि सुनावे हैं तब करुणासागर पति रसिकवर श्रीजी सूं बड़े यत्न सूं आज्ञा कूं प्राप्त करत भई है समय कूं विचारत ही इहां आयके एकांत में निश्चल ठहेर रही है ।।४०।। तामें प्रिय कूं सुखदायक सगरे सुंदर दिव्य अमूल्य वस्त्र आभरण पहेर रही है कि अपने कूं वैसे वैसे छिपाय रही, सखी के संग प्रफुल्लित कमल कूं विजय करवे वारे या प्रिय के श्रीमुख कूं पलक रहित ही देखत जे ठहेर रही हैं किनके अंगन में विस्तार वारे कितने ताप समूह तो शांत होय रहे हैं कितने तो या समय में बढ़ जाय है कि सो सुंदर समय कब होयगो कि अव्यर्थ होय रहे मेरे हस्त जामे या श्रीजी के चरण कमल के स्पर्श सूं कृतार्थ होयगे कि या श्रीजी के श्री हस्त पल्लव कूं महारस समय स्पर्शरूप अमृत के प्रवाह सूं सिंचन कर्यो मेरो यह तन हू कि शरीर हू सफल होयगो कि प्रिय के वियोग सूं अब सब प्रकार सूं शुष्क होय रहे मेरे अंग हू वा प्रिय के हर्ष में उपयोगी होयके सर्वोपर ही बिराजमान होय जायगें अहो सुंदरीन के ताप हरवे में चतुर या प्राणनाथ के विना हूं तो ऐक क्षण हूं नहीं गुजार सकूं हूं ऐसे आकाश कूं स्पर्श कर रही विनकी उत्कंठा कूं तथा क्षण-क्षण में बढ़ि रहे विनके भाव कूं कि वैसे भावना कूं करि रहे विन प्रियान के शरीर और अंगन कूं हू वा चतुर सखी की जो सावधानता है सो अत्यंत चतुर जनो के आगे प्रकट नहीं होयवे देवे है तथा वैसे वा प्रिय के अभिप्राय कूं हू प्रकट नहीं होयवे देवे है याके अनंतर बाहिर पधार रहे प्रिय कूं जान रहे सगरे भक्तजन वा प्रिय के श्री मुखार विंद की सनमुखता रूप समुद्रन के पान करिवे में सावधान हृदय वारे तथा वैसे-वैसे उछल्लित वारे होयके तिबारी में कि आंगण आदि में वा प्रिय के पधारवे के मार्ग कूं छांडि के दोय पंक्ति बनायके उछल्लित होय रही दीनता सूं ही ठहेरे है । कितनेक भक्त तो कितने भक्तन के आगे ठहेरे हैं ऐसे तिबारी में कि मनोहर वैसे वैसे विस्तार वारे आंगण में जलघर कि अटारी में कि वाकी सीढीन में कि बड़ी काष्ट की सीढी में

ठहेरे हैं या प्रकार सूं भक्तन सूं भर रहे वा मंदिर में आपस में वा वा प्रसंग वार्ता कूं करि रहे विनकूं अत्यंत मधुर फल हू पसरे है वेसे अबहु कितनेक भक्त तो अत्यंत उत्साही होयके दौड़-दौड़ के आय गये हैं सो आगे ठहेरे भक्तन सूं मिलिके ठहेरे हैं कि विनके आगे हू जायके ठहेरे हैं कि अटारी पर जायके वा प्रिय के दरशन अर्थ सावधान होयके ठहेरे हैं ॥५६॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ॥१८॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- १९ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- १९ लिख्यते ॥

श्लोक -- **निज मुख्य रसानिकेतन मध्यादथ गोकुलाधीशः**
मत्त गजराज लक्ष्मी स्मर विलासणिवः प्रेयान ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि मत्त गजराज की शोभावारे उच्छलित विलास के सागर रसिकन के चक्रवर्ती पुरुषोत्तमन के मुकुटमणि भगवान प्रिय तथा अर्बन काम के विजय करवे वारी जाकी शोभा है ऐसे श्री विग्रह की मधुरता समूह वारे कि रसिक नितंबनी सुन्दरीन के धैर्य रूप पर्वत के विदारण में वज्र रूप जे श्रीजी हैं सो आगे प्रकाशमान दीपक के प्रकाश सूं सुन्दर होय रह्यो है सौदर्य जिनको ऐसे ही अपने रसमय मंदिर के मध्य सूं बाहिर पधारे हैं ॥ तब अपने भक्तन के नयन रूप कमलन में वेग ही मनोहर अमृत के हजारन समुद्रन कूं वर्षा करि रहे कि मंद हास्य रूप रत्नन सूं जटित कोउ कोउ वचन रूप मुक्तान कूं भक्तन के कि वा भक्त सुन्दरीन के कानों में अवतंश रूप कर रहे हैं ॥५॥ कि शोभायमान वा रस मंदिर की सुन्दर देहरीन कूं शोभा समूह सहित उल्लंघन करिके मुख्य मंदिर सूं जब प्राणनाथ रसिकरायजी बाहिर पधारे हैं या समय में सगरे भक्त ही प्रेम सूं हाथ कमलन सूं अपने सगरे सर्वस्व कूं कि अपने कूं हुं वा प्रियवर पर वारण करि रहे, कि भीतर ठहेरे हू सगरे ही भक्त वा प्रिय के गुणन सूं आकर्षण किये जैसे

होय वैसे ही धीरे धीरे वा प्रिय के पीछे ही आवें हैं तामें कितने भक्त तो वा श्रीजी के रूप रसपान की तृषा सूं भरे हैं और कितने तो वचन माधुरी के पान करिवे लिये तृषा सूं मिले हैं वैसे और कितने तो वा प्रिय वर के विलास समूह के अनुभव करवे में उत्साही हैं तथा दान में अत्यन्त उदार श्री महाप्रभुजी अपने स्वरूप सूं विलास पूर्वक तिवारी कूं शोभायमान कर रहे हैं कि अपने भक्त राजन के हृदय सूं अपने स्वरूप कूं ग्रहण करायवे लिये कि दोनों कानों सूं अपने वचनामृत कूं ग्रहण करायवे लिये कि भक्तन के नयन रूप अंजुलिन सूं अपने सौंदर्य कूं ग्रहण करायवे लिये कि विनके नासिकान सूं अपने श्रीअंग संबंधी सुगंधी समूह कूं ग्रहण करायवे लिये उच्छलित कृपा समूह सूं क्षण के अर्धक्षण मात्र वा तिबारी में विलंब हू कर रह्यो है वे भक्तजन हू वा श्री महाप्रभुजी कूं उच्छलित कृपा के समूह सूं रोमहर्ष पूर्वक वा प्रथम कहे अपने हृदय, कान, नयन, नासिकान सूं वा श्रीजी के स्वरूप वचनामृत सौंदर्य सुगंधी कूं वेग ही ग्रहण करें हैं ।। तब वा श्रीजी के मंद हास्य विलास तथा अवलोकन कि वैसे विलास समूह के कि वैसे और और हू रसमय विलासन के भीतर विराजमान कोउ अनिरवचनीय मधुर रस कूं बल सूं ही पान करें हैं अब या प्रिय के हास्य सूं कि मंद हास्यन सूं कि कटाक्ष तथा मधुर अविलोकन कि मधुर वचन कि कृपा समूह कि विलास तथा उल्लास तथा श्री मुखचंद्र के प्रसाद कि अंतरंगन के विलास के रस के उछल्लन सूं कि भक्तन के अनुराग कि रोम हर्ष कि नम्रता तथा सेवा कि वैसी तत्परता कि वा प्रिय की ही सुन्दरता में निमग्नता कि वा प्रिय के वचनामृतन के पान की विशेष उत्कंठान सूं मृगनयनीन के स्तंभ रोम हर्ष स्वेद स्वरभंग कंप समूह कि विवर्णता कि हर्ष कि अश्रु कि आनंद विशेष के संबंधी हास्य की ।।१९।। उत्कंठा मधुरता सुन्दरता कि विलास सूं कि वैसे और हू विनके भावन सूं जटित भयो मधुर सगरे समय कूं हू चक्रवर्ती रूप कि अमृत के हू ऐश्वर्य कूं कि विजय करवे वारो जो मनोहर सुवर्ण के सार कूं हू सार रूप जो कोउ अनिरवचनीय समय है सो सुन्दर प्रगट होयके अपने में वा भक्तन कूं कि विन सुन्दरीन कूं निमग्न करिके तथा या प्रिय के अत्यन्त गंभीर अत्यन्त मधुर स्वरूप में हू अत्यन्त निमग्न करावें हैं कि वा प्रिय में लग रह्यो है मन जिनको कि सगरे व्यासंग सूं जे रहित हैं कि प्राणनाथ ही है एक लक्ष जिनको, कि

वा प्रिय के ही दर्शन में तत्पर होय रहे हैं नयन दोनों जिनके कि जल बिन मछली जैसे तड़फ रही है कि वा प्रिय के दर्शन रूप भोजन अर्थ जे अत्यन्त क्षुदार्थ हैं कि करोड़न अर्बन उपवास जिनने किये हैं कि वा प्रिय के वचन रूप सुन्दर गोल आमला जैसे स्थूल अनन्त मुक्ता फलन सूं रचना किय कर्ण फूलन के निमित्त दरिद्रण जैसे अत्यन्त लोभी होय है कान रूप दिल जिनको कि ।।२४।। वा प्रियतम के श्रीअंग समूह के स्पर्श रूप हजारन महा निधि के चुरायवे में जिनके मन कमर बांध रहे हैं कि सावधान होय रहे हैं कि जे चित्र जैसे अत्यन्त निश्चल होय रही हैं ऐसी कितनीक मृगनयनी या समय में वा स्थल में अत्यन्त ही शोभायमान होय हैं तब या प्रिय के विलास हास्य पूर्वक मधुर कछुक वचनामृत के कहिवे पर निकट ठहरे हू कितनेक भक्तजन तो अत्यन्त ही समीप ही आयके अत्यन्त सावधान होय रहे हैं ।। कान रूप दोना जिनके, ऐसे वे वा प्रिय के मुखचन्द्रमां कूं आदर समूह सूं देखत देखत ही वा प्रिय ने चलाई कि वाके कृपापात्र कोउ और भक्त ने चलायी मनोहर हास्य वार्ता सूं प्रगट होय रहे अमृत कूं हू विजय करवे वारें वा मनोहर वचनामृत कूं प्रफुल्लित होय रहे कपोल कि नयनकमल जामें भलीभांति शब्दायमान होय रह्यो है उदर जामें, ऐसे ही आदर समूह सूं पान करें हैं कि ।।२९।। तब हंसि रहे प्रिय के स्वरूप कूं हृदय सूं धारण करिवे में कि प्रिय के सर्वोपर प्रकाशमान वचनामृत कूं दोनों कानों सूं धारण करिवे में कि सर्वोपर प्रकाशमान सुगंधी समूह कूं नाशा पुट सूं धारण करिवे में वे सगरे भक्त अत्यन्त ही व्यग्र होय जाय हैं कि अत्यन्त बढ़ि रहे वा हास्य के आवेश सूं स्वयं हंसत कि बारंबार गिरें हैं कि परें हैं कि कांपें हैं कि कितनी भक्त सुन्दरी तो प्रियतम के लीला अनुभव रूप कल्पवृक्ष के फल सूं प्रगट होय रहे अनिरवचनीय कोउ मनोहर बढ़ि रहे कोउ रस कूं हू कंठ भर ही पान करें हैं कि कितने भक्त तो प्रिय के निकट स्थिति कूं न पायके दूर ठहेरत हू या प्रकार की अत्यन्त मधुर वार्ता कूं कछु कछु सुनत कछु कहिके प्रसन्न होय हैं या प्रकार सूं अत्यन्त ही दुःखी होवे हैं कि हा हा या प्रिय के हास्य वार्ता में अल्प भाग्य वारे हमकूं स्थिति न भई भाग्य वारेन के चक्रवर्ती यह भक्त तो महाप्रभुन के वा समीप स्थिति कूं प्राप्त भये हैं तासूं हास्यमय या वार्ता कूं सुन रहे हैं कि वा महाप्रभुन के आगे वा वा प्रसंग कूं हू सुन रहे हैं कि वा महाप्रभुन के

आगे वा वा प्रसंग कूं हू वहां कह रहे हैं तथा वा श्री महाप्रभुजी ने दान किये उत्तर कूं हू कान रूप दोनान सूं पान करें हैं कि ॥३६॥ नयन कमलन सूं वा प्रिय के स्वरूपामृत को संग्रह हू करें हैं, यासूं वे हंसे हू नहीं हैं किन्तु महाप्रभुन के स्वरूप कूं ही केवल देखे है ॥३७॥ ऐसे या स्थल में सगरे भक्तन में रस की मधुरता कूं प्रिय श्रीजी वर्षा करिके सबन के ही हृदय, कान, नयन कमलन कूं वेग ही हरिके कि आगे ठहेर रहे भक्तन के भाग्यन सूं आकर्षण कियो है चित्त जाको, कि अपनी कृपा रस के तरंगन सूं जे प्रेरणा कियो भयो है ऐसो सो श्री महाप्रभुजी आगे चरणन कूं धारण करें हैं तब भक्तन के अमृत कूं हू विजय करिवे वारे मुख कमलन सूं ये अनिरवचनीय मधुर जय जय शब्द प्रगट होवत ही भूमि तथा अंतरिक्ष कूं पूरण ही कर देवें हैं ॥४०॥ या सघन समाज में जो सुन्दरी तिल मात्र हू आगे चरण कूं धारण करिवे कूं प्राप्त होय है सो उत्साह रोम हर्ष कूं प्राप्त होय है ॥४१॥ तब पद पद में ही श्री महाप्रभजी के स्वरूप सूं मनोहर मधुर शीतल दधि कोउ अनिरवचनीय सुगंधित रस की धारा उदय होय है ॥४२॥ तामें हू वा श्रीजी के स्वरूप के ऊपर अत्यन्त शोभायमान होय रही पाग सूं कि उपरना सूं कि अकल समूह सूं कि कुमकुम के तिलक सूं कि दोनों भ्रूअ सूं कि नयन कमल दल सूं कि मनोहर तीक्ष्ण कटाक्ष वाणन सूं के मणि जटित कुंड्लन की तांडव सूं कि वाकी कांति समूह सूं कि तेज समूह रूप कि नाशा वंश सूं कि मूछन की श्याम तरंगन सूं कि हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रहे कपोल युगल सूं तथा मनोहर दंत पंक्ति सूं कि मंद हास्य सूं तथा बिंब लाल कूं हू विजय करवे वारे अधर पल्लवन सूं कि अत्यन्त प्रकाशमान होय रहे चिंबुक सूं कि शोभा समूह के निवास रूप श्रीकंठ सूं कि महा शोभायमान वा श्रीकंठ के बांके होयवे सूं कि ॥४६॥ मुक्ताहार सुवर्ण माला तुलसी माला तथा पुष्प मालादि सूं कि विशाल वक्षस्थल सूं कि वाके चमत्कार तरंगन सूं कि मनोहर निमर्याद सुन्दर भुज दंडन सूं कि अंगद कंकण मुद्रिकान सूं शोभा सूं कि उदर की कोमलता सूं कि कमर की सूक्ष्मता सूं कि धोती सूं तथा रुईदार छोटे लाल रंग वारे नीमा सूं कि परम शोभा प्रवाह सूं कि उर युगल सूं कि वैसे मनोहर चरण कमल युगल सूं तथा पनही युगल सूं कोऊ अनिरवचनीय श्रृंगार स्वरूप शीतल सुगंधित मधुर धारा विशेष उच्छलित होयके जामें सगरे भक्त अत्यन्त

आर्द्र होय जाय हैं ।। मृगनयनी सुन्दरी तो वामें निमग्न होयके कबहू नहीं निकस सकें हैं किन्तु वाके तल में ही प्रवेश कर जाय हैं ।।५१।। ऐसे प्रिय रससागर श्री महाप्रभुजी लावण्य के समुद्रन कूं वर्षा कर रहे चरण कमल कूं ऐसे धारण करत ही तिबारी की भूमि कूं विशेष हू रोमहर्ष वारी करत विलास पूर्वक ही वा सरस वेदी के ऊपर चढ़िके विराजमान तथा भाव समूह सूं वामें विलंब करिके चरण कूं धारण करत तथा श्रीकंठ कूं मुस्कायके कछुक कहि रहे कि मधुर मंद हास्य करि रहे या श्री महाप्रभुजी की जितनी महा शोभा प्रसरे है सुन्दर नयन वारी स्त्रीगण नयन कमलन सूं कंठ पर्यन्त वा शोभा कूं पान करत वाके ऊपर अपने सर्वस्व कूं तथा अपने कूं हू वार डारें हैं ।।५५।। कितनी अत्यन्त चतुर कमलनयनी तो अन्य सगरे अर्थ की तुच्छता कूं हृदय में धारण करके तथा अपने कूं हू अत्यन्त तुच्छ जानके वाकूं धारण करिवे में अत्यन्त लजावत ही वाकूं वारे नहीं हैं किन्त वा श्रीजी की परम शोभा कूं केवल पान ही करें हैं वा परम शोभा-द्वार सूं मन सूं वा प्रिय के स्वरूप में प्रवेश करिके परम चतुर सुन्दरी वे कहा कहा नहीं करें हैं मधुर अधर में चुम्बन करें हैं विशाल वक्षस्थल में गाढ़ आलिंगन करें हैं ।।५८।। भावरूप समुद्र की लहेरीन सूं प्रेरणा करी वे सुन्दरी वा श्रीजी के अत्यन्त उच्छलित अधर की लालिमा प्रवाह में कि अत्यन्त प्रफुल्लित कपोल युगल में दंतक्षत हू करें हैं तथा वा भाग्य वारी वेदी के ऊपर जो अत्यन्त शोभायमान है कि लक्ष्मी की शोभा कूं विजय करिवे वारी गौर अंग वारी प्रियान सूं जो चारों ओर मिल्यो है कि चंचल नयन वारी सुन्दरी जाकी शोभा को पान कर रही हैं कि सगरे सौभाग्य सार कूं जो सर्व स्वरूप है कि उच्छलित होय रह्यो है हर्ष जामें कि भक्तजन जाकूं टकटकी लगायके ही निरख रहे हैं कि जो अतुल है कि उपमा रहित है तथा अनिरवचनीय है कि सर्व के ऊपर ही विराजमान है कि जो कृपापात्र के विचार कूं निरादर करिके ही सगरे जगन के प्रति वा असंख्यात अत्यन्त गंभीर निमर्याद अपार तथा ऊंचे जिनके तरंग हैं कि बड़े बड़े जामें भ्रमर समूह हैं निरन्तर मनोहर जिनके स्वरूप की शोभा चमक रही हैं मणि हीरा मुक्ता जिनमें, ऐसे उज्ज्वल रस के समुद्रन कूं जो दान करि रह्यो है कि अपनी असंख्यात कृपा समूह सूं वा भक्तन के चित्त में जो जटित होय रह्यो है कि वा सेवकन सूं जो वेष्टित होय रह्यो है कि

प्रगट कियो है अमृत कूं हू विजय करवे वारो वैसो उज्ज्वल मधुर हास्य जाने, कि भगवानदास सूं कि सुदामा नाम ब्रह्मचारी सूं कि कोउ मनोहर हास्य वार्ता कूं जो विस्तारित कर रह्यो है कि कृपा समूह सूं आदरपूर्वक जब कछू भक्तन सूं पूछे हैं तब वे भक्त हू हाथन कूं बांधिके भय दीनता हर्ष पूर्वक या प्रकार सूं संबोधन करिके कहें हैं कि हे राजाधिराज राज राजेश्वर महाराज महाप्रभो भाग्यराश वर ऐसे ही है या प्रकार सूं थोरे अक्षरन सूं प्रेमपूर्वक मधुर उत्तर जाकूं दे रहे हैं मृगनयनीन के नयनन सूं ले इन योग्य आस्वाद योग्य जो श्री महाप्रभुन को ऐसो स्वरूप है सो सर्वोपर ही विराजमान होय रह्य है श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि अब प्रभुन की दान करी योग्यता सूं जिन कृपापात्रन सूं सो श्रीजी कृपा सूं प्रश्न करें हैं वामें वे हू मधुर उत्तर देवे में समर्थ होय हैं अब हों विनके अत्यन्त मनोहर मंगलमय नाम कूं वर्णन करूं हूं कि खंभालिया निवासी कल्याण भट्ट नाम भक्त कि श्री गोकुल निवासी मठपति कल्याण भट्ट हू कि गोपीकांत के पुत्र दामोदर भट्ट कि कायस्थ जाति वारेन में रघुनाथदास कि जमुनादास कि श्रीअंग सेवक दिनकर कि सिंघाभाई कि वाके न होयवे पर हरीभाई कि वाको पिता अत्यन्त प्रसिद्ध भक्त नाथभाई अथवा कबहू के प्रिय में अत्यन्त अनुरागी कि वाकूं अत्यन्त प्यारो भक्तन में मुख्य सो श्री मोहन भाईजी यह सब हम पर श्रीजी प्रश्न करें हैं तब वेग ही उत्तर देवे है जासूं सो प्रिय श्रीजी अत्यन्त ही प्रसन्न होय जाय हैं कि अत्यन्त हास्य वारे श्रीमुख चन्द्र वारे हू होय जाय हैं कि उच्छलित रस समूह सूं उच्छलित निर्मल करणासागर वारे सो श्री महाप्रभुजी कछुक झुकि के जाके हम योग्य हू नहीं हैं ऐसी मधुर रस हास्य नर्म भई वार्ता कूं हू हमारे संग करें हैं ॥७७॥ या समय में जे भक्त दूर स्थिति होय हैं कि जे चन्द्रमुखी हू दूर स्थिति होय हैं वे हू निकट आयके वा वार्ता कूं हर्षपूर्क सुनें हैं कि वे सगरे ही वा प्रिय के वैसे मनोहर स्वरूप कूं पान हू करें हैं कि महा मधुर वा प्रिय के रस को पान करि रहे विन सबन को देहानुसंधान भूल जाय है कि महाप्रभुन में बारंबार विचार्यो दृढ़ कियो हू स्वामी भाव को जो अनुसंधान है सो हू रस के आवेश सूं अत्यन्त ही दूर होय जाय है ॥८०॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले एकांनविस स्तरंग समाप्तम् ॥१९॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २० ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २० लिख्यते ॥

श्लोक -- **तत्र तदापत के चित्रमर्मयाद्रव विरांजंते**

अन्ये हासमया इव भवति के चितुं जायते ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि वहां तब तक कितनेक भक्त तो नर्ममय जैसे ही विराजमान होय हैं और कितने तो हास्यमय जैसे होय है कि कितने तो चित्र लिखे जैसे शोभायमान होय है कि और तो रसात्मक जैसो के वैसे और आनंदमय जैसे शोभायमान होय है कि कितने तो प्रेम सिंधुमय जैसे सोहावे है कि औरतो अत्यंत उत्कंठा मय जैसे ही कि कितने तो निरंतर रोम हर्षमय जैसे ही शोभायमान होय है कि और तो कितने स्तंभ मय ही अत्यंत शोभायमान होय है कि कितने तो स्वेदमय कि हर्ष के आंसु भय कि स्वरभंग रूप कि कंप रूप जैसे ही शोभायमान होय हैं वैसे और कितनेक विवर्ण रूप जैसे ही अत्यंत शोभायमान होय है कि कितने तो प्रलय रूप कि शोभामय जैसे प्रकाशमान होय है ॥६॥ कितनीक अत्यंत विशेष भाववारी सुंदरी तो पलकरूप विघ्न रहित ही वा प्रिय की स्वरूप सुंदरता कूं कंठ पर्यंत गटगट करती ही पान करे हैं कि कितनी रसिक सुंदरी तों वा प्रिय कूं हृदय में धारण करिके वक्षस्थल में द्रढ़ आलिंगन करे हैं ॥ तथा परम चतुर यह सुंदरी हूं या श्रीजी के सगरे मनोरथन कूं जाने है, आपस में भली प्रकार हंसे हूं हैं विनके ही अनुभव में उछल्लित शोभावारी जो लीला निवास करे है ऐसी या लीला कूं अत्यंत चतुर पुरुष हू भली भांति जानवे में समर्थ नहीं होय सके है ॥१७॥ या श्री महाप्रभुन की अमृत कूं हूं विजय करवे वारी मधुर लीला कबहु कोऊ प्रकार सूं उछल्लित होय है श्री महाप्रभुन की लीलारूप यह अत्यंत मनोहर कमल सदैव ही प्रफुल्लित रहे है भाग्यवारे भक्तजन ही या कमल की सुगंधी कूं मनरूप नासिका सूं ग्रहण करे है याके अनंतर विलासपूर्वक आगे चरणन कूं धारण करत ही श्रुद्धि कूं सिद्ध करिवे वारो है चरण कमल को स्मरण जाकूं ऐसो यह भगवान श्री महाप्रभुजी बाहिर

बिराजमान भक्तन कूं अत्यंत उत्साह वारे करत जा घर में शौच विलास कूं करे है ॥ प्रसर रही है अनंत सुगंधी जामें ऐसे मनोहर निर्मल सुखदायक शौच घर में प्रवेश करे है ॥२१॥ तब भक्तन के मुखारबिंद सूं उदय होय रहयो जो अमृत कूं हू विजय करिवे वारो कोउ अनिरवचनीय मधुर जय जय जय जय शब्द है सो भूमि अंतरिक्ष कूं हू पूरण करे है तब कछुक दूर सूं भक्त समूह उछल्लित होय रहे भाव समूह सूं अपने दोनों हस्तकमलन कूं भ्रमाय के वा प्रिय के ऊपर अपने कूं वारे है कि हे प्रिये श्री आपु अपने चरित्ररूप रस की वर्षा समूह सूं भक्त गणन कूं ऐसे शीतल करत ही हजारन करोड्न असंक्षात वर्ष जीवो या प्रकार बारंबार प्रेम के भार सूं वाछां करत बारंबार प्रभुन के आगे मन सूं प्रणाम कर करके तिबारी में कि आंगण में कि घर में तथा बेदी जलघरा में अटारी में कि वा शौचालय की गली में तथा होम घर में कि चोखंडी में कि और हूं स्थल में प्राय सगरे ही बैठ जाय है विनमें कितने भक्त तो महाभक्तन ने प्राणनाथ के गुणन सूं जटित किये गीतन को गान करे है वैसे और तो हर्ष पूर्वक वा प्रिय की अनेक प्रकार की वार्तान कूं करे है ॥२९॥ वैसे और भक्त तो या समय में बड़े यत्न सूं अवकाश सूं पायके घर में जायके वेग ही वा वा आवश्यक कार्य कूं करिके श्री महाप्रभुजी हूं अबहूं वा शौच मंदिर सूं बाहिर नहीं पधारे हैं सो वा प्रभुन की सेवा के अर्थ कि दर्शन के अर्थ मनोहर प्रेम सूं आकर्षण किये भये ही वेग ही फिरके आय जावे है और श्री महाप्रभुजी के सेवक तो श्री महाप्रभुन के आगे करवे योग्य सेवा के वा वा उपयोगी वस्तु कू वेग ही सजाय के वेग ही बिराजमान करें है और महाप्रभुन को कृपापात्र जो ध्यानदास जी को भैया गुणवान सो चतुरदास जी सारंगीकूं बजावे है वाके उदय होय रहे अत्यंत मधुर अत्यंत मनोहर राग तरंगन कूं श्री महाप्रभुजी उछल्लित हर्ष वारे मन सूं अंगीकार करे है या समय में कितनी सुंदरी तो आपस में वार्तालाप करे है कितनी तो गान करे है वैसे और तो प्राणनाथ की वैसी वार्तान कूं स्मरण करिके अत्यंत ही हंसे है वैसे और तो उछल्लित प्रेम सूं वा प्रिय के स्वरूप कूं विचारे है कि वैसे और सुंदरी तो अन्य भक्तन ने कही वा प्रिय की करी वार्तान कूं श्रवण करे है कि वा समय में न ठहेरी कितनी तो वा समय में स्थित भक्तन सूं प्रिय की वार्ता कूं पूछे है कि कितनी तो आगे ठहेरी है कितनी

तो पीछे ठहेरी है कितनी तो घर में जाय है कि कितनी तो वा घर सूं वेग ही फिर आवे है ।।३८।। ऐसे अनंत भक्त तथा मृगनयनी कि वे वे सेवकजन वा सगरे स्थल कू सघन ही भरिके वैसे बिराजे है ।।३९।। गुणसागर श्री महाप्रभुजी की या प्रकार शीतकाल संबंधी लीलाकूं संक्षेप सूं वर्णन करिके अब वसंत में कि वासूं और महिना में हू जब गरमी विशेष होय है तब उत्तर दिशा में शैयाजी बिछे है वाके ऊपर बिराजमान मधुर गुणसागर प्राणनाथजी की महामधुर उदार अभ्यंग लीला होय है वाकूं अब वर्णन करूँ हूं कि तिबारी के उज्वल कौण में शैयाजी बिछे है बाके बिछोना को प्रकार तो प्रथम जैसे ही जाननो और यामें अंगीठी नहीं रहे है ।।४१।। या शैय्या के ऊपर परम चतुर भक्तजन निरंतर सूक्ष्म खासा की चादर कूं विछाबे है तामें यदि गरमी विशेष होय तो वे भक्तजन वास्तानाम स्थूल वस्त्र की अत्यंत शीतल मनोहर चादर कूं सदा बिछावे हैं तथा चन्द्रकमल कूं विजय करिवे वारो जाको श्री मुख बिंब है ऐसे सो प्रिय चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी प्रथम कहे प्रकार सूं अपने वा आसन कूं छांडि के सुंदर विलास पूर्वक वा तैल शैया के ऊपर पधारे है वितने ही भक्त वैसे ही तैलाभ्यंग कूं करे है कि श्री महाप्रभुन के भक्तराजन कूं कि गुणीजनन कूं हू सघन समाज वैसे ही विराजमान होय है ।।४५।। तथा वहां गांन के कि वार्तालाप हास्य पूर्वक अविलोकन कि विलासन के हू अनेक गुणन सूं अत्यंत शोभायमान अंगवारे कि हंसि रहे स्वरूप वारे वे वे तरंग उछले है ।।४६।। या समय प्राणनाथ रूइदार नीमा कूं नहीं पहेरे हैं किंतु चादर कूं धारण करे है कि कबहू तो अंस देश में उपरेना कूं स्वयं धारण करे है ।।४७।। कब हूं तो उघाड़े हैं, श्री अंग सू हूं मृगनयनीन के कि भक्त समूह के नैत्र कमलन कूं आनंदित करत ही सौच मंदिर में श्री महाप्रभुजी पधारे है ।।४८।। सुंदर मनोहर भाग्य समूह सूं परमानंद दायक भक्त कि मृगनयनी सुंदरी हू तब जा स्वरूपामृत के तरंग समूहन को पान करे है वाकूं वो परम चतुर वे ही जाने है ।।४९।। जब जेष्ठ असाड़ में गरमी विशेष होय है तब महाप्रभुन के कृपापात्र जब वा तैल शैय्या कूं आंगण में ही पधरावे है ।।५०।। तब बिलास समुद्रन के तरंग समूहन सूं आद्र किये हैं सगरे लोक जाने ऐसे प्रिय श्री महाप्रभुजी हूं अपने सुंदर मनोहर तकिया वारे आसन कूं शोभायमान करत वा आंगण में ही विराजमान होय है ।।५१।। उछल्लित अनुराग वारे चतुर सेवक

प्रथम गुलाबजल सूं वा शैया जी कूं सिंचन करिके भली भांति सूं शीतल भइ वा शैया कूं तिबारी में विछावे हैं ॥ वा शैयाजी के ऊपर मनोहर सुंदर गाढ़े चादर कूं बिछावे है श्री महाप्रभुजी कूं अपने आसन सूं विजय करत देखके वेगही बिछोना बिछाय के वा शैयाजी कूं आंगण में पधरावे है श्री महाप्रभुजी हू वेग ही उठिके प्रथम कहे प्रकार सूं चरण वस्त्र के ऊपर विलास पूर्वक बिराजमान होय के भाग्यवारे कि प्रसर रहे हर्ष वारे अत्यंत निकट ठहरे सगरे भक्तन सूं चारों ओर मिले भये ही तथा अठारी के ऊपर बिराजमान रस सुंदर दृष्टिवारी चंद्रमुखीजन निर्विघ्न ही नयनन सूं जाके श्री अंग संबंधी शोभारूप अमृत के करोड्न समुद्रन कूं पान करि रही है ऐसे सो श्रीजी तैल्याभ्यंग में उपयोगी सुंदर छोटी धोती कूं पहेरे हैं ॥ अभ्यंग कराय रहे प्रिय कूं श्री मुखरूप पूर्णचंद्र को दरशन रूप जो मुख्य रस शीतकाल में अत्यंत दूर्ल्लभ होय है, अब तो यामें यह सुंदरी अत्यंत ही निमग्न होय है ॥५७॥ वा शीतकाल में तो जे जन रस मारग में प्रवेश योग्य वे जन वामें प्रवेश कूं प्राप्त होय है तो वा प्रिय के वा श्री मुखचंद्र के दरशन रस कूं प्राप्त होय है, और जन नहीं प्राप्त होय है कि कमलनयनी सुंदरी हूं नहीं प्राप्त होय है ॥५८॥ अब तो या प्रिय के मुखचंद्र शोभा कूं सगरे ही निर्विघ्न ही दरशन करे है ॥ परमानंद सूं प्रफुल्लित है कपोल की शोभा तथा विशाल नेत्र जिनके, ऐसी सुंदरी जनतो विशेष सुं ही याको पान करे है ॥५९॥ तथा अब अभ्यंग करि रहे भक्तन के हृदय सूं कि हस्त कमल सूं कि शैया की चादर सूं कि निरंतर मनोहर सिराहना सूं अत्यंत मनोहर शोभावारो पुष्टि सुगंधी कूं प्रवाह अत्यंत प्रसरे है तथा इहां भक्तन के ध्राण इन्द्रीय में अमृत कूं अत्यंत वर्षा करे है । लेपन किये मनोहर सुंदर चंदन कपूर कस्तूरी अगर चंदन को रस कि चोवा को जो अंगराग है वाकी हू सुगंधी कूं प्रवाह अत्यंत अधिक प्रसरे है तथा दोय भक्तन के हस्तकमल में बिराजमान जे मोर पंख के पंखा है सो शीतल मंद पवन कूं वर्षा करत ही प्रिय श्रीजी की कि प्रभुन के भक्तन की सेवा कूं करे है तथा शुक्ल पक्ष में या आंगन में अत्यंत प्रसर रही जा निर्मल उज्वल चांदनी है सो प्रिय श्रीजी के तथा भक्त समूह के कि मृगनयनीन के अंगन में कि वस्त्रन में कि भूषणन में शैयाजी में हूं मधुर मनोहर अपार शोभा कूं प्रगट करत ही बारंबार रस समुद्रन के समूहन कूं ही वर्षा करे है तथा श्री प्राणनाथ जी की अभ्यंग संबंधी

जो मधुरता हूं प्रथम कहे प्रकार सूं ही उछल्लित होय है और प्रथम कहे प्रकार सूं ही सगरे भक्त हूं या प्रभुन के चारों ओर समीप ही सुंदर प्रकार सूं बैठे हैं गान हूं वैसे ही विशेष प्रकार सूं प्रकाशमान होय है बीणा हूं वैसे ही अत्यंत शब्दायमान होय है ॥६६॥ कि सारंगी हू वैसे ही मनोहर राग तरंगन कूं प्रगट करे है कि हास्य विनोद अनेक प्रकार की कथा तथा वार्ता हू वैसे प्रसरे है ॥६७॥ तथा परम पुरुष प्रिय कूं गरमी न लगे या विचार सूं अत्यंत कोमल अंतः करणवारे भक्तजन इहां दीपक के प्रकाश कूं हूं नहीं राखे है ॥ तिबारी में कि होम घर में दरवाजे में कोणे में ही वा दीपक कूं वे भक्तजन धरे हैं, शौच घर में तो प्रसरवे वारी सुगंधी सूं आनंद दायक चारों ओर प्रसर रही शोभावारो कृष्णागर चंदन की धूप ही निरंतर शोभायमान होय है ॥६९॥ अभ्यंग जलपूर्ण होय है प्रिय श्रीजी श्री मस्तक पर पाग बांधे हैं ॥ अचानक दीपक हू प्रगट होय है तब यह प्रिय करुणा सागर श्री उछल्लित उदार शोभा वारे अपने स्व रूप कूं जैसे दर्शन करावें हैं उज्वल भाववारे केवल वे भक्तजन ही वाकूं वैसे जाने हैं ॥७०॥ मुरली बलीराम जब गानरूप कमल कूं प्रफुल्लित करे हैं तथा चतुरदास जब सारंगी बजावे हैं तब श्रवण रस में निमग्न भये श्री महाप्रभुजी हर्ष के भार सूं प्रफुल्लित कपोल मंड्ल वारे होवत ही पाग कूं धीरे-धीरे ही बांधे हैं ॥७३॥ जब राग सुंदर प्रकार सूं प्रसरे है कि प्रारंभ कियो विश्नुपद जोलों समाप्त नहीं होय है तो लों यह रस सागर भगवान श्रीजी पाग बांधवे कूं प्रारंभ किये मूल कूं बांधिके एक अंचल कूं विलास पूर्वक श्री हस्त कमल में राखके ही बिराजमान होय जाय है ॥७४॥ जब विश्नुपद पूरण होय जाय है तब वाकूं बांधिके तथा चरणन सूं पनही कूं पहरि के सुंदर तैल सूं स्निग्ध होय रही धोती सूं सुगंधी के प्रवाह उच्छल रहे हैं ऐसे श्री महाप्रभुजी भक्तन के नयन में स्वरूपामृत कूं वर्षा करत उठी के ठाड़े होयके या समय में तैल के संबंध सूं धोती के भीतर वहां वहां अत्यंत सघन अत्यंत मनोहर रसात्मक कोउ अनिरवचनीय मधुर श्यामलता उदय होय है कि जो वा प्रिय की स्वभाविक वा गौरता कूं अत्यंत ही शोभायमान करे हैं तथा श्री अंग के उन्मर्दन करिवे सूं वा धोती के वा वा स्थल में भये पुंजीत ताकूं विलास पूर्वक श्री हस्त कमल सूं मार्ज्जन करत कि धोती की शलवट कूं .... प्रवाहन कूं वर्षा करे है ॥७९॥ तब श्री महाप्रभुजी कमर में बांधे यज्ञोपवीत

कूं छांड के संवार के वाके ऐक देश कूं दक्षिण कान के ऊपर धारण करे है ॥८०॥ गरमी के समय में तो यह श्री महाप्रभुजी पाग के ऊपर उपरेना कूं नहीं बांधे है वाके बिना ही अत्यंत शोभायमान होय है ॥८१॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले वीसमो स्तरंग समाप्तम् ॥२०॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २१ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २१ लिख्यते ॥

श्लोक -- जल देतु वर्षति विभोस्तैलाभ्यंग शय्या सात्री

द्वारिका मनुझैर्भक्त वरैः स्थाप्यते तस्य ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि जब मेघ वर्षा होय है तब तो वे परम चतुर भक्तवर तिबारी में महाप्रभुन की वा तैलाभ्यंग की सय्या कूं बिछावे हैं ॥१॥ जब मेघ थोरी थोरी बूंदन कूं वर्षा करे है तब तो वा अटारी के आगे तले ही सुंदर उछल्लित प्रीतिवारे भक्तजन वा सय्या कू बिछावे हैं ॥२॥ वा अटारी के आगे ही श्री महाप्रभुजी की मनोहर सो अभ्यंग लीला उछल्लित होय है ॥ तामें पंखा ही शीतमंद सुगंधी पवन कूं वर्षा करे है ॥३॥ शेष प्रकार तो सगरी ही प्रथम कहे प्रकार सूं होय है ॥ तथा कितनेक भक्त तो तिबारी में भरिके वा प्रिय चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी के चारों ओर ही वाके स्वरूपात्मक अमृत के समुद्रन को पान करत ही बैठे रहे हैं ॥४॥ कितनेक तो मुख्य मंदिर में कि होमघर में शोभायमान है ॥ कितनेक और भक्त तो तिवारी की जो सुंदर विपुल अटारी है वाके आगे के तल में ही बेठिके या प्रिय के स्वरूपामृत को पान करे है ॥ कितनी चंद्रमुखी सुंदरी जो जलघरा में, कितनीक तो चरण पखारने के स्थल में ठहर के उछल्लित विलास पूर्वक वा प्रिय के श्री मुखचंद्र की शोभा कूं नयनन सूं पान करे है । सगरी मृगनयनी तो प्राणनाथ प्रिय के स्वरूपामृत के पान लोभ सूं मेघ के वरसने पर हू प्राय तो अनंत ही नही जाय है किंतु वा आंगण में ही वे कोमलांगी ठहेरे हैं ॥

तब सो ऊंची उछल रही मेखला सूं भेद योग्य संघन अधिकार कि बारंबार प्रगट होय रह्यो पुष्ट सो गर्जन, कि चारो ओर सूं प्रसर रही वे मोरन की कूक तथा उदय होय रहे वे कोकिलान के मनोहर ऊंचे रव की चावन कूं सुंदर शब्द, कि प्रसर रह्यो सो शीतल सुगंधी मधुर पवन, कि अत्यंत प्रसर रह्यो सो रागरंग, कि वेणु के सुंदर शब्द, वैसे वहां उदय भयो और हू सो सो वा सगरी सुंदरीन के रस कूं अत्यंत ही पल्लवित करे है ।। कि पुष्ट करे है ।। तब सघन अंधकार में प्रिय के दरसन न होयवे सूं उत्कंठित होय रही कि अत्यंत दुःखी होय रही सुंदरीन के प्रति अत्यंत दुर्ल्लभ होय रहे प्रिय दर्शन कूं अपने बारंबार चमत्कारन सूं सिद्ध करत कि प्रिय को दरसन करावत सो विजुरी बिन सुंदरीन कूं सखीगणन सूं कि हजारन प्राणन सूं हूं अत्यंत प्रिय भाव कूं प्राप्त भई है ।। श्री भट्टजी कहे है कि वा समय में प्राणनाथ की सुंदर माधुरी कूं निरंतर प्रकाश कर रही या बिजुरी में यह चतुर सुंदरी जहां उपकार वारी बुद्धि कूं करती भई है ।। वा मनोहर विचार कूं यदि सो बिजुरी जान लेती तो या सुंदरीन के चरण कमलन में ही प्रणाम करती ।।१३।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि जब अभ्यंग संपूर्ण होय जाय है तब प्रिय चक्रवर्ती प्राणनाथजी हूं जब शौच घर ते पधारवे की इच्छा करे है तब वे भक्तजन या प्रभु के श्री मस्तक पर वर्षा के बिंदून कूं निवारण करिवेवारे मोर पंखन के छत्र कूं धारण करे हैं ।।१४।। या प्रकार हूं या महाप्रभुन की तैल शय्यादि के प्रकार कूं संक्षेप सूं ही वरणन करिके भक्तवराः अब जो वरणन करू हूं वा अत्यंत मधुर चरित्र में हू कानों कूं अत्यंत ही लगावो ।।१५।। श्री प्राणनाथजी जब अपनी इच्छानुसार शौच मंदिर में विराजे हैं भक्त समाज हू अपनी इच्छा सूं विराजमान होय रह्यो है ।। सेवक जन हूं सेवा में उपयोगी वा वा वस्तु कूं वेग ही सजाय के लालसा तथा ताप पूर्वक प्रिय के पधारवे को विचार करे है ।। तब श्री अंग सेवक खवास जी तो जाको स्वरूप प्रथम ही मेंने कह्यो है ऐसी प्राणप्रिय की मनोहर आनंद शय्या कूं हू बिछावें है ।। वाके ऊपर बिछायत हूं करे है तथा श्री महाप्रभुजी की प्रिया पत्नी के अर्थ दूसरी शय्या कूं नहीं आस्तृत करे है कि नहीं सजावै है ।। तामें शीतकाल में कि वर्षाकाल में या प्रिय श्रीजी की ही रस सूं उछल्लित वा आनंद शय्या कूं ही सजावे है ।। जेष्ठ असाढ़ में तो वा शय्याजी कूं आंगण में ही पधरावे,

है ।। सुंदर उदार शोभावारे मनोहर सिराहना कूं तो पश्चिम दिशा में ही धारण करे है ।।२०।। तामें सगरे भक्तजन अत्यंत ही उत्कंठित होय रहे हैं ।। कि प्रभून के शौच मंदिर सूं बाहिर पधारवे कूं इच्छा कर रहे हैं ।। श्री अंग सेवक वा वा सगरे कार्य कूं साज के चरणारविंद के पखारवे योग्य स्थल चरणक्षालण की चोतरी में प्रभुन के पधारवे की प्रतीक्षा कर रह्यो है ।। तब हमारे प्रिय प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी हूं प्रथम कहे प्रकार सूं आवश्यक कार्य कूं करिके पनही के कार्य कूं करिके पनही के स्थल में पनही उतार के उछल्लित विलास पूर्वक शोभायमान होवत ही चरणक्षालण की चोकी में पखारवे के स्थल में पधारे हैं ।। वा अत्यंत प्रिय श्री महाप्रभुजी कूं पधारत जानके सौभाग्य वारो भक्तन को सगरो समाज कि वैसी महाभाग्यवारी भक्त सुंदरीन को समाज हूं वेग ही उठिके ठाड़ो होय जाय है ।। वा भक्त समाज सूं उदय भयो जो अत्यंत मधुर अत्यंत मनोहर अमृत के समुद्रन कूं विजय करिवे वारो अत्यंत दीर्घ जयनाद है सो भूमि कूं और अंतरिक्ष कूं हूं भर ही देवे है ।। तब भक्तजन हूं शौच मंदिर के द्वार भूमि सूं लेकर चरणक्षालण की चोतरी चरण पखारवे के स्थल पर्यंत या प्रभुन के मार्ग कूं छांड़ि के या प्रिय के श्री मुखारविंद को पान करत ही दीनतापूर्वक ही बिराजे है ।। तब हे महाप्रभो, हे हमारे प्रिय महाराज चिरंजीव चिरंजीव बारंबार सदा जय जय बारंबार ऐसे शब्दन कूं कहे रहे कि या प्राणनाथ के ऊपर अपने सर्वस्व कूं कि अपने कूं हूं न्योछावर कर रहे विन भक्तन कूं रस सागरन कूं सागररूप सो समाज अत्यंत ही शोभायमान होय है ।।२७।। जो भक्त या प्रभुन के निकट ही ठहरवे कूं प्राप्त भये हैं वे तो या प्रिय के मुखारविंद को सुख पूर्वक ही पान करे हैं और कितनेक भक्तन कूं तो अनेक यत्नन सूं हूं सो दुर्ल्लभ है ।।२८।। तब सुंदर मतवारे हस्तिराज की गति कूं अपने मधुर विलासन सूं बिड़म्बन करि रही अपनी वा मधुरगति कूं प्रगट करत चरणक्षालण के चोतरी में प्राप्त होयके श्री महाप्रभुजी पीढ़ा में विराजमान होय है ।। तथा प्रथम कहे प्रकार सूं श्री हस्त में मृत्तिका कूं लेकर हस्त कमलन के क्षालण कूं तथा अतुल शोभावारे चरण कमलन के क्षालन कूं हूं करे है तथा अंगीकार किये सुंदर पीतल की कलसी के जल सूं मनोहर कोगलान के प्रकार कूं हू करे है ।। रात्री को प्रहर गुजर गयो है या लिये अत्यंत बुद्धिमान श्री महाप्रभुजी तब आचमन नहीं करे है

॥३१॥ जब श्री महाप्रभुजी कोगला करे हैं तब श्री अंग सेवक तो बेग ही जलघर में जायके प्रथम ही अग्नि के ऊपर धारण किये ताते जल कूं चांदी के और पात्र में करे है ॥ फेरि वासूं यामें धारण करिके ऐसे बारंबार करके वा जल कूं सोहतो सिद्ध करे है ॥ चतुर सो अंग सेवक वा सुहाते जल कूं मनोहर सुवर्ण पात्र में धारण करे हैं तथा शोभायमान होय रहे श्री गोकुल चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी के श्री हस्तकमल में दीनता पूर्वक देवे है ॥ श्री प्राणपति श्री महाप्रभुजी वाकूं विलासपूर्वक पान करिके मनोहर कोगला की विधि कूं करे हैं ॥३५॥ जब तो या जल के शीतल करिवे में या श्री अंग सेवक कूं कछुक विलंब होय है तब उदार लीलावारे प्रिय श्रीजी यहां पीढ़ा पें बिराज के वितने पर्यंत वाकी प्रतिक्षा करे हैं ॥३८॥ या अवकाश में महाभाग्य वारे समीपवासी सेवक भक्त अमृत के समुद्र कूं विजय करिवे वारी कि प्रियतम कूं संतोष तथा रस विशेष के करिवे वारी छोटी सी कथा कूं चलावे हैं ॥ कि कबहु रससूं सुंदर कोई श्लोक हूं सुनावे है ॥ कि कोऊ और भक्त रसभाव वारे भाषा दोहा कवित्त काव्य कूं पढ़े हैं ॥३९॥ कि कोऊ भक्त जब सुंदर तान तरंगवारे मनोहर विष्णुपद को गान करे है ॥ अथवा कोई भाग्यवान सुंदर सारंगी कूं वैसे वैसे मधुर प्रकार सूं बजावे है कि भाग्यवारेन में श्रेष्ठ कोऊ भक्त मनोहर वीणा कूं अत्यंत मधुर प्रकार सूं बजावे है ॥ प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी हूं यामें कृपा विशेष सूं अत्यंत सावधान होयके बिराजे हैं ॥४०॥ जब जल सोहातो होय जाय है तब पान करिके अनेकवार कोगला करे है ॥ सो श्री अंग सेवक प्रथम तो उष्ण जलकूं सुंदर चांदी की पात्रिका में धरिके ले आवतो वैसे वा जल कूं सोहातो करिके श्री महाप्रभुजी के श्री हस्त में देतो ॥ गुण सागर श्री महाप्रभुजी तो वा पात्रिका सूं ही जलपान करते तब पात्रिका के अग्र की जो तप्तता है कि तातो पनो है सो भक्तिवारेन के चित्त में प्रवेश करिके अपने में प्रियतम के अधर स्पर्श की योग्यता के अभाव कूं स्पष्ट ही कहेती भयी है । कि हों प्रियतम के अधर स्पर्श के योग्य नहीं हूं तब वे भक्तजन तो वा सुहाते जल के पान समय में अवश्य अपेक्षित निरदोष मनोहर सोना के पात्र कूं सिद्ध करावते भये है ॥४४॥ परंतु महाप्रभुन के कृपापात्र श्री अंग सेवक कूं स्वयं साक्षात् विज्ञापना करिवे में समर्थ न होवत ही सगरे मिलके सबन कूं प्रिय तथा प्रभुन के कृपापात्र मनोहर कोमल मनवारे श्री.

मोहनभाई जी के आगे विज्ञापना करते भये हैं सो भक्तराज मोहनभाई जी तो दीनता पूर्वक वा श्री अंग सेवक के आगे बारंबार प्रणाम करिके वैसे ही विज्ञापना कूं मान लेतो भयो है ॥ तथा रस सूं आर्द्र भाव वारो हू होय जातो भयो है ॥४७॥ तब सुंदर समय सूं प्रारंभ करिके ही सो श्री अंग सेवक हू चांदी के कटोरा में वैसे सोहाते भये जल कूं वा सोना के कटोरा सूं ही प्रभुन के प्रति देतो भयो है ॥४८॥ और होम घर के निकट प्रथम जो मनोहर महाप्रभुन के भोग आरोगनो कहयो हतो सो कछुक दिनन के पीछे श्री महाप्रभु जी ने त्याग कर दियो हतो तब श्री महाप्रभुजी के जो कृपा पात्र है वे तो सोहाते जलपान सूं प्रथम ही कोगला करिवे के अनंतर ही वा भोग सामग्री कूं इहां लावे है वैसे बड़ी चादरन सूं टेरा हू करे है ॥५०॥ प्रथम कहे प्रकार सूं सिद्ध करी आगे धारण करी वा मधुर मनोहर भोग सामग्री कूं सो दया सागर श्रीजी निरख के अंगीकार करे हैं ॥५१॥ भगवान श्रीजी तो स्वयं वा सामग्री में सूं कछुक ही श्री मुखार विंद में धारण करे है ॥ तामें निकट रहिवे के भाग्य वारे कि उछल्लित होय रहे प्रेम तरंगन सूं चंचल अत्यंत सावधान जे भक्त जन है वे तो वा वा सामग्री कूं वैसे वैसे आग्रह सूं ही वारंबार आरोगवावे हैं ॥ उछल्लित विलास पूर्वक श्रीजी तो वा वा वस्तु कूं बर्जे है ॥ वे भक्तजन तो वैसे वैसे चाटकारन सूं कि वैसी चतुरता सूं वा वा वस्तु को अंगीकार करावे हैं ॥ तथा यह महासुख रूप कोऊ क्षण तो अमृत के समुद्र समूहन सूं हू अत्यंत मनोहर अत्यंत मधुर होय है ॥५४॥ जामे यह श्री महाप्रभुजी तो वा वा सामग्री के न लेयवे में आग्रह करे है ॥५५॥ दया सागर श्री महाप्रभुजी विन भक्तन के महा मधुर मनोहर प्रेम विशेष कूं ऐसे आस्वादित करिके वामें बढ़ि रही रुचि सूं वा वा वस्तुन कूं हूं आस्वादित करे हैं ॥ प्राणनाथ कूं अत्यंत मनोहर जो यह मधुर स्वभाव है सो भक्त समूह कूं कि वा चंद्रमुखी समूह कूं अत्यंत ही रूचे हैं ॥५७॥ या प्रकार कोगला करिके यह श्री महाप्रभुजी ऊष्ण जल कूं पान करे है ॥ कि प्रथम कहे औषध कूं आरोग के वा जल को पान करे हैं ॥ और श्री अंग सेवक खवास जी तो प्रियतम ने भूमि पर उलटी करिके धारण करी वा जल की पात्री को जल सूं पखार के उठाय लेवे हैं ॥ श्री महाप्रभुजी तो श्री हस्त कूं पखार के अनेक वार कोगला करे हैं ॥ या समय में या प्रिय के भक्त जन ईहां कछुक अनिरवचनीय हर्ष को

अनुभव करे हैं विनके वा हर्ष कूं वे भक्त ही जाने हं कि जे वा अनुभव के समान शील व्यसनी हैं वे जाने हैं ।।६०।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले एकबीस स्तरंग समाप्तम् ।।२१।।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- २२ ।।

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २२ लिख्यते ।।

श्लोक -- **प्रमोध्यल्पं के भुपुवैष्यति शोऽधुनेतित भक्तवराः स्त्रियश्च**
स्वस्वेस्थितं स्थानमितः समेत्य पुरैव धृत्वाप्यु मासतेंग ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि अब श्री महाप्रभु जी आनंद शय्या पर पधारेंगे या विचार सूं श्रीजी के भक्त श्रेष्ठ कि सुंदरीजन हूं प्रथम ही इहां सूं उठिके वेग ही प्रियतम की लीला सिंधु शय्या के चारों और ही अपने-अपने स्थान कूं लेकर ठहेरे हैं ।।१।। तामें कितनेक सुंदर भाग्यवारे भक्त कि मृगनयनी सुंदरी तो वा हर्ष सागर प्रिय के समीप ही स्थान कूं प्राप्त होय है ।।२।। कितनेक भक्तजन तो आंगण में कि और कितने तो जल घर में कि और ठौर में हू सुख पूर्वक ही बिराजे है ।।३।। तथा कितने परम चतुर बुद्धिमान तो रस सागर की प्यारी मृगनयनी कूं जान के आदर पूर्वक ही विनकूं अपने आगे ठहेराय के आनंद सूं ही या प्रिय के सनमुख ही बिराजमान होय है ।।४।। समीपवासी भक्तन के समूह सूं मिले भये यह प्राणनाथ श्रीजी वैसे मनोहर भाववारी चंद्रमुखीन कूं नयनन के तरंग विलासन सूं भली प्रकार मोहन करत तथा वा सुंदरीन में उदार हर्ष के समुद्रन कूं वर्षा करत ही तब आनंद लीला शय्या कूं प्राप्त होय है ।। तब कितनीक सुंदरी तो या प्रिय के मंद हास्य में निमग्न होय है ।।६।। कितनी सुंदरीन कूं तो नयनन की लीलान में तथा और चतुर सुंदरीन कूं वैसी मनोहर गति में निमग्न करे हैं ।। तथा कितनी सुंदरीन कूं वैसी मनोहर गति में निमग्न करे है ।। तथा कितनी सुंदरीन कूं मधुर कटाक्षन सूं कि कितनीन कूं मधुर विलासनसूं कि औरन कूं मंद हास्य

सूं कि श्री मुखारबिंद सूं कि तथा औरन कूं सुंदर चंचल कुंड्लन के तांड्व सूं कि भुज युगल की लक्ष्मी सूं यह श्री गोकुल के नायक रस सागर श्रीजी आनंदित करे हैं कि अत्यंत उत्साह हू करे हैं ।। कि व्याकुल करे हैं ।।८।। कि नचावे हैं कि रोम हर्ष वारो ही करे है ।। तथा वे प्रिया हू वा प्रिय श्री गोकुल के पूर्ण चंद्र श्रीजी कूं कटाक्षरूप तीक्ष्ण बांणन सूं पीड़ित करे हैं कि विविध विलासन सूं सिंचन करे हैं ।। कि कमल कूं तृण जैसे तुच्छ करवे वारे नयनन सूं आलिंगन करे है ।। कि विविध विलासन सूं आनंदित करे हैं ।। कि लज्जा के तरंगन सूं अत्यंत उत्कंठित करे है कि मंद मनोहर हास्य सूं सिंचन करे है ।। कि भ्रू रूप पल्लव सूं भली प्रकार बुलावे हैं ।।१०।। तथा उछल्लित मनोहर उज्वल कांति वारी बहुत पंक्ति सूं कि भक्त सेवक तथा निकट वासीन की उज्ज्वल कांति वारी बहुत पंक्तिन सूं मिले भये ही विलास पूर्वक वहाँ पधारके वा शय्या के निकट बिराजमान मनोहर चरण वस्त्र के ऊपर हर्ष के सागर प्रिय श्रीजी विराजमान होय हैं ।। तब दोय भक्त अमूल्य प्रेम समूह सूं नम्रता पूर्वक बैठके वा श्रीजी के मनोहर उछल्लित आनंदवारे दोनों चरणकमलन कूं वा चरण वस्त्र सूं पोंछे हैं ।। तब श्री अंग सेवक या श्रीजी की अमूल्य स्वेत तनी कूं लावे है ।।१४।। श्री महाप्रभुजी हूं विलास पूर्वक ही वाकूं पहेरे है ।। या प्रिय के छिपायवे योग्य उछल्लित रसवारे वा अंग कूं देखवे में कोऊ हूं योग्य नहीं है ।। तासूं वा अयोग्य जनकी वा पर द्रष्टि मत परे या निरमल अभिप्राय कूं हृदय में विचारत ही कोऊ कृपापात्र इहां वस्त्र सूं टेरा कूं ही करे है ।। तथा अब सुंदर नितंबवारी सुंदरीन में रसात्मक महाफलदान कूं महासुखमय समय निकट आयो है या विचार सूं श्री महाप्रभुजी वा रसात्मक अंग में अंतराय रूप धोती कूं बड़ो करे है ।।१६।। तथा वा महा रसदान के समय में तो यह करुणा रस सागर श्रीजी वा तनिया कूं हूं बड़ो कर देवे है ।। प्राणनाथ के निरावरण आनंद संदोह रूप स्वरूप कूं तब कमल सूं हूं सुंदर मुखवारी वे सुंदरी मनोहर सुंदर अंगन सूं कि हृदय सूं पान करे हैं ।। और कमलनयनी सुंदरीन के जीवन रूप कि रस सूं आर्द्र कि सुंदर भक्ति वारेन के समाज के प्राणरूप कि कामदेव के अभिमान रूप समुद्रन कूं सुखायवे वारी जाकी शोभा है कि अतुल जाको स्वरूप है ऐसे सो परम पुरुष श्री गोकुल के पूर्णचंद्र राजाधिराज वृजराय प्राणनाथ श्रीजी अत्यंत प्रसन्न मन होयके

मुक्तामणी हीरान सूं जटित मनोहर चौकी पर दोनों चरण कमलन कूं धारण करिके शोभायमान हैं, भ्रमर समूह के महातरंग समूह जिनमें ऐसे रसके समुद्र कूं वर्षा करत ही अत्यंत शोभायमान होय रहे हैं ॥ वा शैयाजी में बिराजमान होय है ऐसे वा मनोहर आनंदरूप घन सूं सघन दिन में या प्रिय के भक्त तथा मृगनयनी हूं भीतर कि बाहर कहूं हूं अणुंमात्र हूं वहां रस सूं विना भीजे भाव कूं नहीं धारण करे हैं ॥ कि भीतर बाहिर सगरी ही रससूं भीज रहे हैं, यह भाव है ॥ और जब प्रिय श्रीजी तेलाभ्यंग लीला नहीं करते हते तब तो या समय में ही विलासी पुरुषोत्तमोत्तम श्रीजी प्रथम कही रीति सूं पाग ही बांधते ॥ श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि याके अनंतर भाग्यवान प्रेमवारे दोय भक्त सुंदर बैठके ही या प्रिय के दोनों चरण कमलन कूं घृत सूं कि तैल सूं वा मोम सूं कोमलता पूर्वक सुंदर अभ्यंग करे है ॥ या मनोहर समय में हूं वा श्रीजी की तथा श्रीजी के कृपापात्र भक्तन की हास्य लहेरी के सहित ही उछल्लित रसवारी अत्यंत मधुर हास्य गोष्टि उछल्लित होय रही है ॥२४॥ शीतकाल में जो अंगारन सूं भरी मनोहर अंगीठी समीप बिराजमान होय है ॥२५॥ वा पर हाथ कमल कूं तपाय वे दोनों भक्त बारंबार ही वा श्रीजी के चरण कमलन पर धारण करे है ॥ इहां बढ़ि रहे बड़े समाज में वा भक्तन के तथा मृगनयनीन के जे नयन हैं वे आनंद समूह स्वरूप हैं श्री अंग जाके ऐसे प्राणनाथ के थोरे से आवरण वारे कि ऊपर पहरे छोटे वस्त्र वारे प्रायः निवारण मनोहर स्वरूप को अत्यंत पान करवे अर्थ बहुत प्रकार सूं ही अहं पूर्विका सूं दौड़े है ॥२७॥ अहो शीतकाल में रूईदार लाल छोटे नवीन निरदोष नीमा सूं शोभायमान श्रीजी को श्री अंग है विन भक्तन के नयनों में निधी समूह कूं वर्षा करत अत्यंत ही सर्वोपर बिराजमान होय है कि महासुंदर शोभायमान होय है ॥२८॥ एसे अन्य रितु में तो प्राणनाथ कूं केवल शोभा समूह सूं शोभायमान कि सगरे आवरण सूं रहित जो महा सुंदर चमत्कारी मनोहर मधुर सगरो श्री अंग है सो अपने अंग समूहन में विन सुंदरीन की चाहना समूह कूं अत्यंत उछल्लित करे है ॥२९॥ वा मृगनयनी सुंदरीन कूं वा परम प्यारे श्रीजी के श्री अंगरूप कमल पंक्ती में भ्रमरी होयवे की इच्छा उछल्लित होय है ॥ कि तथा श्रीजी को तो वा प्रियान की इच्छा रूप भोंरी कूं वा अपने श्री अंगरूप कमलन के रसपान करायवे की इच्छा उछल्लित

होय है ।। तथा या श्रीजी के दरसन में विन सुंदरीन के अंग तो कंप तथा स्वेद पसीना की विवर्णता कि स्तंभ तथा रोमहर्ष कूं प्राप्त भये हैं ।। तथा द्रष्टि हूं आनंद के अश्रुधारान कूं प्राप्त भई है ।।३१।। और कछुक दिनन के पीछे रामाभायी नाम सूं प्रसिद्ध जो भक्त है सो उछल्लित होय रहे प्रेम समूह सूं उदय होय रही प्रभुन की अतुल शोभा कूं पान करत ही श्री महाप्रभुजी के पीठ के पीछे छोटे तकीया कूं धारण करे हैं ।। तब रस सूं भीजे कि कोमल स्वभाव वारे श्री महाप्रभुजी श्री हस्त कमल सूं वाकूं धीरे-धीरे थोरो आश्रय लेकर वहां बिराजमान होय है ।।३३।। तब या समय में भाग्यवान उज्वल भाव वारो श्री अंग सेवक उछल्लित होय रहे प्रेम सूं बीड़ी कूं सजाय प्रिय श्रीजी के श्री हस्त कमल में धारण करे हैं ।।३४।। तब चतुरवर श्री महाप्रभुजी हूं या बीड़ी सूं सींक के टुकड़ा कूं निकार के ढांक के पता कूं न्यारो करिके सुवर्ण जैसे रंगवारे पीरे पान की बीड़ी कूं उछल्लित विलास पूर्वक श्रीमुख में धारण करे हैं ।। तथा अपूर्व की नित्य नवीन शोभावारे श्रीजी प्रथम कही रीति सूं चुना तथा बरास कूं हू श्री मुख में धारण करे है ।।३५।। रस सागर कौतुकन के समुद्र प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी कबहु या पत्र कूं श्री हस्त की अंगुली के अग्र ऊपर राखि के चक्र जैसे अनेकवार वैसे भ्रमावे हैं कि जैसे या अंगुरी सूं भ्रमत-भ्रमत ही अत्यंत दूर में ही जाय के गिरे हैं ।।३७।। तब उछल्लित आश्रय समुहवारे या श्रीजी के सगरे भक्त कि सगरी मृगलोचनी सुंदरी हूं अगाध्य हास्य सूं शोभायमान होय रहे अगाध्य रूप समुद्र में निमग्न होयके अपार हर्ष सागर में निमग्न होय है ।।३८।। तब मनोहर मंद हास्य सूं शोभायमान होय रहे वा श्री महाप्रभुजी के श्री मुखारबिंद कूं मनकी सावधानता सूं नयनन सूं पान करिके वा नयनों के कि वा मन के दास ही होय जाय है ।।३९।। तब कितनेक भक्त श्रेष्ठ तो नम्रता पूर्वक अंजुली कूं बांधि के उछल्लित भाववारे होवत ही हर्षपूर्वक या प्रभुन के आगे विज्ञापना करे हैं ।। कि हे महाराज हे विनोदसिंधो ।।४०।। पत्र के भ्रमायवे कूं जैसे श्री आप जानो हो वैसे और कोऊ हूं नहीं जाने हैं ।। जासूं जैसे भ्रमत-भ्रमत यह पत्र दूर जायके परे है ऐसे रस सागर आपु सूं विना, और को करिवे में समर्थ होय सके है ।। अपितु कोई हू नहीं होय सके है ।। ऐसे विनके वचनन कूं सुनि के प्रसन्नता समूह सूं शोभायमान श्री मुखारविंद वारे होयके श्री महाप्रभुजी

प्रथम स्वयं करी लीला विशेषन की वार्ता कूं करे है ।। तब श्री महाप्रभुजी के मुखारबिंद सूं झर रहे उज्वल अमृत को पान करत अत्यंत उत्साह कूं प्राप्त होवत ही ।।४३।। श्रीजी के आगे वे भक्तवर कहे है ।। कि हे प्रभो जा जाके संग श्री आपु खेले हैं वे वे ही सुंदर भाग्यवारे हैं ।। श्री कल्याण भट जी कहे कि कबहू प्रथम कहे प्रकार सूं यह श्रीजी वा पत्र कूं विलास पूर्वक भ्रमाय...........*(यहां कुछ लाइन छोड़ी गई हैं)*

हे अंग इहां एसी वस्तु नहि है जासूं तिहारे लिये जलकूं पान करू तथापि इहां यह पत्र है ।। हा या पत्र सूं ही जलपान करूंगी वेग ही तुम जल लावो ।।४७।। सो कमलमुखी सुंदरी या प्रकार सूं वाकूं कहे कर वा पत्र कूं दोना बनाय के अपने मुख के संग वाकूं लगाय के जल को पान करती तब सो भक्त हूं वेग ही जल कूं लाय के दे रहयो है ।। सो मृगनयनी सुंदरी हू वा दोना सूं जल को पान कर रही है ।। चिर पर्यंत तृप्त नहीं होय है ।। उत्साह सूं बारंबार ही याचना करे है ।।४९।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि अहो वा समय श्री महाप्रभुजी के विलक्षण रससूं वा पात्र कूं भ्रमावते भये है कि अहो का रस सूं वा प्रिय के निकट डारते भये हैं ।। कि वेसो कमल सूं हूं सुंदर श्रीमुख वारी वा पत्र कूं कहा कर देखती भई हैं कि ।।५०।। दर्शन करिके कितने समय पर्यंत कैसे कितनेक सुख कूं प्राप्त भई है कि लज्जा कूं विजय करिके का उज्वल रस सूं वा पत्र कूं सो मनोहरांगी सुंदरी याचना करती भयी है ।। कि निश्चय सूं की रस सूं वा पत्र कूं माथे पर राखती भई है ।। कि का रस सूं चुंबन करती भई है ।। कि का रस सूं हृदय में धारण करती भयी है ।। कि का रस सूं वाकूं गाढ़ आलिंगन करती भई है ।। कि कहा रस सूं उदार बुद्धि सों प्रियाजी वा पत्र सूं अपने हृदय कूं आलिंगन करती भयी है ।। कि कहा रस सूं वा पत्र कुं गाढ़ आलिंगन करती भई हैं ।। कि कहा रस सूं उदार बुद्धि सों प्रियाजी वा पत्र सूं अपने हृदय कूं आलिंगन करती भई हैं ।। कि वा रस सूं वा पत्र कूं हृदय में कि वैसे और और हू अंगन में धारण करती भयी है ।। कि का रस सूं विहवल होय गयी है कि का रस सूं रोम हर्षवारी भई है ।। कि का रस सूं वा पत्र सूं जल को पान करती भयी है ।। कि का रस सूं वा जल कूं बारंबार अत्यंत पान करिके हू कैसे का कारण सूं कहा तृप्ति नहीं भयी है ।।५४।। सो औरन की कहा

कल्लोल जी बारहवां के तरंग २२ पृष्ठ संख्या १०० में कली ४३ से कली ४७ तक का प्रसंग है, कली ४३ के पीछे ''भ्रमाय'' के शब्द के पीछे की कली नहीं मिली है उसके आगे सो ''हे अंग'' तक का पूरा मैटर है।

भ्रमायके..

का रससु वा पत्र कु हृदय में कि वैसे और और हु अंगन में धारण करती भयी है।। कि का रससु विहवल होय गयी है।। कि का रससु रोम हर्षवारी भयी है।। कि का रससु वा जलकु बारंबार अत्यंत पान करिके हु कैसे का कारणसु कहा तृप्ति नहीं प्राप्त भयी है।।४५।। सो औरन की कहा कहे अस्मदायिक महापुरुष हु वाकु नहीं जान सके है।। सो प्रिय की महाभाग्याने प्रिया प्रिया के कि वा प्रियके मनोहर प्रेम के तरंग अत्यंत मनोहर विशाल मधुरता की धारारुप अत्यंत ही उदार है।। कि या उंचे भाग्यवारी प्यारी के प्राणनाथ की मधुरता रुप सुंदर रत्न समुहवारे जे अत्यंत दीर्घ अनुभव सागर है सो अत्यंत सर्वोपर विराजमान है।। विन प्रियान के वा अनुभव में प्रवेश करवे में को समर्थ होय सके।। अपितु कोई समर्थ नहीं होय सके है।। यह भाव है।। अहो प्रियतम के सबंधी कणिका कणिका के हु अत्यंत थोरे से हु लेश सुं कछुक मिले या पत्र में जो यह पत्र में जो यह पिया निश्चल निर्मूल उच्छल्लित शोभावारे अत्यंत प्रेम कू जो विस्तारित करती भयी है वा प्रेम के उपर श्री महाप्रभुजी अपने कु तथा अपने सगरे सर्वस्वकु निष्कपट ही बारंबार निरांजन करे है।। कि वा प्रेमकु अपनो सगरो सर्वस्व ही अर्पण करिके वाके आधीन होयके रहे है।। तथा वाके सदैव ही अपनेकु अत्यंत रुणी जाने है।। सगरे लोकन में प्रसिद्ध हु अपनी वैसी बड़ी हे।। हे अंग...

कहे अस्मदादिक महापुरुष हूं याकूं नहीं जान सके है ।। सो प्रिय की महाभाग्य निधि या प्रिया के कि वा प्रिय के मनोहर प्रेम के तरंग अत्यंत मनोहर विशाल मधुरता की धारा रूप अत्यंत ही उदार है ।। कि ऊंचे भाग्यवारी प्यारी के प्राणनाथ की मधुरता रूप सुंदर रत्न समूहवांरे जे अत्यंत दीर्घ अनुभव सागर हैं सो अत्यंत सर्वोपर विराजमान है ।। विन प्रियान के वा अनुभव में प्रवेश करवे में को समर्थ होय ।। अपितु कोई नहीं होय सके है ।। यह भाव है ।। अहो प्रियतम के संबंध वारे कणिका के हू अत्यंत थोरे से हू लेस सूं कछुक मिले या पत्र में जो यह प्रिया निश्चल निर्मल उछल्लित शोभावारे अत्यंत प्रेम कूं जो विस्तारित करती भयी है वा प्रेम के ऊपर श्री महाप्रभुजी अपने कूं तथा अपने सगरे सर्वस्व कूं निष्कपट ही बारंबार निरांजन करे हैं ।। कि वा प्रेम कूं अपनो सगरो सर्वस्व ही अर्पण करिके वाके आधीन होयके रहे हैं ।। तथा वाके सदैव ही अपने कूं अत्यंत ही रूणी ही जाने हैं ।। सगरे लोकन में प्रसिद्ध हूं अपनी वेसी बड़ी महिमा कि उत्कर्ष कूं हूं कछू ही नहीं जाने है ।।५९।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि या प्रिय के अत्यंत मधुर अत्यंत मनोहर चरित्र कूं आगे हूं वर्णन करूँगो ।। अबतो इतनो ही कहयो है ।। हे भक्तराज अब अमृत में हू बिष बुद्धि कूं करिवे वारी कि महामधुर रस सूं मनोहर या प्रिय की लीला कूं कर्णका भूषण रूप करिये सो वर्णन करूँ हूँ ।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले द्वाविस स्तरंग समाप्तम् ।।२२।।

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २३ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २३ लिख्यते ॥

श्लोक -- **तांबुल मश्चन्स गृहीत चुर्णोजात्वी हते पाणिसरोरुहस्य प्रक्षालनामित्यति सावधानो भवतोस्य कश्चित्कुल भाजनेनः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि बीड़ी कूं आरोगत तथा ऊपर चूना की गोली कूं लेकर श्री महाप्रभुजी कबहू श्री हस्त कमल के पखारवे कूं जब अभिलाषा करे हैं तब अत्यंत सावधान या श्रीजी कूं कोऊ भक्त दक्षण हाथ में धारण किये जलपात्र सूं जल कूं लाय के दूसरे हाथ सूं पडगी कूं लेकर उछल्लित अधिक उज्वल भाव वारो सो भक्त ऊंचो देखत ही ठाड़ो ही बिराजे है ॥ जब श्री महाप्रभुजी पखारवे के लिये श्री हस्त कूं आगे करे है तब उज्वल मनोहर बुद्धिवारो सो भक्त पड़गी कूं वा श्री हस्त के तले धारण करिके वा श्री हस्त के ऊपर वा जल पात्र सूं जल कूं देवत ही प्रिय श्रीजी सूं वा श्री हस्त कूं पखरवावे है ॥ प्रथम तो या सेवा कूं सूरत गामवासी सुंदर भाग्यवारो जनार्दन दास करतो हतो ॥ यासूं पीछे वो तो वैसे सुंदर भाग्यवारे अन्य-अन्य ने ही करी है ॥ अब तो जगत में छोकरा ऐसे प्रसिद्ध उछल्लित भाग्यवारो श्यामदास ही करे है ॥ या प्रकार यह श्री महाप्रभुजी श्री हस्त कमल कूं पखार के समीप ही बिराजमान जो श्री मुखारविंद के पोंछवे कूं उपरना है वाकूं भली-भाँति सूं लेकर वाकूं श्री हस्त सूं भली भांति पूछे हैं ॥ असंख्यात भक्त समूह कि असंख्यात कमल नयनी के जे समूह है सो तो परम अनुराग सूं ही श्रीजी कूं चारो ओर सूं ही सघन ही वेष्टित कर रहे हैं ॥ तब उछल रहे उज्वल भाववारो सो ध्यानदास जी **या समय में वा परम पुरुषोत्तम श्रीजी के आगे ठाड़ो बिराजमान होवत ही सुंदर रस के प्रवाह स्वरूप मनोहर वा सारंगी कूं हस्त में लेकर उछल्लित होय रहे रस के आवेश समूह सूं वाकूं बजावत ही निरंतर शुष्क कूं आर्द्र करत के खल दुष्ट हृदय वारेन के वज्र लोह पत्थर चित्त कूं हूं अनेक प्रकार के राग तरंगन के रंगन सूं द्रवीभूत करत या गुण सागर राजाधिराज व्रजराज श्रीजी कूं अनेक प्रकार**

सूं ही अत्यंत प्रसन्न करे है ।। तब हर्ष विशेष सूं रस सागर श्री महाप्रभुजी बीच-बीच में मनोहर ताल कूं दे रहे हैं ।। कि वा राग रस के अत्यंत निरदोष मनोहर अत्यंत मधुरतामय प्रवाहन में बारंबार निमग्न होय रहे है ।। के बीच-बीच में धीरे-धीरे अत्यंत मधुर गान हूं कर रहे हैं ।। कि वेसी महासुंदर कमल नयनी सुंदरीगण वा श्रीजी के श्री मुखारबिंद कू टक-टकी लगायके पान कर रही है ।। कि बीच-बीच में गुण सागर वा ध्यानदास कूं पद सिखाय रहे हैं ।। तब जो कोऊ अनिरवचनीय शोभा अत्यंत उछल्लित होय है ।। ताकूं बड़े बुद्धिमान हूं कहिवे में समर्थ है कहा ।। अपितु नहीं है ।। तथा श्री महाप्रभुजी के जे प्रसाद कि करुणा कटाक्ष कि जैसे प्रेम । विलोकन अत्यंत उज्वल अमृत कूं विषरूप करवे वारे कि महामधुर जे मंद हास्य वा श्री महाप्रभुजी सूं या ध्यानदास जी ने संचय किये हैं ।। और ध्यानदास जी के ऊपर प्रभुन की प्रसन्नता आदि भई है विनके कणिका कूं हू या ध्यानदास सूं अन्य उछल्लित वैसे भाग्यन सूं रहित और कोऊ जन प्राप्त (होय है) अपितु कोऊ हू नहीं प्राप्त होय है ।। कबहू कृपा समुद्र प्राणनाथजी महाप्रभुजी संध्योपासन करत हते ।। तब वा सारंगी में ध्यानदास जी ने हमीर राग प्रगटायो ।। तब ही रससागर श्री महाप्रभुजी बहुत बार ही वामें अत्यंत ही निमग्न होय है ।। कि बारंबार ही वा संध्या विधी कूं विस्मरण ही कर रहे हैं ।। परंतु अत्यंत गंभीर श्री महाप्रभुजी या बात कूं प्रगट नहीं करते भये हैं जब वा राग की मधुरता रूप महासमुद्र में निमग्न होयवे लगे हैं ।। तब ही सुंदर हंसत श्री मुखवारे होयके वा ध्यानदास कूं कहेते भये है के हे अंग एक क्षण तो रह जाय संध्यापासन जब हूं कर चुकूं तब ही तुम सारंगी बजाइयो ऐसे कह कर तब श्री महाप्रभुजी ने मौन ग्रहयो ।। तब ध्यानदास जी विराम कियो तब ही ए श्री महाप्रभुजी वा सारंगी के राग संबंधी प्रवाह तरंग समूहन सूं निरंतर भीजत ही बड़े यत्न सूं ही संध्योपासन करवे में समर्थ होते भये है ।। ऐसे अन्य समय में हूं सो ध्यानदास जी वा सारंगी सूं सुंदर राग संमंधो मधुरता के प्रवाहन कूं प्रगट कर रहयो हतो तब उछलित आदर भाव वारो के उछल्लित हर्ष वारो प्रिय श्री महाप्रभु जी वाकूं कहेते भये है के "हे ध्यानदास, हे अंग तोकूं हूं कहा देवूं ।। देवे कूं अब कछु नहीं रह्यो है ।।" ऐसे या प्रकार के वचनामृत सूं वो, ध्यानदास कूं अत्यंत ही प्रसन्नता सूं सूचना करते भये है ।। कि जो

श्री महाप्रभुन सूं वेग ही सगरो सर्वस्व हू दान करांय देवे है ।। श्री कल्याणभट्ट जी कहे है के हे अंग सो ध्यानदास जी हू वैसो ही सुपात्र कृपापात्र है के तामें प्रभुन की ऐसी प्रसन्न स्थिरता कूं धारण कर रही है के अत्यंत बढ ही रही है, सो दिखावे है के वा समय में ही सो ध्यानदास हू अत्यंत ही द्रवीभूत होय जातो भयो है के अपने कूं तथा अपने सर्वस्व कूं हू विस्मरण कर जातो भयो है ।। सो परम पुरुष श्री गोकुलनायक प्रभुन को ऐसो कृपापात्र महाभाग्य निधि गुणसागर सो ध्यानदास जी है वाकूं दर्शन के प्रकार सूं होय ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि यह भाग्यवान ध्यानदास जी अहो जब अपने कूं अतंरध्यान करते भये हैं तब यह प्राणपती श्री महाप्रभुजी तो चरण कमलन कूं पखार रहे हते तब कोऊ ने कहयो कि "ध्यानदास जी पोंहोंचे" ये आचमन करवे के समय में श्री महाप्रभुजी ने सुन्यो ।। सुनत ही हा हा कहत ही श्री हस्त में धारण किये जलपात्र कूं डारते भये है ।। के आचमन के अर्थ धारण किये जलपात्र कूं भूमि पर डार देते भये हैं ।। के आचमन के अर्थ धारण किये जल कूं हू डार देते भये हैं ।। तथा फेर हू हा शब्द कूं कहे कर ही करुणा सागर श्री महाप्रभुजी यह कहेते भये हैं के "ध्यानदास जी ने देह को त्याग कियो है के बहोत दिन ही दुःखी रहयो है" ऐसे कहेकर प्रेम सूं तरंग वारो होय रहयो जाको श्री मुख है ऐसे सो श्रीजी अहो दीर्घ स्वास कूं हू बाहर प्रगट करते भये हैं ।। तथा महागंभीर हू श्री महाप्रभुजी फेर हू आज्ञा करते भये है के "**हा हा आज दिन सूं सारंगी डूबी अब याकूं जो बजावे सो हू बावरो के जो सुने सो हू बाबरो ।। के अहो कैसो गुणी सुंदर अत्यंत श्रेष्ठ भक्त हतो सगरे हू शास्त्र प्रकारन में जाने कछु हू न जान्यो हतो केवल स्वरूप में ही अत्यंत चेष्टावारो हतो ।। याको वर्णन विशेष सूं नहीं बन सके है ।। अहो याने सेवा हू सो सो भारी हू करी है ।।**" श्री कल्याण भट्ट जी कहे है इत्यादि वचनामृत सूं यह निश्चय होय है के ध्यानदास जी सों श्री महाप्रभुजी सदैव ही अत्यंत प्रसन्न चित्त हते सो उज्वल गुण सागर या ध्यानदासजी के भाग्यन कूं संक्षेप सूं कहवे में बुद्धिमान हू समर्थ होय सकेगो ।। या ध्यानदास जी के सेवा के गुणन को हूं हृदय में ही सदा धारण करके प्रिय चक्रवर्ती श्री महाप्रभुजी प्रसंग प्रसंग में श्रीमुख सूं उछल्लित शोभा वारे होवत ही वा वा सेवा तथा गुणन कूं प्रकाश करे है ।। अहो श्री प्राणनाथ

श्री जी की ऐसी करुणा प्रीति के निर्दोष पात्र भाव कूं धारण करि रहे या ध्यानदास के देह त्याग करे पीछे चरणारबिंद की प्राप्ति कैसी भई है यह हू नहीं जानूं हूं ।। तथा गुणीन में श्रेष्ठ के प्राणनाथ के कृपापात्र या ध्यानदास के अंतरध्यान होने पर या ध्यानदास जी को जो भ्राता अत्यंत बुद्धिमान चतुरदास है सो हू सदैव ही सावधानता सूं या प्रिय के आगे सारंगी को नहीं बजावतो भयो है किंतु बजावतो हू भयो है ।। परंतु यह रसिकवर श्री प्राणनाथ जी वाकूं वैसे नहीं सुनते भये हैं ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि प्रिय श्री महाप्रभुजी सूं कबहू कोऊ विज्ञापना करतो भयो है के हे प्रभो ध्यानदास जी केसो हतो तो तब श्री महाप्रभुजी ने आज्ञा करी के ''**ध्यानदास जी बड़े ही चतुर हते सारंगी बजायवे में तो अत्यंत चतुर, ऐसो मलेछपती के हू घर में नहीं है ।। तथा और ठोर में हू नहीं है ।।**'' तब वाने फेर विज्ञापना करी के हे महाप्रभो प्रिय ध्यानदास तथा चतुरदास कू कितनो अंतर है सो श्री आप प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी हर्षपूर्वक ही आज्ञा करे है के सारंगी के बजायवे की चातुरीन में ध्यानदास के समान तो **सगरे हू भूमंडल में कोऊ प्रकार सूं कोऊ नहीं है ।। यह चतुरदास वाको बुद्धिमान भ्राता है वाने बहुतवार ही तांडना करि करि शिक्षा दीनी है कि कछु यामें सीख जाय, और प्रकार सूं कछु नहीं सीखतो तो वाके गुजरने पर तो वा ध्यानदास के अनुचर या चतुरदास के समान हू सारंगी कू बजायवे में चतुर बुद्धिमान कहु भी कोऊ भी नहीं है ।।**'' श्री कल्याण भट्टजी कहे हैं कि **कबहु तो या समय में शय्या के निकट विराजमान सो वृन्दावनदास हू अपने चतुर बिहारी नाम पितृ कि चाचा के रचना किये पदन कूं गान करिके प्राणनाथ कूं अत्यंत प्रसन्न करे है ।। याके हू पद सुंदर हैं ।। श्री महाप्रभुजी कूं बहुत ही रूचे है ।। याके सगरे पदन कूं या वृंदावन के मुख सू ही श्री महाप्रभु जी स्वयं मधुर गान करिके शिक्षा देवे है ।। वैसे भूल चूक कहे अक्षरन कू हूं स्वयं मधुर प्रकार सूं कहे कर शिक्षा देवे है कि यहां यह तान है यहां यह अक्षर है तथा सो वृंदावनदास हू श्री महाप्रभुन सूं वैसे सीख के श्री महाप्रभु जी के आगे वैसे ही मधुर गान करे है ।। श्री महाप्रभुजी हू प्रसन्न चित्त होय के वृंदावनदास ने गान किये वा चतुर बिहारी के वेसे अत्यंत मधुर पदन कूं विशेष रुचि सूं ही श्रवण करे है ।। सो वृंदावनदास हू वा पदन कूं गान करत करत ही काहु समय में**

ऐसे पश्चाताप समूह पूर्वक ही विज्ञापना करत भयो है कि वा चतुर बिहारी के पदन कूं गान करत मोकूं कहूं कहूं भलो प्रतीत नहीं होय है ॥ तब प्रिय श्री महाप्रभुजी आज्ञा करत भये है कि ''हे अंग तुम ऐसे मति कहियो ऐसे कहियो कि कहूं-कहूं भलो प्रतीत होय है ॥'' यह श्री महाप्रभुजी प्रभृत के अभिमान कूं नाश करिवे वारे अपने वचन समूह की माधुरी सूं भक्तराजन कूं बड़े विस्तारवारे परम हर्ष के समुद्र में निमग्न करत अनेक प्रकार के गुण समूहवारे तथा राग तान में चतुर के कोमल मधुर पदन की रचना में अत्यंत चतुर निर्दोष वा चतुर बिहारी नाम वा वृंदावन के चाचा कूं सराहना करत अनेक प्रकार के अत्यंत मनोहर वाके चरित्र कूं सो सगरे जगत के प्रभू श्रीजी अत्यंत प्रसन्न श्री मुखारबिंद पूर्वक वरणन करत भये है ॥ वा चतुर बिहारी के प्रसंग सूं उदार राय करुणासागर भगवान श्रीजी या वृंदावनदास के हू शील आदि गुण समूहन के उत्कर्ष कूं तथा वाकी नम्रता आदि के हू उत्कर्ष कू हूं वरणन करते तथा ऊपर सदैव ही प्रसन्न मन हते ॥५३॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले त्रिविस स्तरंग समाप्तम् ॥२३॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २४ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २४ लिख्यते ॥

श्लोक -- **भगवानदास नामा भक्तवरोयः समं स्वजनैका**
करे टोवास्तव्य समेयेस्मिः आपति प्रेमणां ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि संमधीन के सहित श्रेष्ठ भक्त जो करहटी निवासी भगवानदास है सो या समय में प्रेम सूं गान करे है ॥ सुंदर मधुर पूर्व देश की भाषा में सुंदर रचना किये सुंदर अर्थवारे पदन कूं सो गान करे है ॥ सो वाको गान अत्यंत मधुर है ॥ प्राणनाथ कूं अत्यंत रुचे है ॥ तथा प्राणनाथ के भक्त समूहन कूं अत्यंत रुचे है ॥ सो मंद हास्य सूं शोभायमान श्री मुखारबिंद सों बाहर प्रगट होय रहयो है प्रभा समूह जाकू

ऐसो श्री गोकुलचंद्र श्रीजी प्रेम आदर पूर्वक ही विनकूं सुने है ।। तामें हमारे प्रभुन को जो अत्यंत रुचे है ।। सो मंद हास्य सूं शोभायमान श्री मुखारविंद सूं बाहेर प्रगट होय रहयो है प्रभाव समूह जाकूं ऐसो सो श्री गोकुलचंद्र श्रीजी प्रेम आदर पूर्वक ही विन कीर्तनन को सुने है ।। तामें हमारे प्रभुन को जो अत्यंत रुचे है ।। ऐसे कवि श्रेष्ठ विद्यापति के पूर्व देश की मधुर भाषा सूं रचना किये लरी नाम के मधुर कीर्तन तथा और हू मधुर कीर्तनन कूं मधुर कंठवारो सो भगवानदास सुंदर मधुर कंठवारे सगरे सम्बन्धीन के सहित ही गान करे है ।। या भगवानदास की सीता नाम वारी बेटी है तथा मान या नामवारी स्त्री है या अवसर में भाव विशेष के निरंतर विवश होयके वे दोनों ही कछुक गान करवे लिये निरंतर विचार कर रही है ।। परंतु समाज सूं अत्यंत लजाय के बारंबार रुक रही है ।। तथापि उत्कंठा तो विनकूं बारंबार गान करवे कूं प्रेरणा करे है ।। तब वा दोनों के मध्य में **अंतरयामी स्वयं भगवान श्रीजी विराजमान होय जाते भये हैं ।। तासूं या अवसर में वैसे सुंदर श्री मुख सूं आज्ञा करते भये है के ''सब अपने-अपने स्थान कूं वेग चलो'' या प्रकार सर्वेश्वर श्रीजी की आज्ञा कूं सुनकर प्राय सगरे ही श्री महाप्रभुजी की आज्ञा सूं चलवे कूं प्रस्थान करे है ।। तब अवसर पायके वे दोनों ही प्रेम सूं मधुर गान करवे कूं उद्यम करत ही भयी हैं ।। तब कोउ सो न्यारी प्रतीत होय रही वेसी अत्यन्त न प्रतीत होयवे सूं वैसी अत्यंत मधुर स्वरा सूं जैसे एक ही गान कर रही होय वैसे ही वो दोनों गान करत वा प्रिय कूं अत्यंत सुखदायक होती भई है ।। सो पूर्व की भाषा सों वे दोनों वैसे ही सो पद, तथा बिन दोनों के भाव, तथा उत्साह, तथा विनकी मधुर स्वरा सूं जैसे एक ही गान कर रही होय तथा विनके अत्यंत मनोहर भाग्य वे सगरे ही रस सागर श्रीजी कूं तथा श्रीजी के हर्ष कूं अत्यंत ही पल्लवित कर देते भये हैं ।। सगरे सौभाग्यन के निधि तथा मधुरतारूप मणिन के पर्वत के सगरे उत्कर्ष सों शोभायमान सगरे अंगवारो चारों ओर सों सुखरूप के चिंतामणि, कामधेनु कल्पवृक्ष अमृत तथा चंद्रमा के सुमेर तथा कामदेव सूं हू अत्यंत सुंदर मनोहर के सुंदर भाग्यवारो सो समय, के वैसी रात्रि, के वैसो प्रहर, के कोऊ अनिर्वचनीय ऐसो महूरत, सो वैसी घड़ी, अत्यंत ही धन्य है ।। सो श्रेष्ठ भक्त जनो ने ही अनुभव करी है ।।** तब अबहु वा श्रीजी के प्रिय भक्त अनुभव कर रहे

है ।। के प्रभुन की कृपा सूं के वा प्रिय के महेद भक्तन की कृपा सूं ही और हू वामें वैसे उद्यमवारे चतुरजन चतुरता सूं अनुभव करवे कूं प्राप्त होय है ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे हैं कि एसो हू 'हूं' जो वा सगरेन को अत्यंत अनुभव करत भयो हूं के वैसे आगे हू अनुभव करवे कूं निसंशय कमर कस रहयो हूं ।। यामें कारण तो श्रीजी की तथा श्रीजी के कृपापात्र महेद भक्तन की कृपा ही है यह भाव है ।। और जिनको मुख निष्फल है के चित्त हू वैसे निष्फल है के कान हू वैसे निष्फल है सो दुर्बुद्धी जीव या प्रिय के या चरित्रन कूं वर्णन करवे में के ध्यान करवे में के श्रवण करवे में कैसे समर्थ होय सके ।। अपितु कबहु नहीं होय सके है ।। श्री कल्याण भट्ट जी अब प्रसंग कू कहे है के जब श्री महाप्रभुजी स्पष्ट ही आज्ञा करिके, ''सब जाओ'' तब सुंदर अवसर में वा दोनों भाग्यवारीन ने जो पूर्व की भाषा सूं रचना कियो महामधुर गीत गायो है वाको अर्थ कहूं हूं के -- ''अथ प्रिये हमकूं तो जाईवे लिये आज्ञा दई है परंतु चित्त तो हमारो आपने ही ले लियो है ।। श्री आपतो सुंदर मधुर लाल पर्यंक पर बिराजो हो ।। हमकूं तो जायवे कूं आज्ञा दीनी है ।। चित्त तो हमारो परम चतुर श्री आपने वेग ही ले लियो है ।। अब वा प्रिय कूं प्रसन्न करवे वारे वा भाषागीत कूं कहूं हूं सो सुनिये कि --

आपन बेठे लाल पलंग पर, बिदा कर दीन रे ।
मोर मन लीन रे, परवीन रे मोर मन लीन रे ।।

या मधुर सुंदर गीत कूं सुनके प्रिय राजाधिराज श्री महाप्रभु जी जानके हूं अपने सेवकन सूं पूछते भये है के को गावे है ।। तब वेहू विन दोनोंन के नाम कूं विज्ञापना करत भये हैं ।। सो रस सागर श्री महाप्रभुजी पोढवे की इच्छा करत हू उछल्लित होय रहे हैं प्रेम समूह सों महासुंदरवर सुनवे लिये फेर हूं वा पर्यंक पर उठके बैठते भये हैं ।। तथा प्रसन्न होवत वा मधुर गान कूं सुनत भये है ।। तब सुंदर या गान कूं सुनकर भक्त हू सगरे अत्यंत ही प्रसन्न होते भये हैं ।। तब सुंदर या गान कूं सुनकर भक्त हू सगरे अत्यंत ही प्रसन्न होते भये है ।। विन दोनोन के वा समय के अनुकूल वा मधुर गान कूं सुनके अमृत कंठी सुंदरी तो अत्यंत प्रसन्न होती भई है ।। तब वा गान कूं प्रसंशा करत सुंदर हसित श्री मुखारबिंद वारे श्री महाप्रभुजी यह आज्ञा करत भये है के यह पूर्व की भाषा महा मधुर है ।। चित्त में यह का प्रकार

सूं सोहावे है ।। तथा सुंदर स्त्री जन को गान कियो सुंदर प्रकाशमान रसवारो गीत हू कैसो भावे है ।। यह रात्रि हू चित्त में कैसी सोहावे है ।। सो श्री कल्याण भट्ट जी कहे है सो माता तथा बेटी दोनों मिलके जोलों गान करती भई है तो लों रुचि और आदर सों उछल्लित आरंद्र भाव वारो यह श्री महाप्रभुजी बैठके प्रेम समूह सों सुनत ही विराजमान होते भये हैं ।। तथा हर्ष के रसके प्रवाह तथा उत्साह उत्कंठा सूं विशेष होयके सो गुणसागर सीता हू प्रिय कूं प्रसन्न करवे वारे वा गान कूं मन सूं रोकवे लिये समर्थ न होती भई है ।। और जे उछल्लित होय रहे वात्सल्य भाव सूं पूर्ण भक्त हैं सो सदैव ही प्रिय के सुख अर्थ ही अत्यंत यतन करे है ।। वे भक्तराज तो या बढ़ रहे उजागर सूं अत्यंत डरके धीरे-धीरे वा सीता कूं समाधान करत कहे है कि अये भाग्यवती तिहारे गान की मधुरता में आसक्त, बुद्धिवारे तिहारे प्रियवर के पोढ़वे में विलंब होय रहयो है ।। हे प्रिय के सुख सूं सुखी होयवेवारी सुंदरी, या गान कूं अविराम करिये ।। यह तिहारो प्यारो अब निद्रा के हर्ष सूं प्राप्त होय ।। या प्रकार वाके आगे विज्ञापना करके उदार भाव वारे वे भक्तराज बड़े यत्न सूं वा गान कूं विराम करावते भये हैं ।। और श्री महाप्रभु जी हूं या अपनी कृपा समुह रूप कल्पवृक्ष के फलन में जा जा फल कूं वेग ही प्रगट करते भये है ।। तथा आगे हू प्रगट करेंगे ।। महास्वाद वारे वा वा फलन में एक महाप्रसाद रूप फल कूं आदि में भली-भाँति सदैव ही दिखावते भये हैं ।। तथा श्री मुखारविंद की वाणि सूं वा दोनों के प्रति वा मधुर मनोहर फल कूं दान हूं करावते भये हैं ।। वा फल कूं अन्य को जान सके है ।। परंतु जो पुरुष, के स्त्री जाकूं वा फल को दान हू प्राप्त होय है सोई ही जाने है और नहीं जाने है एसे कबहु प्रिय राजाधिराज श्रीजी उत्तर दिशा में तिबारी में रस सूं शोभायमान कोणां में बिराजमान हर्ष शय्या पर बिराजमान हैं वैसे-वैसे मृगनयनी भक्त सुंदरी जाके श्री मुखारबिंद की शोभाकूं पान कर रही है ।। तथा प्रेम रस सूं भीजे ह्रदय वारे अनेक प्रकार के मनोहर भाव वारे चारों ओर सूं वेष्टित कर रहे है ।। तब तामें के पात्रन की रचना में अत्यंत चतुर मनोहर भाव वारो जो लाला नाम भक्त है सो मथुरा सों आयके वा प्रिय के मनोहर अमृत कुंडली कूं बजावतो भयो है ।। सो मनोहर अमृत कुंडली करोडन पद्मन काम कूं विजय करवे वारे प्रिय कूं अत्यंत रूचती भयी

है ।। सो अमृत कुंडली में अत्यंत बढ़ रही वा प्रिय की रूची कूं जानके ये लाला नाम भक्त हू बढ़ि रहे उत्साह समूहवारो होय के फेर ही या अमृत घुंडली कूं अत्यंत मनोहर प्रकार सूं बजावतो भयो है ।। वा अमृत कुंडली के बजायवे सूं वाने जब अत्यंत मनोहर महारस प्रगट कियो वा रस में निमग्न होवत ही प्रिय श्रीजी हस्त कमल सूं तालकूं हूं देवत अत्यंत ही शोभायमान होते भये हैं ।। तब तो वा लाला भक्त कूं हृदय कमल तो लाखन गुणों विशेष ही प्रफुल्लित होय जातो भयो है ।। तासूं उछल्लित रस के आवेश वस होयके सो भक्त वाकूं अत्यंत मनोहर प्रकार सूं ही बजावतो भयो है ।। वामें नाना प्रकार की मनोहर गतिन कूं के विस्तार वारे तरंगन कूं प्रगट करतो भयो है ।। जिनकूं श्रवण कर रहे या प्रियवर श्रीजी को जो हर्ष है सो आकाश कूं हू लेहन करवे वारो होय गयो है ।। के महा ऊंचो होय गयो है ।। अहो राजाधिराजन सूं ही पुजित जाके चरण कमल है एसे वा प्रिय के भ्रु तथा नयन तथा हस्त कमल के श्री मस्तक के भुजा अत्यंत नृत्य कूं ही निरंतर करते भये है ।। तथा कपोल युगल हू अत्यंत नाचत ही प्रफुल्लित होय जातो भयो है ।। अत्यंत चमत्कार वारे संख देश सूं हूं रस को प्रवाह ही प्रसरतो भयो है ।। तथा श्री भालदेश हूं अत्यंत हर्ष सूं अत्यंत हंस रहयो ही प्रतीत होय जातो भयो है ।। तथा या प्रियवर कूं वीसेकी लाली सूं लाल होय रहयो अधर हूं निरंतर गान करत ही प्रतीत होतो भयो है ।। तब चरण चोकी पर बिराजमान अखंड शोभावारे अत्यंत उज्वल दोनों चरण कमल हू हर्ष विशेष सूं मानों अत्यंत नाचत ही अत्यंत शोभायमान होते भये है तथा अत्यंत स्वतंत्र के कोऊ सूं हूं वस न करवे योग्य वा प्रिय कूं आज मैंने वेग ही वस कर लीनो है या प्रकार के हर्ष सों यह लीला भक्त कों रस हूं हर्ष सूं अत्यंत नाच रहयो ही प्रतीत होते भयो है ।। तथा चारों ओर ही वहां भली प्रकार प्रसरे वा प्रिय के श्री अंग समंधी तेज समूहन सूं नेत्रन को देखवे में समर्था न होयवे सूं तब कोऊ जन हू वा प्रिय को देखवे में हूं समर्थ न होतो भयो है ।। तथा अपने कृपा तरंग कूं दिखाय रहे ऐसे प्रसन्न भये वा प्रभु कूं देख वा समय में लाला नाम भक्त पर अत्यंत ही प्रसन्न होते भये हैं ।। तामें कितने भक्त तो वा प्रिय लाला के प्रति देते भये हैं ।। तथा और कितने तो उज्वल कंचुक के मनोहर सुंदर कमर पटका कि और कितने तो पाग चादर वैसे

और कितने वा सगरे वस्त्रन कूं वार वार के देते भये है ।। कितने मनोहर गद्दर के अत्यंत सुंदर रोमवारो अमूल्य कश्मीरी पामरी एसे प्रसिद्ध पट्टु कूं देते भये हैं ।। और तो सुवर्ण माला के रत्न जटित मुद्रिका के भूषणन कूं देते भये हैं ।। वैसे भक्त सुंदरी हू वा वा वस्त्र भूषणन कूं याके प्रति देती भई है ।। कितनेक भक्त तो अत्यंत हर्ष सूं याके मुख कूं मिश्री सूं भरते भये हैं ।। तथा और भक्त तो याने हमारे प्रिय कूं अत्यंत प्रसन्न कियो है या प्रकार सूं उछल्लित भाव वारे होयके वाके ऊपर वेग ही धन तथा प्राण तथा सर्वस्व कूं हूं वारते भये हैं तथा या सुंदर उछल्लित भाग्यवारे भक्त ने जो उपकार कियो है वाके तुल्य कछु नहीं है या विचार सूं वाके चरणन में अपने सिर कूं धारण करते भये हैं ।।

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले चतुर्विस स्तरंग समाप्तम् ।।२४।।

।। श्री श्री गोकुलेशो जयति ।। श्री रमणेशो जयति ।।

तरंग -- २५ ।।

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २५ लिख्यते ।।

श्लोक -- **प्रिय प्रसन्न करुणा भरेण श्रीमज मां कारित वा श्चं**
पुत्रं तथा पुत्र विठलराय संज्ञं गोवर्द्धनेस संतन पंचतस्य ।।

याको अर्थ -- तब श्री महाप्रभुजी अत्यंत कृपा समूह सूं कोऊ सेवक कूं पठाय के अतुल चतुर या लाला भक्त ने बजाये वा अमृत कुंडली नाम वाजा के सुंदर शब्द कूं विनके कानों में अतिथी करायवे लिये कि सुनायवे लिये अपने शोभायमान पुत्र विठ्ठलराय तथा वाके पुत्र गोवर्द्धनेश जी कूं हूं बुलवावते भये हैं ।। सो सेवक हूं श्रीजी के श्रीमुख की आज्ञा कूं मस्तक में धारके अटारी के ऊपर दौड़के जायके निर्दोष विराजमान वा दोनोंन कूं श्री मुख की आज्ञा सुनावतो भयो है ।। तब श्री महाप्रभु अपनी कृपा समूह अपनी प्रसन्नता के प्रगट करवे वारे अमृत समुद्रन कूं हूं जाने विजय कियो है तथा अपार जाकी शोभा है एसे वा अमृत कुंडली के राग माधुर्य कूं मोकूं पान करायवे लिये मोकूं बुलवायो है या प्रकार सूं बढ़ि रहयो है उत्साह रूप स्वरूप जिनमें तथा

अत्यंत नम्र जो वे दोनों हैं वहां वेग ही आय जाते भये हैं ।। तब नीचे बिछे बिछोना पर वैसे वात्सल्य भाव सूं वा दोनोन कूं प्रिय श्रीजी सुखपूर्वक बैठावते भये हैं ।। तथा स्वयं हू सो श्री महाप्रभु जी वा शय्या कूं छांडि के चरण के तले धारण करी चौकी के ऊपर ही विनके निकट बैठि के वा अमृत कुंडली के बजायवे में परम चतुर वा लाला भक्त के अत्यंत उत्साह के बढ़ायवे वारे तथा वा बालकन के हू अत्यंत उत्साह कूं बढ़ायवे वारे अपने प्रसाद कूं दिखायवे के लिये निकट ही बिराजमान होते भये है ।। तब मंद हास्य सूं शोभायमान श्री मुखारबिंद वारे श्री प्राणनाथ श्री महाप्रभु जी वा दोनों बालकन कूं आज्ञा करते भये है ।। कि हे वत्सो सुनो कि बजायवे में परम चतुर यह या अमृत कुंडली कूं मनोहर सुंदर ताल पूर्वक कैसे बजावे है ।। अत्यंत उच्छल्लित होय रहे रस सूं मैंने तुम दोनोंन कूं यह सुनायवे लिये ही बुलवायो है ।। हर्ष सूं प्रफुल्लित श्री मुखवारे दोनों हूं प्राणनाथ के वैसे वा वचनामृत कूं कानरूप अंजुलीन सूं पान करिके अपने चरणन कूं प्रणाम करते भये हैं ।। **तब प्राणनाथ श्रीजी श्री हस्त कमलन सूं विलास पूर्वक ही ताल देवे कूं प्रारंभ करते भये है ।। सो लाला भक्त तो नाना प्रकार के मधुर प्रकारन सूं ही वा अमृत कुंडली कूं बजावतो भयो है ।। प्रभुन के वैसे अभिप्राय कूं जानके वा अमृत कुंडली के नाद को जो रस है सो वैसे ही अत्यन्त बढ़तो भयो है ।। कि जैसे त्रिलोकी में हू नहीं समावतो भयो है ।। तब श्री करुणा सागर समुद्र ईश्वरेश्वर श्री महाप्रभुजी अत्यंत प्रसन्न होयके अपने अत्यंत मनोहर उपरना कूं वाके प्रति देते भये हैं तथा सुंदर स्वादवारी मिठाई महाप्रसाद कूं दिवावते भये हैं ।। तब परम पुरुष श्री महाप्रभुजी कूं उत्साह लीला रस प्रसन्नता विलास करुणा समूहन सूं आनंद दायक कि ईश्वरता मधुरता की तरंग रंगन कूं निपुणता तथा परम चतुरता कूं विशेष भूषणरूप कि उदारता सुंदरता रस सूं आद्रता कि हास्य रसमय होय रहयो जो स्वरूप है सो या रस सूं वा रस शय्या के ऊपर छ घड़ी पर्यंत ही बैठ के बिराजमान होते भये हैं ।। महाप्रभुन कूं या प्रकार कूं महारसीलो रस सूं आर्द्र स्वरूप जो मैंने कि तथा और हू जा जा भक्त ने दरसन कियो है विनके चरण कमलन की रजकूं हूं अपने मस्तक में आज धारण करवे लिये प्रार्थना करू हूँ ।। याके अनंतर रस सागर श्री महाप्रभुजी भक्त जनन कूं आज्ञा देकर निद्रा सुख में आज्ञा करते भये हैं ।।**

तब पुत्र विट्ठलराय जी कि पुत्र श्री गोवर्द्धनेश जी हूं अपने घर कूं जाते भये हैं ।। तब भक्त हूं वा जगत प्रभु श्रीजी कूं प्रणाम करिके तथा परम प्रीति सूं श्रीजी के प्रति आशीस देके वा लाला नाम भक्त कूं संग लेके अपने घर में जाते भये हैं ।। वहां हूं हृदय सूं अपने प्रिय पर अनेक प्रकार के वस्त्र तथा भूषण कूं न्योछावर कर करके याके प्रति देते भये हैं ।। तथा अत्यंत उछल्लित भाववारे वा सगरे ही सुंदर भक्त गीत विशेष सहित भाववारे वा सगरे ही सुंदर भक्त गीत विशेष सहित ही मिलके महोच्छव कूं करते भये है ।। महाप्रसाद तथा सितोपला कि मिश्री स्वेत हू प्रीत सूं सबन के प्रति बांट के देते भये हैं ।। तथा बढ़ि रहे हैं हर्ष के प्रवाह के समूह जिनमें ऐसे वे भक्तजन प्रिय के हर्ष निमित्त ही वा लाला नाम भक्त कूं प्रेम आदर सूं कि प्रसाद वस्त्रादि के देवे सूं आनंदित करावत कितनेक दिन इहां निवास करावते भये है ।। तथा सोहू प्राणनाथ की कृपा सूं कि श्रीजी के भक्तन की कृपा सूं अपने भाग्यरूप वृक्षन कूं फूल्यो जानत ही रस समुद्र के प्रवाहन कूं प्रकाश कर रही वा अमृत कुंडली सूं वा प्रभुन कूं भक्ति सूं बहुत प्रकार सूं सेवा करत अपने लौकिक सगरे कामकाज कूं छांडके रोमहर्ष वारो तथा रस सूं आर्द्र होवत ही इहां ही निवास करतो भयो है ।। श्री कल्याण भट्ट जी कहे है कि ऐसे या प्रकार हूं गुणीन में श्रेष्ठ वींणा बजायवे में चतुर द्वारकादास जी हूं आयके या समय में कि वैसे और समय में हूं गुण के जानवे में कि वैसे और समय में हूं गुण के जानवे वारे प्रभुन कूं वीणा, बजावत प्रसन्न करे है ।। तासूं या द्वारकादास ने बाल अवस्था में महाप्रभुन की सेवा भली-भांति सूं बहुत प्रकार सूं करी है ।। श्री महाप्रभुजी हूँ या बीणा के बजायवे में अत्यंत ही चतुर कर देते भये है ।। राग तथा वैसे मधुर, तानन में हू भली भांति शिक्षा देते भये हैं ।। पद राग तांन गांन में चतुर जो चतुर बिहारी तथा गोविंद स्वामी हतो विनके संग सूं ही याकूं श्रेष्ठ बुद्धी प्राप्त भई हती तथा दक्षिण देश के मनोहर बड़े दोय तंतुवारी सुंदर लाल चंदन के दंड सूं मनोहर एसी बीणा बनवाय के जाकूं श्री महाप्रभुजी ने ही दीनी हती ।। पृथ्वी मंडल में बीणा बजायवे में याके तुल्य और कोऊ नहीं है ।। मलेच्छ पति अकबर के समाज में के वाके पुत्र शाहजहां के समाज में तैसो बीणा बजायवे वारो कोऊ नहीं है ।। सो एसे या द्वारकादास ने प्रकाशमान किये मनोहर मधुरता

के समूह वारे बीणा नाद कूं स्थिर होयके श्री महाप्रभुजी कानरूप दोनान सूं भली-भांति ही रुचि आदर पूर्वक पान करे है ॥ सूरदास ने किये प्राणनाथ के नाना प्रकार के वा वा समय के योग्य सुंदर प्रिय पदन कूं सुंदर मनोहर स्नेह भरे कंठन सूं मनोहर गान करे है ॥ रस सागर हर्ष सूं पूर्ण श्री महाप्रभूजी आदर रुचि पूर्वक ही सुने है ॥ वाके वीणा बजायवे कूं तथा गान कूं हूं प्रशंसा करे है ॥ ऐसे गोवर्द्धन पर रहेवे वारो दामोदर नाम भक्त हूं वासूं आयके तब वीणा सूं श्री महाप्रभुजी कूं सेवन करे है ॥ याके गान कूं तथा वीणा बजायवे कूं श्रीजी सहरावे है ॥ गान के अंत में प्रसाद हू दिवावे है ॥ ऐसे और हू गुणीजन के गान वीणादि बजायवे में चतुरजन समय-समय में ही या प्रभुन की सेवा कूं करे है ॥ कितने तो महाप्रभुन सूं कृतार्थता कूं प्राप्त होयके अपने घर में जाय है ॥ वैसे और कितने तो अपने घरन सूं श्री महाप्रभुजी के श्रीमुख कमल को दर्शन करवे अर्थ के अपने सगरे गुणन कूं प्रगट करवे अर्थ इहां आवे है ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले पंचबीस स्तरंग समाप्तम् ॥२५॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २६ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २६ लिख्यते ॥

श्लोक -- **आस्मिचपिव्रत समय विखातो बृह्मचारीतियोहंत**

सुदामाख्य सोतिनि मुठानी नामाणी ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या समय में हू ब्रह्मचारी नाम सूं प्रसिद्ध जो सुदामा है सो रससागर परम चतुर वर प्राणनाथ के आगे अत्यंत गुप्तरीति सूं ही वैसे हास्य वार्ता मिलाप कूं करे है ॥ के जैसे वा भरी सभा में हू अत्यंत चतुर बुद्धिमान हू वाकूं नहीं जान सके है ॥ तामें प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी तो हंसत-हंसत श्री मुखारविंद सूं ही मिथ्या क्रोध

पूर्वक ही ''अबे मूर्ख जा जा ।। ऐसे काहे कूं बके है ।।'' या प्रकार कहे है ।। तब सो हू फेर कहे हैं कि ''हे प्रभो मोकूं ऐसे श्री आप काहे कूं कहो हो ।। जो भयो सो भयो जो आपने कियो सो कियो सो सब तो चतुर पुरुष वा समय में ही कहेते ।। अब तो मौन ही रहिये ।।'' या प्रकार सूं धूर्त कहे है ।। याके अनंतर सो ब्रह्मचारी प्राणनाथ अपने प्रिय कूं प्रसन्न करिवे लिये कछुं सांची कछु झूठि अपनो हूं छिप्यो वृत्तांत कहे है ।। तथा अचानक ही अभिप्राय सूं ही नरसीं मेहता के पदन कूं हूं गान करे हैं ।। तथा भीतरिया जो भगवानदास नाम सेवक है सो हू या समय में के वैसे और हू समय में हास्य वार्ता कूं विस्तार कर रहे है ।। तामें कोऊ बात कूं हूं वर्णन करूँ हूं ।। हे भक्ता वाकूं तुम पान करिये ।। ''महाप्रभु महाराज आज रसोई घर में साक आछो भयो है ।। बहोत ही निरदोष भयो है ।। सो शाक बहोत ही आछो भयो है ।। सो शाक बहोत ही स्वादिष्ट भयो है सो मैंने लीयो वाकी रसना में वाकी स्वादधारी चले है ।। तामे बहोत स्वाद सराटो भयो है ।। वा शाक में स्यामता हूं अत्यंत ही सुंदर प्रकाशमान हती तासूं वाने अत्यंत ही स्वाद दीयो है ।। वाके स्वाद को नहीं कह सकूं हूं ।। यदि श्री आप आरोगते तो वाके वैसे स्वाद कूं जानते ।।'' तब हंसत-हंसत मुखारबिंद वारे भगवान श्रीजी कहे है कि ''कहा वा शाक के रसना में धारा कूं जानतो हो ? तुम कूं तो केवल जल प्रधान ही होय है ।। घृत को संस्कार तो वामें रंच मात्र हू नहीं है किंतु पक रहे वा शाक कूं जो न्यारो जल होय है वाकूं यह रसधारा कहे है ।। और जो लोहे की दर्वी कड़छी सूं बारंबार विलोकन करवे सूं वाकी श्यामता होय है ।। वा निंदित शाक ताकूं रोम हर्ष पूर्वक ही यह सरावे है तथा वैसे शाक कूं खाय रहयो ये है चतुर अपने कूं कृतार्थ ही माने है ।।'' या प्रकार भगवान श्री महाप्रभुजी प्रसन्न श्री मुखारबिंद सूं विलास पूर्वक ऐसे कहे कर हंसि रहे तथा अत्यंत चतुर वे भक्त बारंबार वामें वा बात कूं पूछ-पूछके वामें अत्यंत ही हास्य कूं बढ़ावे हैं ।। कबहु ऐसे ही समय में प्राणप्रिये श्रीजी स्वयं आज्ञा करत भये हैं ।। के ''कोऊ ऐसो ही जन बैगन को शाक बनाय रहयो हतो ।। तामें लोहा की तपेली कढाई में विनकूं छोंकके दुर्बुद्धि सो वामें जल बहोत ही डार देतो भयो है ।। जब बिनमें कछु अधपके कछु पके नहीं हते तब तो तुषा सहित गेहूँ के चून कूं जल में मिलाय के वामें डार देतो भयो

है ।। तथा वामें खटाई हू बहोत डारतो भयो है ।। तब लोहा की कडछी सूं विनकूं बारंबार विलोकन करतो भयो है ।। तब तो वे सगरे अत्यंत ही स्याम होय गये है त्यांहा ये अत्यंत ही निंदित होतो भयो है ।। सहर्ष तो विनकूं देखत तथा कडछी में लेकर हर्ष भर सूं उत्साह पूर्वक ओरन कूं हूं दिखावतो भयो है तथा कहेतो हू भयो है के आज ऐ बेंगन कैसे ही आछे बने है ।।'' या प्रकार कहे कर रोम हर्ष पूर्वक ही सो प्राणनाथ जी अत्यंत ही हसते भये हैं ।। तथा रस सागर श्रीजी फेर और हू वार्ता कूं कहेते भये है ।। के कोऊ एक बनिया अत्यंत सूधो साधु भोरो हतो तथा वा देश के राजा को अत्यंत ही प्रति पात्र हतो ।। सो राजा कूं सदैव ही कहे के सेठ तुम पर हू बहोत प्रसन्न हूं धन के सहायता के कछु और हू वस्तु हम सूं क्यों नहीं मागे हैं ? मांग ।। तथा सो बनिया हू कहे, कहे मेरे ऊपर आप अत्यंत प्रसन्न हैं तो हूं तो यासूं हूं सर्व प्रकार सूं पूर्ण हूं ।। मोकू धनादि की अपेक्षा नहीं है ।। तथा फेर हू राजा ने कहयो के जब तोकूं धनादि की अपेक्षा होय तो निःसंशय होयके मांगियो ।। तिहारी वा आशा कूं हू पूरण करूँगो ।। तब वा बनिया ने कहयो के हे पृथ्वीपते आपकी आज्ञा सूं ऐसे ही करूँगो ।। तब वा बनिया कूँ प्रतिदिन जो दुष्ट स्त्री को कष्ट हतो याकूं ही राजा के प्रति सुनायवे की इच्छा करे परंतु लज्जा के मारे कहे नहीं ।। चुप ही होय जाय, ऐसे कितने ही वर्ष गुजार दिये ।। कबहु अत्यंत कोमल सो बनिया अपने घर में भोजन करवे कूं बैठो याकी दुष्ट स्त्री सो भोजन पात्र में कच्ची वड़ीन कूं परोसती भई है ।। और कछु शाक भात परोसती भई है ।। वा शाकादि कों जैसे तैसे खायके बड़ीन कूं वैसे राख के तब बनिया उठयो ।। तब सो दुष्ट स्त्री क्रूर दृष्टि सूं याकूं देखत कहती भई है के आज तुमने बड़ी क्यों नहीं खाई ।। ऐसी के ऐसी छांड दीनी है ।। तब डरपि डरपि के हृदय में राजा के बल कूं राखके **विचारेने हर वेर धीरे-धीरे ही कहयो के बड़ी कच्ची है ।। सो दुष्ट तो हाथ में स्थित वालो है कि कड़छी हू वाके माथे में बहोत बार ही ताड़ना करती भई है ।। अत्यंतो ताड़ना कियो सो विचारो तो चुप होयके वस्त्रन कूं पहेर के खिड़की के पास ठहेर के तू प्राय प्रतिदिन ही ऐसे करे है आज दिन लों तो सहयो पर अब नहीं सहूंगो ।। देख आज क्या करत हूँ ।। ऐसे कहे कर वा दुष्ट स्त्री के डर सूं दौड़ जातो भयो है ।। वैसे कहे कर दोड़**

रहे वा पति कूं देखकर क्रोधी भयो है ये राजद्वार में जायके राजा को सुनाय के अपराधिनि मोपर कहा करवावे, ता सूं याकूं वेग ही मनाई लेऊ तो आछो है यह विचार के वो स्त्री तो वेग ही पीछे दौड़ी तथा वा पति ने जान्यो मोकूं मारवे लिये दौड़ के आवे है ।। यह विचार के अत्यंत डरप के पीछे बारंबार मुरक के देखत देखत डर्यो तथा राजद्वार में घुस गयो ।। सो दुष्ट स्त्री तो डरती-डरती ही घर में आयके किवाड़ लगाय के भीतर घुस गई, बैठ गई ।। राजा को कृपापात्र सो तो राजघर में बेग ही प्रवेश करके द्वार पालन सूं हूं निवारण न कियो हूं जांहां राजा सोयो हतो वहां जायके निद्रा के वस होय रहे वा राजा कूं जोर सूं ही जगाय देतो भयो है ।। राजा हूं निद्रा कूं त्याग के वाकूं देखके अपने जगायवे के कारण कूं विचार करतो भयो है ।। के याकूं कोउ आवश्यक कार्य होयगो जासू यह बेग ही आयके मेरी निद्रा कूं नास कर देतो भयो है ।। तासूं राजा वाकूं कहेतो भयो है कि मेरी निद्रा काहे कूं दूर कराई है, तुम कूं कछु भारी आवश्यक काम आय पड्यो है का ।। तब सो बनिया हू कहेतो भयो है कि राजन आप मोकूं समय समय में सदैव ही कहते हते कि सेठ प्रसन्न भयो मोसूं धनादि कछु और हू क्यों नहीं जाचे है ।। सो राजन मोकूं आज भारी संकट आय पड्यो है तासूं तिहारी सेना है सो सगरी सैना की प्रार्थना करूं हूं तासूं वा भारी संकट कूं तो सुनाय ।। तो सूं ऐसो कोन संकट पड्यो है ।। तब बनिया ने कहयो कि अवतो हू वा संकट कूं प्रगट नहिं सुनाय सकूं हू पीछे ही जान जावोगे का ।। किन्तु भली-भाँति जानोगें ही ।। अब तो जो हूं कहू सोई तुम करो ।। तब राजा तो वाके ऐसे रूप कूं कि वैसी साहस कूं देखि के वैसे विचार तो भयो हू याकूं कोऊ सूं कोऊ भारी ही संकट आय पर्यो है नहिं तो यह बड़ो सेठ मेरे सगरी सेना कूं काहे कूं जाचतो तासूं सगरी ही सेना वेग ही याके आधीन करूँ जासू याको यह संकट वेग ही निवर्त होय जाय ऐसे विचार के सो राजा अपने सगरे कार्य के अधिकारी मंत्री कूं वेग बुलवाय के कहेतो भयो है कि वेग ही मेरी सगरी ही सेना याके आधीन कर देओ ।। यह सगरी सेना याके संग जाय जो कहे सो करे सो वेग ही पराक्रम धरे वामें कछु हू हानी नहीं होय जासूं यह बनियां मोकूं बहोत प्रिय है ।। तब वह मंत्री राजा कूं प्रणाम करिके वाकी आज्ञा कूं माथे पर राखके तैयार अस्त्र शस्त्र के सगरी सेना

कूं वेग ही तैयार करिके वा बनियाँ के संग कर देतो भयो है ।। तथा राजा की प्रीति विशेष सूं स्वयं हू वाके संग जातो भयो है ।। अत्यंत कायर कोमल बनिया के संग ही राजा के डर सूं वे सगरे करोडन घोड़ा, हाथी रथ प्यादा वेग सूं ही चले है ।। सो बनिया हूं घर के पास जायके वा सगरी सेना कूं वहां ठहराय के कहेतो भयो है कि तुम सगरे ही यहां पराक्रम में तैयार सावधान हृदय वारे होयके ठहेरो, सूरा हू जैसे कहूं वेसे ही तुम तबही करोगे वैसे विनसूं कहे कर आपु अकेलो ही डरत-डरत ही अपने घर में गयो है ।। वे सगरे योद्धा तो बांण धनुष खडग शक्ति आदि कूं लेकर सावधान होयके ठहेरे हैं ।। सेठ कब कहा कहेगो या बात के विचारत तत्पर है ।। सो सेठ तो अपने घर के दरवाजा में जाय के अपनी स्त्री कूं कहेतो भयो है ''किवाड़ उघाड़'' यह सुनिके सो दुष्ट स्त्री तो वासूं अत्यंत डरप के ही किवाड़ कूं न उघाड़े है ।। कि बिलंब सूं पीछे किवाड़ खोल्यो तब बाहिर तैयार हथियारन वारी राजा की वैसी सैना कूं देखके अत्यंत ही डरपी की मैंने सदैव ही याको अपराध कियो है तासूँ याको बड़ो क्रोध भयो है या लायी राजा की सेना कूं देखो मेरे साथ आज कहा करे एसे विचार कर रही है ।। तामें ये है सेठ तो कछुक वाके पास जायके भय विशेष सूं जिह्वा तो चले नहीं है तासूं धीरे-धीरे हू कहेतो भयो है ''कि तिहारी सगरी बड़ी काची'' एसे कहे के डर सूं सेना वारे लोकन कूं हूं ''वेग सूं दोड़ो'' एसे कहेत ही वेग ही दोडयो तब वे हू वा सेठ के भय विशेष तथा वैसे दौड्वे कूं अत्यंत त्वरा कूं देखके कि हम सबन कूं खायवे लिये याके पीछे अत्यंत महा क्रोधी कोऊ व्याघ्र आय रहयो है ।। कि कोऊ मुख कूं पसारी के राक्षस आय रहयो है यह विचारत ही वे सगरे ही अत्यंत भय समूह सूं ही दौड़ जाते भये है ।। तामें कितनेन की सिर सूं पाग गिर गई है कितने तो स्वयं हू गिर गये हैं ।। और कितनेन के धनुष खडग बांण हू गिर गये है ।। कितनेन के धनुष टूट गये हैं कितनेन को अंग टुटयो है कितनेन को माथो फूटयो है कितने घोड़ा सूं कि हाथी सूं कि रथ सूं हू गिर पड़े हैं ।। किसी के वस्त्र किसी के भूषण गिर गये हैं ।। कितने तो गिर पड़े हैं कितने तो गिर करके मर गये है ।। तब हाथी घोड़ा प्यादे विशेष वारी व्याकुल होय रही सेना कूं सो कोऊ भारी ही उपद्रव भयो है ।। राजधानी तथा राज निकट निवासी प्रधान मंत्री आदि

सहित सो राजा की सगरी सभा हू कहा होयगो एसे विचारत ही निष्कारण निरंतर भय सूं ही तब अत्यंत कांपती भई है ॥ एसे प्रफुल्लित सुंदर श्रीमुख चंद्रवारे श्री महाप्रभु जी भक्तन के नयन कमलन में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत ही ऐसे हास्यमयी वार्ता कूं कहे कर अत्यंत ही हंसते भये हैं ॥ तब भक्त हू सगरे आपस में हंसते भये हैं ॥ के हर्ष सूं आपस में गिरते हूं भये है ॥ या वृत्तांत में कितने भक्त तो फेर हूं कछुक प्रभुन कूं पूछ के तथा आपके वचनामृत को पान करके फेर ही या प्रिय के तथा अपने कूं अत्यंत ही बढ़ावे है ॥ ऐसे अनुकरण कौतुक हास्य भाव हर्ष तथा श्री मुखारबिंद की प्रसन्नता पूर्वक या प्रीतम ने वर्णन करी वार्ता को पान करके वे कमलमुखी सुंदरी जन जा निर्मल मधुर मनोहर आनंद सूं कछु सघन हास्य कूं प्राप्त भई है यामें अन्य कोऊ की ही योग्यता नहीं है ॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले एकांतविस स्तरंग समाप्तम् ॥२६॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २७ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २७ लिख्यते ॥

श्लोक -- **एवं कदाचित् प्रिय सार्वभोमस्तनीती वार्ताम पराच हार्स्य**
तामप्य होनिः पिद्रता सभक्ताः पियुस धारा मधुरा रसज्ञा ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या प्रकार बहु प्रिय चक्रवर्ती श्री महाप्रभु जी हास्य प्रसंग में और हू वार्ता कूं विस्तारित करे है ॥ हे रस के जानवे वारे भक्तजना याकी अमृत धारा सूं हूं मधुर वार्ता कूं तुम पान करिये ॥ कोऊ नागर जाति ब्राह्मण हतो ॥ वाको पुत्र अत्यंत ही सुधो भोरो हतो ॥ याको पिता पुत्र के व्याह अर्थ कोऊ अन्य ब्राह्मण के पास जायके वाकी कन्या कूं जाचतो भयो है ॥ बा ब्राह्मण ने हू कन्यादान की प्रतिज्ञा करी तब लगन के निकट आवने पर सो नागर ब्राह्मण अपने वा पुत्र को संग लेकर वा ब्राह्मण के घर में राखतो भयो है ॥ तब वा ब्राह्मण ने नागर ब्राह्मण

को बड़ो सत्कार कर्यो है ॥ पुत्र के सहित ही भोजन के अर्थ ही बुलायो वा ब्राह्मण की स्त्री ने हू प्रसन्न मन सूं बड़े आदर सूं वा दोनों के अर्थ अनेक प्रकार के शाक भक्ष्य भोजन कूं मनोहर थाल सिद्ध कियो ॥ वामें हू मुख्यता सूं तो गेहूँ के चून मिश्री घृत एलायची लौंग वरास सहित अत्यंत मधुर लापसी बनाई है ॥ तब बा ब्राह्मण ने आदर सूं बैठायो है ॥ जब चतुर वाकी बेटी वर कूं देखके माता कूं कहयो के **''मैया मेरे विवाह अर्थ तुमने ऐही मूर्ख बुद्धि अत्यंत पशु वर मंगवायो है ॥ यह तो कछु काम काज को नहीं है ॥ अज्ञानी है ॥ निरंतर अमंगल रूप है, बुरो है ॥''** तब मैया ने कहयो के छोरी यों मति कहे ॥ ऐ तिहारो वर सुनेगो ऐसे कहिकर वरज्यो तब बैठे वर के प्रति ये ब्राह्मणी आदरपूर्वक पातर में लापसी कूं परसोती भई है ॥ तब सो ब्राह्मणी की कन्या तो अंगुल के अग्र कूं संकोचकर वा अंगूरी की पीढ़ी सूं अपने वरके माथे में अच्छी रीति बारंबार ताड़ना करती भई है तथा **''यह मुख लापसी खायगो''** ऐसे बारंबार कहेती हू भई है ॥ वर बाल हतो तासूं अत्यंत ही रुदन करतो भयो है ॥ वाको पिता हू अत्यंत दुःखी ही भयो ॥ अबहु तो यह छोरी परणाई हूं नहीं है ॥ मेरे पुत्र में ऐसे करे है ॥ जब बड़ी चतुर होयगी तो कहा जाने कहा करेगी इत्यादि प्रकार सूं बहोत विचार करत श्रेष्ठ बुद्धिमान सो नागर ब्राह्मण वा छोरी के संग पुत्र को व्याह न करावतो भयो है ॥ ऐसे इतनो कहे कर श्री महाप्रभुजी हास्य कूं प्रगट करते भये हैं ॥ वा हास्य पर को बुद्धिमान अत्यंत तुच्छ अमृत के समुद्रन कूं चिन्तामणिन कूं हू न्योछावर करे अपितु अत्यंत तुच्छ जान के कोऊ हू नहीं करे है ॥ तब श्री महाप्रभुजी मंद हास्य कर सुन्दर श्री मुख सूं ही दोय तीन बार प्रगट करते भये है ॥ जो भक्तन ने श्रवणरूप अंजुलीन सूं यह मधुर हास्यामृत रस पान कियो है ॥ विनके भाग्य समूहन की स्थिति करवे में को समर्थ होय सके ॥ अपितु कोई नहीं होय है ॥ या सुंदर वचन सूं उछल्लित जे मधुरता की अर्बन धारा है सो वे भक्तन के कान तथा देह के मन में हू अनेक प्रकार के विलासन सूं अपार मधुर रस समुद्रन कूं वर्षा करके श्री महाप्रभुजी निद्रा के आदर की इच्छावारे होयके इहां सेवा परायण श्रेष्ठ मदन कूं आज्ञा करे है कि अब तुम अपने अपने घर कूं जाओ विश्राम हूं करो तब वे सगरे ही महाप्रभुन कूं प्रणाम करिके वेग ही जाय है ॥ याके अनंतर प्रिय के निद्रा

के अवसर कूं जानिके सगरी मृगनयनी तथा सगरे भक्त हू सुंदर दरसन की इच्छा सूं प्रेरणा किये है ॥ अपने-अपने स्थल कूं वेगही त्याग के क्षण सूं ही अहं पूर्वका सूं ही बढ़ि रहयो है उत्साह समूह जिनमें ऐसे वेग ही वा प्राणनाथ के समीप आयके वा प्रिय कूं चारों ओर ही. वेष्टन करिके वा प्रिय के अर्बन पूर्ण चंद्रमान कूं विजय करवे वारे श्रीमुख कमल के रस कूं पान करत ही ठहरते भये है ॥ जिनमें कितनेक भक्त तो प्रिय के श्री मुखारविंद संबंधी रस को पान करिके अब यहां ठहरनो हमकूँ उचित नहीं है तासूं चलो वेग चलें एसे हृदय में विचार करत ही वा प्रिय के सुख अर्थ वेग ही जाये हैं ॥ तथा वेग सूं उठे विन भक्तन के वा वा वचन भूषण समूह कूं कि शब्द कूं कि चरण कमल के धारण के शब्द सूं पुष्ट भयो कोलाहल हूं बहोत ही बढ़ि जाय है ॥ और प्रथम तो या क्षण में श्री महाप्रभुजी शय्या पर विराजमान होयके ही मधुर अभ्यंग लीला कूं ही विस्तारित करत हते तासूं इहां ही पाग बांधि के याके ऊपर बांधिवे कूं श्री हस्त कमल में पीरो वस्त्र हू लेते तब ही सगरे भक्त तथा भक्त सुंदरी हूं वा प्रभु के आगे दंडवत प्रणाम करिके वेग ही अपने-अपने घर कूं जाते, अबतो सों श्री महाप्रभुजी अभ्यंग लीला कूं करिके तबही या पाग बांधिवे की लीला कूं हू करे है ॥ तथा सगरे लोकन में सदैव ही वा श्रीजी के वा पुरुषोत्तमता समूह के वैसे स्वरूप वचन विलास कटाक्ष लीला मंद हास्य संबंधी माधुरीन के अत्यंत ही विशेष ही वैसे निरंतर प्रकाश सूं वामें लोभी जे वे भक्तजन हैं जे चरणन के निकट आयके सदा निवास करे है विनकूं वैसो बहुत समृद्ध ही उदय होय है ॥ यासूं श्री अंग सेवक खवास जी अभिप्राय पूर्वक बारंबार कहे है कि हे भैया वेग काहे कूं नहीं चलो हो ॥ यह सुनिके प्रभुन में बांधे है नेत्र हृदय प्राण सगरे जिनने ऐसे वेहू बड़े यत्न सूं धीरे-धीरे चलिवे कूं प्रारंभ करे है ॥ तामें बारंबार ही पद पद में ही ठहरे है तथा तृप्त नहीं भये हैं नेत्र श्रवण अंग तथा नाशा मन प्राण कि देह जिनकी ऐसी हिरण नयनी सुंदरी तो चंचल होय रहे है नयन कमल जिनके कि उदर में होय रहयो है उत्साह समूह जिनमें ऐसी होयके बड़े यत्न सूं ही जाय है ॥ तथा वा श्रीजी के श्री अंग संबंधी शोभा के पान में लुब्ध होय रहे हैं ॥ नेत्ररूप मछली जिनकी ऐसी जे चंद्रमुखी वहां सूं नहीं निकरे है ॥ तब कितनेक भक्त जन प्रिय की निद्रा के विलंब कूं हृदय में

विचारत ही विनकूं जोर सूं ही निकारे हैं ।। तथा अपनी दीनता हूं दिखावे है ।। तब शय्या पर श्री महाप्रभुजी सुख सिराहाने पर मस्तक कूं धारण करिके चरण कमल कूं हूं पसार के प्राणनाथ जी पाय तकियान पर धारण हूं उत्तानता सूं शोभायमान होय है ।। ऐसे विराजमान श्री महाप्रभुजी के चरण कमलन कूं हाथ सूं स्पर्श करिके प्रणाम करिके यह अमुको जाय है ।। यह सुनिके हमारे प्रिय प्रभु कबहू तो आज्ञा करे है कि अवश्य ही कबहु तो मोन रहे है ।। तथा काहू समय में तो हंसत वदनारबिंद श्री महाप्रभु जी आज्ञा करे हैं हां सगरे ही चरणार बिंद को स्पर्श करे जो जब याकूं स्पर्श करेगो तब ही सगरो फल होयगो ही ।। **और जिन भक्तन कूं तो या चरण कमल के स्पर्श में व्यसन है वे सुंदर भाग्यवारे तो विनकूं स्पर्श करे ही करे हैं वाकूं परम प्यारो श्रीजी हूं अनुमोदन करे है ।। तथा कोऊ कूं तो उपर सूं हू चरण को स्पर्श करनो तो अत्यंत ही रूचे है ।। या प्रकार कूं जानके कितनेक भक्त तो भक्त द्वारा कि अधिकारी द्वारा प्रभु कूं विज्ञापना करिके वा प्रिय की आज्ञा सूं वा चरणन कू स्पर्श करे है ।। या प्रकार सगरे भक्तन के जायवे पर इहां भाग्यवारे कितने पांच कि छैः भक्त रहे है ।। प्रिय की सैय्या के निकट सो अधिकारी हूं रहे है ।। तथा गुणीन में श्रेष्ठ सो ध्यानदास रहे है ।। हाथ में शोभायामान सारंगी के बजायवे में वा ध्यानदास को मैया गुणी प्रसिद्ध चतुरदास रहे है ।। तब रस सागर यह प्राणनाथजी जा रागन कूं अंगीकार करे है अमृत समुद्र को हू जिनने विजय कियो है ऐसे अगाध्य वा सारंगी सूं प्रगट भये रागन सूं प्राणनाथ कूं सो सगरो मंदिर हू भर जाय है ।।४२।।**

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले एकांतविस स्तरंग समाप्तम् ।।२७।।

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २८ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २८ लिख्यते ॥

श्लोक -- **भक्तैः कदाचिदित नोति वार्ता कदाचने शास्त्र धिकारीणा वा अंगानु सेवी समय भगवत्वा सोहालिका या उपरोश्वरस्य ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं कि या समय में श्री महाप्रभु जी कबहु तो भक्तन के संग वार्ता करे है ॥ कबहू तो अधिकारी के संग वार्ता करे है तथा श्री अंग सेवक तो अटारी पर जायके वहां बैठकें बिराजमान श्री महाप्रभुजी के दोनों पुत्रन कूं प्रिय श्री महाप्रभुजी के निद्रा के अवसर कूं जानके तब ही उठके अटारी सूं उतरके श्री महाप्रभुजी के श्री मुखारविन्द कूं निरख के श्री मातृचरण कूं वेग ही जाय है ॥ कबहू जाय रहे बड़े पुत्र कूं श्री प्राणनाथजी बुलावते भये हैं के **''हे पुत्र यहां आवो'' ऐसे कहेके स्वयं बुलावते भये हैं ॥ सो पुत्रवर श्री गोपालजी हू या वचनामृत को पान करके ही वेग ही आय जातो भये है ॥ तब सेज्या पर पोढ़े हू हमारे प्यारे श्री महाप्रभुजी उठ बैठे हैं तथा वा पुत्रवर कूं अपने पास बैठाय कर पूछते भये हैं कि हे ''पुत्र तुम कछु कोश को वृत जानो हो ? के धन वस्त्रादि वे वे पदारथ वामें हैं कि नहीं हैं ॥ तथा और हू कछु जानो तो मोकूं सुनावो ॥ तब वो सुन्दर बुद्धि वारो यह श्री गोपालजी तो यह सुनिके अपने चित्त में विचार करतो भयो है के यह श्री महाप्रभुजी आज दिन लों तो या प्रकार सों कि अन्य सूं पूछ्यो नहीं है ॥ यामें कछु बड़ो ही कारण होयगो ॥ येह विचार करते भये हैं के ''प्रभो बिना प्रसंग ही या प्रकार सूं कोश को वृत्तांत श्री आप कहा कारण सूं पूछे हैं, वामें कारण कहा है ॥'' तब श्री मुखारविन्द सों वा पुत्र प्रवर के दोनों कानों में हर्ष के अपार समुद्रन कूं वर्षा करत वाके प्रति कहेते भये हैं के ''अधिकारी ने आयके मोकूं एकांत में ऐसे कह्यो है के आपके भैया घनस्यामजी जब सूं न्यारो भयो है सब वस्त्रन को विभाग भयो है ॥ तासूं कोश धर में विशेष वस्तु नहीं है ॥ तासूं खरच के दान आप विचारके ही करेंगे ॥ या हेतु सों पुत्र तोसूं पूछूं हूं ॥ तू कछु वा कोशघर को वृत्तांत**

जाने है ।। तब तो पुत्रवर श्री गोपालजी पिता पुरुषोत्तम श्री महाप्रभुजी के प्रति कहेतो भयो है के ।। ''अधिकारी कहा जाने कोशघर को जैसो वृत्तांत हू जानूं हूं ।। श्री महाप्रभो जैसे आप सदा सों दान करत आये हो अब हू वैसे ही दान करें ।। अपनी इच्छानुसार ही बिना संकोच के ही श्री आप वैसे ही खर्च करें ।। सो अधिकारी कहां जाने ।। लौकिक रीति कूं ही जाने ।। वा थोरी बुद्धि वारे कों या अलौकिक में प्रवेश हू नहीं है ।।'' तब प्रियवर श्री महाप्रभुजी प्रसन्न श्री मुखारबिन्द सूं वा बड़े पुत्र कूं आज्ञा करते भये हैं के ''हां अवश्य ही'' ऐसे आज्ञा करिके अपने चित्त में अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ।। तब वाकूं जायवे की आज्ञा हू करते भये हैं के स्वयं हू सेज्या पर पोढ़ते भये हैं ।। तब अत्यन्त बुद्धिमान श्री गोपालजी आपके आगे दंडवत प्रणाम करके हृदय में नहीं समाय रह्यो है ।। प्रभु सम्बन्धी वैसे हर्ष समूह जामें ऐसे होयके हंसत हंसत ही श्री महाप्रभुजी की बैठकजी सूं बहार निकसतो भयो है ।। तब वैसे हंसत हंसत आय रहे अत्यन्त प्रसन्न श्री गोपालजी कूं अपनी ज्ञात वारे दोय तीन भट्ट देखते भये हैं ।। विनमें गोपीकांत को पुत्र भट्ट दामोदर है सो पूछतो भयो है के आज या प्रकार सूं अत्यन्त प्रसन्न काहे को आय रहे हो ? हमकूं यह वृत्तांत सुनावो ।। तब श्री गोपाल हू वाकूं सगरो वृत्तांत कह्यो के श्री आपने आज दिन लों मोसों ऐसे कबहू नहीं पूछ्यो हतो केवल आज ही पूछ्यो है ।। तासूं मैंने या भांति सों कह्यो है ।। यह सुनिके दामोदर भट्ट ने कह्यो के तुम कोशघर को सगरो वृत्तांत जानो हो कहा ? ।। तब श्री गोपाल ने कही के वामें कछु है के नहीं सो मैं सगरो वृत्तांत तो नहीं जानूं हूं ।। तब दामोदर भट्ट ने कह्यो ''यदि तुम जानो नहीं हो तो श्री आपके आगे वैसे काहे कूं कह्यो ।।'' **तब श्री गोपालजी ने कही ''हे मित्र तुमहू मोकूं सब भांति सूं भ्रांत ही प्रतीत होओ हो ।। जासूं कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम् समर्थ पुरुषोत्तम मुकुटमणि यह श्री गोकुलपति प्रभु स्वयं साक्षात जहां बिराजे हैं वहां कहा अर्थ की कमी है ।। वहां तो सगरे पदार्थन की ही सर्व भांति सूं ही पूर्णता ही है ।। जाकी दृष्टि लौकिक है वा लौकिक दृष्टि सूं ही इहां वाको सगरो ही लौकिक प्रतीत होय है ।। जाके तो अलौकिक दृष्टि है वाकूं तो प्रभु अलौकिक ही प्रतीत होय हैं ।। मित्र, तासूं यहां तो रंचमात्र हू लौकिक नहीं है ।। तासूं हूं कैसे श्री आपु कूं और कछु कहूं तासूं**

ही मैंने कह्यो है कि सब जानूं हूं ॥ अधिकारी कहा जाने ॥ मेरो इत्यादि वचन सुनिके अत्यन्त प्रसन्न होयके वे श्री महाप्रभुजी पोढ़े हैं ॥'' ऐसे सुन्दर बुद्धि वारे उत्साह समूह सूं प्रकाशमान श्री महाप्रभुजी को जेष्ट पुत्र श्री गोपालजी हंसि हंसि के सबके आगे अपने प्रिय पिता के वृत्तांत कूं बारंबार सुनावतो भयो है ॥ कि ऐसे श्री आपने पूछ्यो है ऐसे मैंने उत्तर दियो है ॥ ऐसे श्री आप अत्यन्त प्रसन्न भये हैं ॥ सो ऐसे सगरे वृत्तांत कूं कहि रहे सुन्दर बुद्धि वारे प्राणनाथ के पुत्र रत्न श्री गोपालजी के मुखचंद्र में जो प्रसन्नता है कि उत्साह समुद्र हैं के जो कोऊ सघन हर्ष के जो मनोहर रोम हर्ष हैं के वा वा पदार्थन को जो प्रगट करनो है सो जा कृपापात्र जनन ने हृदय कूं पान कियो है विनके चरणन की रज कों हू मन शरीर तथा वाणी सों प्रणाम करूं हूं ॥ अब यह प्रसंग रहे अब प्रथम प्रसंग संबंधी वृत्तांत को पान करिये ॥ सो मनोहर रस सूं शोभायमान मंगलमय शय्या पर श्री महाप्रभुजी शयन कर रहे हैं ॥ तब अधिकारीजी विनय सहित ही प्रिय श्री महाप्रभुजी के आगे वा वा वृत्तांत कूं सुनावें हैं ॥ तथा वैसे परदेश स्थित भक्तन के, के विनकी भेटान के, विज्ञापना के अर्थ यहां आयवे वारे भक्तन के हू वृत्तांत कूं सुनावे है तथा बहू बेटी बालकन के, के वैसे और भैया बहेन के विनके संतति गणन के हू वृत्तांत कूं कार्यन कूं हू सुनावे है ॥ सो प्राणप्रिय श्री महाप्रभुजी हू सगरे वृत्तांत को सुनें हैं ॥ वामें मधुर मधुर उत्तर हू देवें हैं ॥ तथा कोऊ वैष्णव कि कोउ भक्त की कछु विज्ञापना होय तो श्री महाप्रभुजी एकांत में वाकूं हू आदर पूर्वक सुनें हैं तथा कितनेक भक्त तो अपने अनेक प्रकार के मनोरथन कूं पूरण हू करें हैं ॥ तथा कितनेक भक्त तो उच्छलित भाव वारी अनेक गुणन सूं शोभायमान उच्छलित रस समूह वारी प्राणनाथ की कि चित्त की वृत्ति के प्रसन्न करवे में चतुर भाग्य वारी कोऊ पूर्ण चन्द्रमुखी मृगनयनी सुन्दरी कूं लायके प्राणनाथ के चरणकमलन में अर्पण करवे के उत्साह वारे होयके दीनता पूर्वक प्रणाम करत ही एकांत में वा वा विज्ञापना कूं करें हैं ॥ वैसे विनके प्रेम के वश प्रसन्न श्रीमुख कमल वारे श्री महाप्रभुजी हूं हंसत ही वा वा विज्ञापना कूं मानें हैं विनमें कितने भक्त तो अपने अर्थ और कितने तो परार्थ ही के कितने तो प्रिय के सुख अर्थ ही स्नेह सूं के रस सूं के और कितने तो लोभ सूं के वा रसालय समूह सूं हू वा प्रिय के आगे विज्ञापना करें हैं ॥ यह कृपा

सागर श्री महाप्रभुजी सबन की विज्ञापना कूं सुनें हैं, मानें हैं के पूरण करके तथा सबन कूं समाधान हू करके सुन्दरवर श्री महाप्रभुजी अपने अपने घर में जायवे कूं सबन कूं आज्ञा हू देवें हैं वे हू भली भक्ति सूं दंडवत प्रणाम कर करके वेग ही जाय हैं ॥५३॥

इति श्रीमद गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रिमंगल वृत्तमये द्वादश कल्लोले अट्ठाविस स्तरंग समाप्तम् ॥२८॥

॥ श्री श्री गोकुलेशो जयति ॥ श्री रमणेशो जयति ॥

तरंग -- २९ ॥

अथ कल्लोल द्वादसमो तरंग -- २९ लिख्यते ॥

श्लोक -- **रात्री मंगल वृत्तांत भयेऽस्मिन् द्वादसे खलुं**
कल्लोले प्रथमे हंसत रंगे विन्य रुपये ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें कि रात्रि संबंधी मंगल चरित्र के वृत्तांत रुपया द्वादस १२वें कल्लोल में प्रथम तरंग में श्री गोवर्द्धनधारीजी के आगे शयन भोग कूं अर्पण करतो कि बीड़ी आदि हू अर्पण करनो कि भक्तन की स्थिति तथा विनके भाव की माधुरी के किंवाड़ कूं खोलनो कि विन भक्तन कूं श्रीनाथजी के मंदिर में प्रवेश करनो कि शयन आरती को प्रकार कि प्राणनाथ को दर्शन कि स्वभाविक स्वरूप की माधुरी तथा वा भक्तन सूं बढ़ि रही स्वरूप की माधुरी कूं मैंने वर्णन कियो है ॥ कि दूसरे तरंग में वा भक्तन कूं वहां सूं विदा करनो कि श्री महाप्रभुन को श्रीनाथजी कूं शयन घर में पधरावनो कि वहां पर्यंक की शोभा तथा तूल आदि कूं अर्पण करनो कि वहां श्री महाप्रभुजी की वा वा कृति कि वा श्रीजी के पर्यंक कूं ज्येष्ठ असाढ़ में गरमी की विशेषता में हर्ष सूं आंगण में पधरावनो वहां ॥६॥ प्रेम सूं पंखा करनो कि आंगण सूं के प्रेम सूं मार्जन करनो कि वैसे शीतल जल कूं वहां राखनो कि आपकी बैठक की कि आसन की माधुरी कूं मैंने वर्णन कियो है ॥७॥ तीसरे तरंग में तो सुवर्णादि के धारणादि तथा भूषणादि के सजावन कूं कि तथा सेवकन के वे वे कार्य तथा श्रीनाथजी के मंदिर सूं

प्रिय कूं बाहिर पधारनो कि भक्तन की वह लालसा तथा या प्रिय की माधुरी कि या प्रिय ने जो सुन्दर भ्रू वारी सुन्दरीन कूं रस समुद्रन सूं न्हवायो है सो मैंने वर्णन कियो है ।। चौथे तरंग में तो वा होम लीला कूं कि दूसरी बेर के भोजन की माधुरी तथा श्री हस्तादि को पखारनो कि भक्तन की सावधानता तथा प्रिय कूं होमघर सूं बाहिर पधारनो वैसो विलास कि अपनी बैठक में विलास पूर्वक पधारनो मैंने वर्णन कियो है ।। पांचमे तरंग में भक्तन की बैठवे की रीति कि प्रिय की जल आरोगवे की तथा बीड़ी बरास आरोगवे की माधुरी कि भक्तन कूं प्रिय के निकट आंगन में हर्ष पूर्वक बैठनो कि ज्येष्ठ असाढ़ में या प्रिय कूं आंगन में अपने आसन पर विराजनो कि तथा भाणेज आदिकन को सनमान कि बालकन की पढ़ायवे की लीला तथा कथा कहिवे की माधुरी वामें मनोहर प्रथम प्रस्ताव तथा कथा के अर्थ दोनों पुत्रन की प्रतीक्षा कि फेर बीड़ी जल आदि के लेवे की माधुरी कि भक्तन के संग भक्तन को संवाद वासूं हर्ष हू मैंने वरणन कियो है ।।१६।। छेठ तरंग में तो विविधि प्रकार की वार्ता प्रसंग तथा बालकन को आवनो कि विनके संग मनोहर वार्ता तथा प्रिय के दोनों पुत्रन कूं वहां आवनो प्रिय के समीप बिनकूं बैठनो कि चर्बित तांबूल उगार कूं डारनो तथा भक्तन को वाकूं लेनो ।।१८।। कि कथा के अर्थ संभ्रम तथा सावधानता की ।।२०।। दान भाव तथा अनेक प्रकार को मनोहर लाभ हू मैंने वर्णन कियो है ।। सातमे तरंग में कितनीक कमलनयनी सुन्दरीन के भाव तथा सखी को वाक्य वा सखी को चरित्र प्रभुन को चरित्र कि सखी ने अपनी स्वामिनी कूं वक्षमांण देनो तथा उत्कंठा वैसो हर्ष तथा वा कथा में कितने भक्तन कूं मनोहर भाव कि वैसे औरन कूं और और भाव वैसे और हू सुन्दर भाव कि तथा प्रिय श्रीजी में विनके भाव कूं जानके सुन्दर मनोहर फल कूं अर्पण करनो कि कथा की समाप्ति को प्रकार हू कह्यो है ।। तथा आठमे तरंग में भक्तन ने किये जयनाद कूं तथा पद गान कि ब्रह्मचारी के संग रसमय हास्य सूं मनोहर प्रिय कूं संवाद कि प्रिय के श्रीमुख सूं प्रकट भयो वैसो पश्चिम देशवासी शिष्य गुरु को हास्य आनंद रस कूं विशेष प्रसंग हू मैंने कह्यो है ।।२६।। और नवमे तरंग में तो प्रभुन की टीका रचवे की मधुरता कही है ।। और दसमे तरंग में तो प्रभुन ने रचना किये विज्ञापना के मनोहर ३७ सेंतीस श्लोक कहे हैं ।। और अग्यारमे तरंग में तो टीकान

कूं भक्ति वारेन के आगे व्याख्यान करनो कि वा समय में प्रभुन के स्वरूप की वा शोभा कूं वैसो स्वरूप कि टीकान के व्याख्यान कूं करि रहे महाप्रभुन के श्रीमुख की शोभा आदि तथा भक्तन की उत्कंठा आदि कि वहां वहां स्थिति कि प्रिय के दरशन व्यसन वारे वा भक्त के अपने दरशन में विघ्न कूं निवारण करनो कि अपने दरशन कूं सिद्ध करनो तथा वा भक्तन में वैसो कृपा समूह कि ग्रीष्म रितु जेष्ठ असाढ में प्रभुन कूं आंगन में ही विराजनो वामें जाके भक्त जनन ने जो मनोहर लोक भाषादि रूप वैसे पदन कूं पाठ कियो है सो कि ब्रह्मचारी के संग जो महाप्रभुन के नर्म सूं प्रकाशमान हास्य संवाद है कि तब भक्तन कूं कि सुन्दर दृष्टि वारी सुन्दरीन कूं जो हर्ष उदय भयो है सो मैंने वर्णन कियो है ॥३२॥ तथा वारहमे तरंग में तो प्रिय श्री महाप्रभुजी ने जो श्रीमाली जात वारे रामदास ब्राह्मण कूं चरित्र कह्यो है सो तथा मथुरिया नाम तंबोली को वैसो चरित्र कि पंड्या को चरित्र कि बलयी मिश्र को चरित्र कि तंतुवाद्य विशेष कि हास्य बढ़ायवे वारी वार्ता मैंने वर्णन करी है ॥ कि तेरहमे तरंग में तो महादेव की भक्त विधवा को चरित्र जामें शिव भक्त शिव शिव कहे रहे सन्यासी कूं लिंग सूं महा संकट भयो है कि नारायण नाम कहवे सूं संकट की निवर्ती भयी है सो अद्‌भुत चरित्र मैंने कह्यो है ॥ तथा चौदहवें तरंग में जामें प्रियाजी के संग प्रियवर रमण करें हैं ऐसे रस सागर पर्यंक को भली प्रकार बिछावनो विछायत करनी मैंने कही है ॥ कि पंचदसमे तरंग में तैल शय्या की मनोहर बिछायत कि कुंमारी नाम नंदी की मनोहर हास्य विस्तार वारी कथा कि षोड़शमे तरंग में तो वा तैलाभ्यंग कूं शेष प्रसंग हास्य प्रसंग के सहित तथा श्री अंग सेवक को कार्य कि भक्तन को अत्यन्त लालसा कि महाप्रभुन के श्री मस्तक में विराजमान उपरना कूं प्रभुन ने उतारनो शय्या पर राखनो बीरी उगार कूं कोऊ भक्त के हस्त कमल में डारनो कि ॥४२॥ पाग कूं बांधनो मुरली वलीराम कों गान यह वरणन कियो है ॥ कि अठारमे तरंग में तो वा पाग के ऊपर उपरेना बांधनो भक्तन ने दीपक कूं सजावनो प्रिय के श्रीमुखादि अंगन सूं प्रकाश चमत्कार कूं प्रगट होवनो तब छोटे रुईदार नीमा कूं पहेरनो कि चरणन में पनही कूं पहेरनो तब प्रभुन कूं उठनो कि पधारवे कूं प्रारंभ ॥४५॥ एकांत में चरणकमल के स्पर्श की इच्छा वारी सुन्दरी कूं वैसो भाव कि प्रिय के दरशन की लालसा सूं भक्तन की

वहां स्थिति तथा कितनेक भक्तन कूं अपने घर सूं आवनो मैंने कह्यो है ॥ तथा उगणीसमे तरंग में तो प्रभुन कूं बाहिर पधारनो कि भक्तन कूं प्रिय में प्रिय को हू विनमें भाव तथा प्रभुन कूं शौच घर में पधारनो कि भक्तन के कार्य कि ॥४८॥ ग्रीष्म ऋति में तैलाभ्यंग की शय्या को बिछायत मैंने वर्णन कियो है ॥ इकबीसमे तरंग में तो वर्षा ऋतु में अभ्यंग लीला वा समय की माधुरी के समुद्र में निमग्न होयवे वारे श्रीअंग सेवक की मनोहर कृति कि महाप्रभुन कूं शौचघर सूं बाहिर पधारनो तब भक्तन के वे वे कार्य कि प्रिय के कार्य रूपे के पात्र में जल गरम रहे है ॥ पात्र हू गरम होय है तासूं सोना को पात्र होय या प्रकार की भक्तन की इच्छा को वृत्तांत कि श्रीअंग सेवक के आगे श्री मोहन भाईजी की विज्ञापना श्रीअंग सेवक कूं सो माननो तथा श्री प्राणनाथ ने शयन भोग में तबकड़ी कूं कृपा सूं अंगीकार करनो ॥ पलास पत्र की लीला वामें प्राणनाथ के चित्त कूं हरवे वारो रत्न बाई कूं मधुर वैसो भाव कि वर्णन कियो है ॥५४॥ कि तेवीसमे तरंग में प्रिय के हस्त पखारवे की सेवा जो प्रथम सूरत वासी जनार्दनदास ने करी है वाको अब श्यामदास नौकर है की रागन सूं प्रिय सूं प्रिय कूं अत्यन्त प्रसन्न कर रहे ध्यानदास कूं सौभाग्य ॥५६॥ वैसे भक्त प्रवर वृन्दावनदास कूं सौभाग्य हू मैंने कह्यो है ॥ चौबीसमे तरंग में तो करहरी निवासी जो दीनता को समूह भगवानदास भक्त है वाको सौभाग्य तथा वाकी भार्या मनीया तथा बेटी सीता प्रिय कूं प्रसन्न करवे वारी गान में चतुरता कि अमृत कुंडली बजायवे वारे मथुरां सूं आये मनोहर भाव वारे लाला भक्त कूं सौभाग्य हू वर्णन कियो है ॥ तथा पच्चीसवें तरंग में अमृत कुंडली कूं श्रवण अर्थ पुत्र पौत्रन कूं कृपा सूं बुलावनो कि वा लाला भक्त पर प्रभुन की अधिक कृपा कि भक्तन ने वाकूं घर में ले जानो सर्व प्रकार सूं सत्कार करनो कि वीणा बजायवे वारे द्वारकादास को वैसो सौभाग्य तथा वीणा बजायवे वारे दामोदरदास की सराहना मैंने कही है ॥६२॥ तथा छब्बीसमे तरंग में प्रिय श्रीजी कूं सुदामा ब्रह्मचारी के संग हास्य प्रसंग सूं मनोहर संवाद तथा भीतरिया जो भगवानदास है वाके संग जो बैंगन संबंधी मधुर वृत्तांत है कि प्रभुन ने श्रीमुख सूं प्रगट भयो जो स्त्री सूं डरवे वारे सेठ कूं चरित्र वरणन कियो है कि ॥ सत्तावीसमे तरंग में नागर जाति वारे ब्राह्मण को चरित्र मैंने कह्यो है ॥६५॥ तब प्रिय के मंदिर सूं

भट्टन कूं कि भक्तन कूं कि वैसी सुन्दरीन कूं थोरो थोरो विलम्ब करिके ही जानो ।।६६।। तथा श्री महाप्रभुजी के श्री मुखारविन्द सूं प्रगट भये चरण स्पर्श कूं वैसो वृत्तांत मैंने कह्यो है ।। तथा अट्ठावीसमे तरंग में तो प्रभुन को ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपालजी के मनोहर कोश वृत्तांत वारो संवाद तथा अधिकारी की विज्ञापना कि भक्तन की तथा प्राणनाथ को वाकूं अनुमोदन करनो ।।६८।। तथा उनणत्रीसमे तरंग में सगरे कल्लोल कूं साधारण करत है ।। रसिक भक्त श्री गोकुलेश प्रभुन की प्राप्ति कूं सिद्ध करवे वारे मनोहर फल रूप कि सर्वन कूं सर्व इष्ट दायक कि सबन के सगरे अनिष्टन कूं निवारण करिवे वारे वक्षमांण कि आगे जाकूं कहें हैं ऐसो त्रयोदमे कल्लोल कूं कान रूप अंजुली सूं पान करिये ।।७०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रि मंगलवृतमये द्वादस कल्लोले एकोनत्रीस स्तरंगः समाप्तम् ।।२९।।

।। शुभम् इति ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो रात्रि मंगलवृतमये द्वादस कल्लोल श्री गोकुलपति चरणकमलैकतान श्री रमणलालजी महाराजानां श्रीमच्चरण कमलैक निष्टेन लोकनाथेन व्रजभाषायां प्रदर्शित समाप्तम् ।।

संवत् १९७९ माघ कृष्मा पंचमी ।।५।। रविवार ।।

समाप्तम् ।।

देशाई हिम्मतलाल ओवरसियर ना

सविनय जय जय श्री गोकुलेश ।।